RNI No.: MPHIN/2018/77137

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी का प्रकाशन

पाठशाला
भीतर और बाहर

Azim Premji University

ISSN 2582-483X

अंक 29 | सितम्बर 2026 | तिमाही

पाठशाला
भीतर और बाहर
सितम्बर 2026 | अंक 29

सम्पादकीय टीम

प्रतिभा कटियार (मुख्य सम्पादक)
pratibha.katiyar@azimpremjifoundation.org

शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता (सह सम्पादक)
shefali.mehta@azimpremjifoundation.org

गौतम पाण्डेय
gautam@azimpremjifoundation.org

राघवेंद्र हेर्ले
Raghavendra.herle@azimpremjifoundation.org

सुनील कुमार साह
sunil@azimpremjifoundation.org

गुरबचन सिंह
gurbachan.singh@azimpremjifoundation.org

जगमोहन सिंह कठैत
jagmohan@azimpremjifoundation.org

भास्कर उप्रेती
bhaskar.upreti@azimpremjifoundation.org

सिद्धार्थ कुमार जैन
siddharth.jain@azimpremjifoundation.org

शोभा लोकनाथन कावूरी
shobha.kavoori@azimpremjifoundation.org

दशरथ कुमार पारीक
dashrath.pareek@azimpremjifoundation.org

प्रबन्ध सम्पादक
सुधीश वेंकटेश

प्रकाशन टीम
मीरा प्रभु
शाहनाज़ बेगम
लोकराम वी जी
संबित महापात्र
publications@apu.edu.in

प्रकाशन कार्यालय
अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज
बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा
बेंगलूरु - 562125, कर्नाटक

अनुवाद सम्पादक
मधुकर एस पुट्टी (कन्नड़)
राजेश उत्साही (हिन्दी)
शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता (अँग्रेज़ी)

प्रूफ़रीडिंग
अतुल अग्रवाल
भोपाल, मध्य प्रदेश

लेआउट
लेआउट (हिन्दी) - गणेश ग्राफ़िक्स
भोपाल, मध्य प्रदेश

डिज़ाइन
डिज़ाइन टीम, अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी
फ़ोटो : अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन आर्काइव्ज़, लेखक
आवरण चित्र : पुरुषोत्तम सिंह ठाकुर

प्रिंटिंग
लक्ष्मी मुद्रणालय
बेंगलूरु, कर्नाटक

सम्पर्क के लिए लिखें : pathshala@apu.edu.in

पाठशाला भीतर और बाहर अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी द्वारा स्कूली शिक्षा को केन्द्र में रखकर प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक पत्रिका है। पत्रिका का उद्देश्य देश भर के पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों तक अभ्यास-आधारित सामग्री पहुँचाकर उनका सहयोग करना है। यह एक मंच है *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, एनसीएफ़-एसई* और *एनसीएफ़-एफ़एस* के आलोक में शिक्षकों के अनुभवों, प्रभावी शिक्षण प्रक्रियाओं की साझेदारी का। *पाठशाला* मूलतः हिन्दी में, फिर अँग्रेज़ी और कन्नड़ में अनुवादित होकर प्रकाशित होती है।

- बच्चों की पहचान सुरक्षित रखने के लिए पत्रिका में उनके नाम बदल दिए गए हैं।
- लेखों में व्यक्त विचार और दृष्टिकोण लेखकों के अपने हैं, उनसे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- इस पत्रिका के सभी लेख क्रिएटिव कॉमन्स-एट्रिब्यूशन-नॉन-कमर्शियल 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस के तहत लाइसेंस प्राप्त हैं। हमारे लेखों को फिर से प्रकाशित करने के लिए, कृपया हमें लिखें।

सम्पादकीय

सीखना और सिखाना, दोनों सतत व साथ-साथ चलने वाली प्रक्रियाएँ हैं। विद्यालयी जीवन में ये दोनों प्रक्रियाएँ समानान्तर चलती हैं। इनका एक सिरा पीयर लर्निंग यानी विद्यार्थियों द्वारा आपस में सीखने से जुड़ता है, और दूसरा सिरा शिक्षकों का विद्यार्थियों से, अपने साथी शिक्षकों के साथ सीखने से। चिन्तनशील शिक्षक हर दिन अपने विद्यार्थियों से कुछ-न-कुछ सीखते हैं। यहीं से उन्हें बेहतर शिक्षण योजना बनाने के नए-नए विचार मिलते हैं, और उनकी शिक्षण प्रक्रियाएँ बेहतर होती हैं। इसी सन्दर्भ में, अगर हम *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* को देखें तो कक्षा में प्रभावी शिक्षणशास्त्र (3.3.3 पृ. 104) के बारे में यह कहती है कि कक्षा में प्रभावी शिक्षणशास्त्र को सक्षम बनाने वाले प्रमुख तत्त्व हैं—शिक्षकों का विद्यार्थियों से आत्मीय रिश्ता, उन्हें ध्यान से सुनना, उनके व्यवहार को देखना, समझना, अभिव्यक्ति और सवाल पूछने के लिए प्रोत्साहित करना, एक दोस्त की तरह उनकी मदद करना, उन्हें तरह-तरह से सीखने के अवसर देना, सिखाने के लिए विविध तरीक़ों व सामग्री का उपयोग करना, आदि।

शिक्षण से जुड़ी सरल और आसान-सी दिखने वाली ये बातें बेहद ज़रूरी हैं। ये शिक्षण प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बनें, इसके लिए ज़रूरी है कि इन बातों को बार-बार उलटते-पुलटते रहा जाए। *पाठशाला भीतर और बाहर* में प्रकाशित होने वाले तमाम लेखों में प्रभावी शिक्षणशास्त्र की ये बातें अलग-अलग तरह से आती रहती हैं। यही वजह है कि पत्रिका में प्रकाशित लेख आप सभी पाठकों को उपयोगी लगते हैं।

इस सितम्बर अंक में भी आपको प्रभावी शिक्षणशास्त्र से जुड़े तमाम लेख मिलेंगे। इसमें आप पढ़ेंगे साहित्यिक विधाओं को सायास पढ़ाए जाने, प्रभावी शिक्षण के लिए उपयोग में लाए जाने वाले डेमॉन्स्ट्रेशन मॉडल, कक्षा में लैंगिक और सामाजिक भेदभाव पर काम करने, ईवीएस शिक्षण के लिए खोजबीन विधि की उपयोगिता, सवाल पूछने के महत्त्व, विज्ञान शिक्षण की प्रक्रिया में एग्ज़िट टिकट की उपयोगिता, कक्षा प्रबन्धन के लिए तीन रणनीतियों से जुड़े ज़रूरी लेख। इनके अतिरिक्त, 'इनसे मिलिए' में पढ़िएगा उत्तराखण्ड की एक शिक्षिका के अनुभव, 'शिक्षकों की डायरी से' में शामिल हैं तीन राज्यों के कक्षा अनुभव, और 'किताबों से दोस्ती' के अन्तर्गत दो महत्त्वपूर्ण किताबों के बारे में जिनका उपयोग कक्षा शिक्षण को सहयोग करेगा। 'आइए, करके देखें' में शामिल हैं कक्षा में की जाने वाली कुछ रोचक और उपयोगी गतिविधियाँ।

उम्मीद है यह अंक आपको उपयोगी लगेगा।

शुभकामनाओं सहित

प्रतिभा कटियार
मुख्य सम्पादक

अनुक्रम

सम्पादकीय

1. भाषा की कक्षा में लेखन शैलियों और साहित्यिक विधाओं के प्रति सजगता — 03
मनोज कुमार

2. सीखने–सिखाने में प्रश्न पूछने के मायने — 08
पूजा आर्या

3. लैंगिक भेदभाव के प्रति संवेदनशील समझ बनाना — 12
जय शेखर

4. सीखने में रोचकता और उत्साह लाती है खोजबीन विधि — 17
मुकेश चंद शर्मा

5. कक्षा प्रबन्धन के लिए तीन रणनीतियाँ — 22
शताब्दी सैकिया

6. डेमॉन्स्ट्रेशन मॉडल : अनुभव के साथ सीख और सुधार — 26
सारिया अली

7. एलकेजी और यूकेजी में कविताओं के ज़रिए भाषा शिक्षण — 31
कविता कपिल

8. विज्ञान शिक्षण की प्रक्रिया में एग्ज़िट टिकट की उपयोगिता — 35
अश्लेषा शर्मा

9. तुलना की अवधारणा : गणितीय समझ का आधार — 39
मुकेश मालवीय

स्थाई स्तम्भ

1. शिक्षकों की डायरी से — 43
अफ़रोज़ जहाँ, संतोष कुमार निर्मलकर, सुमलता एच कांबले

2. इनसे मिलिए–मीनाक्षी आर्या — 47
भास्कर उप्रेती

3. किताबों से दोस्ती — 50
रिक्शावाली लड़की : ऋचा पाण्डेय, *मल्ली चली बाज़ार* : महेश कुमार सी एस

4. आइए, करके देखें — 53
कृतिका

5. सम्पादक के नाम — 57

भाषा की कक्षा में लेखन शैलियों और साहित्यिक विधाओं के प्रति सजगता

मनोज कुमार

उच्च प्राथमिक से उच्च माध्यमिक कक्षाओं में भाषा की पढ़ाई में विभिन्न साहित्यिक विधाओं और लेखन शैलियों का अध्यापन पारम्परिक सोच व तरीक़ों के वर्चस्व के चलते हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा है। ये विधाएँ और शैलियाँ क्या हैं? इनके अध्यापन का उद्देश्य क्या है? इनकी विशेषताओं, सीमाओं, सम्भावनाओं और आपसी फ़र्क़ को कैसे पहचानें? और इनका सायास अध्यापन क्यों ज़रूरी है? ऐसे ही सवालों पर इस लेख में नए शोध और पाठ्यचर्या दस्तावेज़ के सुझावों को ध्यान में रखते हुए गहनता से विचार किया गया है।

इस समय भाषा शिक्षण की मुख्य चुनौती यह है कि विद्यार्थी प्राथमिक कक्षा में पढ़ना और लिखना सीख लें, तथा इस कौशल का उपयोग कर आगामी कक्षाओं में सीखने और पेशेवर जीवन में स्वावलम्बी बन सकें। शिक्षा के दायरे में इस समय चल रहे कई महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम इस लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में अग्रसर हैं। सम्भवत: इस बड़ी चुनौती के चलते इस बात पर बहुत चर्चा नहीं हो रही है कि जब एक बार विद्यार्थी विद्यालय की भाषा में पढ़ना-लिखना सीख लेते हैं तब उसके बाद आगे की कक्षाओं में भाषा शिक्षण से वे क्या हासिल करना चाहते हैं।

फ़र्ज़ करें कि छठवीं कक्षा के एक विद्यार्थी ने अर्थ समझकर किसी पाठ को पढ़ने में महारत हासिल कर ली है, और अब उसे अपनी कक्षा की पाठ्यपुस्तक में प्रेमचंद की कहानी पढ़ना है। क्या कहानी पढ़ने के लिए इस विद्यार्थी को किसी शिक्षक की ज़रूरत है? यदि वह कहानी को स्वतंत्र रूप से पढ़कर समझ लेता है तब कक्षा में उसे पढ़ाए जाने का उसके लिए क्या महत्त्व है? और यदि मान लें कि कक्षा में सभी विद्यार्थी पाठ्यचर्या की अपेक्षा के अनुरूप स्वतंत्र रूप से पढ़कर समझ लेते हैं, तब उस कक्षा का समय कहानी के अध्यापन पर क्यों ख़र्च किया जाए।

इन प्रश्नों के कई उत्तर हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, कहानी पढ़ना विद्यार्थियों को रुचिकर लगता है, और रुचिकर सामग्री पढ़ने से उनमें पढ़ने की आदत विकसित होती है। इतना ही नहीं, शायद ही कहीं छठवीं कक्षा ऐसी हो जिसमें सभी विद्यार्थी

चित्र 1: पढ़ना और समझना सीख लेने के बाद विद्यार्थियों की रुचि तरह-तरह के पाठों में जागती है

चित्र 2 : उच्च प्राथमिक के विद्यार्थियों को सही पुस्तक का चयन करने में मार्गदर्शन की ज़रूरत होती है

> भाषा शिक्षण का एक उद्देश्य कविता, कहानी, निबन्ध, आदि जैसी साहित्यिक विधाओं और कथात्मक, वर्णनात्मक, आदि जैसी लेखन शैलियों को पहचानने और सराहने के कौशल के बारे में है।

अर्थ समझकर अपने-आप पाठ को धाराप्रवाह पढ़ लें। वे अकसर अटक-अटक कर पढ़ते हैं। ऐसी स्थिति में, कक्षा में कहानी पढ़ने के अवसर देने से वे धीरे-धीरे धाराप्रवाह पढ़ना सीख जाते हैं। दूसरा सम्भव जवाब हो सकता है कि कहानी पढ़ने और सुनने से विद्यार्थियों को सफल और नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। प्रायः इन कहानियों में हम देखते हैं कि बुरे कर्मों का नतीजा बुरा और अच्छे कर्मों का नतीजा अच्छा होता है। हम इन कहानियों में पाते हैं कि चाहे जीवन में जितनी भी मुश्किलें हों, कोशिश करके जीवन में सब कुछ हासिल किया जा सकता है। इन उत्तरों के विपरीत, तर्क किया जा सकता है कि यदि उद्देश्य पढ़ने की आदत विकसित करना या धाराप्रवाह पढ़ना सीखना है तब कक्षा में कहानियों पर चर्चा से बेहतर यही होगा कि विद्यार्थियों को पुस्तकालय से किताब लेकर स्वतंत्र ढंग से पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाए।

दूसरी बात, आधुनिक कहानियाँ पारम्परिक बोध कथाओं से भिन्न होती हैं, और पारम्परिक अर्थ में प्रेरणादायक भी नहीं हैं। एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित आठवीं कक्षा की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक *मल्हार* में भीष्म साहनी द्वारा लिखित एक कहानी है 'दो गौरैया'। कहानी रोज़मर्रा के जीवन में आई एक मामूली-सी उलझन को लेकर है। दो गौरैया एक दिन कहीं से आकर छत से लटक रहे पंखों के डैनों के बीच घोंसला बना लेती हैं, और पिताजी की तमाम कोशिशों के बाद भी वह घर से निकलती नहीं। ऐसा नहीं है कि इस कहानी में कोई नैतिक उलझन नहीं है, या कोई नैतिक सन्देश नहीं है। कहानी से एक से अधिक सन्देश निकाले जा सकते हैं, उन पर बहस हो सकती है, लेकिन नैतिक उलझन और द्वन्द्व समाप्त होकर नैतिक समाधान तक पहुँचने में कोई हड़बड़ी नहीं है। इस दृष्टि से इस कहानी का ढाँचा *पंचतंत्र* की कहानियों और दूसरी पारम्परिक बोध कथाओं से अलग है। यह एक उदाहरण है। इसी प्रकार की कई अन्य कहानियाँ छठवीं, सातवीं और आठवीं की पाठ्यपुस्तकों में हैं। यह मानने का कोई कारण नहीं है कि इन कहानियों को नैतिक शिक्षा देने या धाराप्रवाह पढ़ने की पाठ्य सामग्री के रूप में रखा गया है। शायद पाठ्यपुस्तकों में इस प्रकार की कहानियों के चयन के पीछे कई अन्य प्रयोजन होंगे।

साहित्यिक विधाओं और शैलियों की संरचनात्मक विशिष्टताओं की पहचान

पाँचवीं से आठवीं कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न साहित्यिक विधाओं और विषयवस्तुओं की रचनाओं को संकलित करने के उद्देश्यों का कुछ अनुमान इनकी भूमिकाओं में उल्लिखित पाठ की संरचना को देखकर मिलता है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2023* में वर्णित पाठ्यचर्या उद्देश्यों की सूची को देखने से भी इस चयन का तर्क समझ में आता है। इस सूची में भाषा शिक्षण का एक उद्देश्य कविता, कहानी, निबन्ध, आदि जैसी साहित्यिक विधा और कथात्मक, वर्णनात्मक, आदि जैसी लेखन शैलियों को पहचानने और सराहने के कौशल के बारे में है। इन्हें अलग-अलग पहचानने का अर्थ है—इनकी विशेषताओं, सम्भावनाओं और सीमाओं को भी पहचानना। उदाहरण के तौर पर, कहानी में ऐसा क्या कहा जा सकता है, जिसे एकांकी अथवा नाटक में नहीं कहा जा सकता, या एकांकी अथवा नाटक में किस प्रकार की अभिव्यक्तियाँ सम्भव हैं जो कहानियों में नहीं हैं। परम्परागत लोककथाओं से प्रेमचंद जैसे लेखकों की कहानियाँ किन अर्थों में समानता और भिन्नता लिए हैं? विधाओं की विशेषताओं को पहचानने का आशय सिर्फ़ इन विधाओं में आमतौर पर अभिव्यक्त विषयवस्तुओं की प्रकृति को रेखांकित करना नहीं है। हालाँकि विषयवस्तुओं की विशिष्टता भी महत्त्वपूर्ण है, लेकिन विधाओं की संरचनात्मक विशिष्टताओं को भी समझना और समझाना ज़रूरी है। विधागत संरचना का अर्थ यह है कि किसी विधा विशेष में लिखी गई रचना के हिस्से किस क्रम में आते हैं, और हर हिस्सा क्या काम करता है। उदाहरण के लिए, कहानी में हम किसी व्यक्ति या कुछ लोगों के जीवन में घटी

कुछ घटनाओं के बारे में बताते हैं, और संस्मरण में भी कुछ ऐसा ही करते हैं। कहानी के पहले हिस्से में पात्र और परिवेश के बारे में कुछ ब्योरे होते हैं, उसके अगले हिस्से में उन पात्रों के जीवन में कुछ बाधाएँ आती हैं, फिर पात्र उन बाधाओं से जूझते हुए या तो अपना उद्देश्य हासिल कर लेते हैं, या फिर हार जाते हैं। हार जाने की स्थिति में त्रासद, दु:खद अन्त वाली कहानी सामने आती है, और जीत जाने की स्थिति में सुखद अन्त वाली।

एनसीईआरटी द्वारा छठवीं कक्षा के लिए प्रकाशित हिन्दी की पाठ्यपुस्तक *मल्हार* की दो रचनाओं को अगर हम साथ-साथ पढ़ें, और उनकी संरचनाओं की तुलना करें तो विद्यार्थी विधागत संरचना की समझ पुख़्ता कर सकते हैं। पहली रचना है सुदर्शन की कहानी 'हार की जीत' और दूसरी रचना है मेजर ध्यानचंद का संस्मरण 'गोल'।

विधागत विशिष्टताओं का अध्यापन : सायास या अनायास

हाल में एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित माध्यमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में विधागत विशिष्टताओं की तरफ़ ध्यान दिलाने के कुछ अवसर दिए गए हैं। सभी पाठों के अन्त में अभ्यास की सूची में 'कहानी की रचना' जैसे कुछ अभ्यास दिए गए हैं। इन प्रश्नों के ज़रिए कहानी लेखन के रचनात्मक पहलुओं की ओर ध्यान दिलाया गया है। विधागत विशिष्टताओं का बोध करवाना माध्यमिक स्तर के कई उद्देश्यों में से एक है। पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों का दृष्टिकोण यह भी है कि विधाओं की विशिष्टताओं को विद्यार्थी रचना से गुज़रते हुए पहले अकेले और बाद में समूह में खोजें। पाठ्यपुस्तकें और पाठ्यचर्या, पीढ़ियों से संचित विधा सम्बन्धी ज्ञान को सायास तरीक़े से सुपुर्द करने के पक्ष में नहीं हैं। विद्यार्थियों को साहित्यिक रूपों व विधाओं से रू-ब-रू करवाना और यह मान लेना कि वे स्वयं ही विभिन्न रूपों और विधाओं की विशिष्टताओं को पहचान लेंगे, एक बात है; जबकि रूपों और विधाओं को सुनियोजित शिक्षण गतिविधियों के माध्यम से समझाना, दूसरी बात है। माध्यमिक स्तर के लिए हाल में प्रकाशित एनसीईआरटी की हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकें पहले दृष्टिकोण को अपनाती हैं। यह इस बात से स्पष्ट होता है कि अभ्यास खण्ड में विधाओं और रूपों से सम्बन्धित प्रश्न पहले दृष्टिकोण से तैयार किए गए हैं।

मल्हार की भूमिका में रचना सम्बन्धी प्रश्नों के बारे में यह कहा गया है : "साहित्य की रचना—इस प्रश्न द्वारा विद्यार्थियों को साहित्य की विधा-विशेष की विशेषताओं और संरचनात्मक पहलुओं की ओर ध्यान देने का अवसर मिलेगा।" (पृष्ठ ix) इस सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि वर्तमान शैक्षिक विमर्श में

चित्र 3 : साहित्य की विविध विधाओं की अपनी-अपनी ख़ूबियाँ होती हैं, विद्यार्थी को इन्हीं ख़ूबियों और विशिष्टताओं को पकड़ना पड़ता है

शिक्षाविदों का एक वर्ग ऐसा है जो कहानी सहित साहित्य के सभी रूपों और लेखन की विविध विधाओं के सायास अध्यापन को ज़रूरी मानता है।

विद्यालयी शिक्षा में विद्यार्थी जैसे-जैसे आगे बढ़ता है, उसे विभिन्न प्रकार की लेखन विधाओं को सीखना पड़ता है। इन विधाओं से परिचय, पढ़ने और लिखने में उसकी मदद करता है। दुर्भाग्य से, विद्यालयों में एक या दो प्रकार के लेखन पर ही ज़ोर होता है। उदाहरण के लिए, अपने पूर्व अनुभव को स्मृति के आधार पर दर्ज करना, टिप्पणी करना, या किसी अवलोकन के आधार पर कुछ लिखना। जैसे भाषा की कक्षा में विद्यार्थियों से पूछा जाता है कि आप पिछली गर्मियों की छुट्टी में किसी रिश्तेदार के यहाँ या कहीं घूमने गए होंगे, उस अनुभव पर एक निबन्ध लिखें। अथवा विद्यार्थियों को विद्यालय परिसर में कुछ देर बाहर घूमने की अनुमति दी जाती है, और लौटकर, वे जो बाहर देखते हैं, उन्हें अपनी नोटबुक में दर्ज करने को कहा जाता है। ये गतिविधियाँ निरर्थक अथवा अनावश्यक नहीं हैं, लेकिन यदि लेखन विधा के अनुसार देखें तो हम विद्यार्थियों को केवल स्मृति- और अवलोकन-आधारित विवरणों को लेखन के ज़रिए दर्ज करने का अवसर दे रहे हैं। इनके अलावा, यदि विद्यालय में अन्य ज़रूरी विधाओं और लेखन शैलियों को सायास नहीं पढ़ाया जाता है तो ख़ासतौर पर वे विद्यार्थी पीछे छूट जाते हैं जिनके परिवार और पड़ोस में पढ़ने-लिखने की संस्कृति और सुविधा कम है। इसलिए सिडनी स्कूल ने समावेशी शिक्षा के तर्क के साथ विधाओं के सायास अध्यापन पर ज़ोर दिया। इन्हीं तर्कों के साथ हम साहित्य की विविध विधाओं के सायास अध्यापन की आवश्यकता को भी समझ सकते हैं।

विधाओं के सायास अध्यापन का अर्थ है—सचेत रूप से विद्यार्थियों का अलग-अलग प्रकार की रचना विधाओं से परिचय करवाना और उनमें महारत हासिल करने में सहयोग करना। इतिहास, विज्ञान, आदि अलग विषयों में अलग-अलग रचना विधाओं और लेखन शैलियों का प्रयोग होता है। उदाहरणार्थ, विज्ञान में परिभाषा, उदाहरण, वर्गीकरण, कार्य-कारण सम्बन्ध, किसी प्रक्रिया का विवरण जैसी रचना विधाओं का अधिक इस्तेमाल होता है, जबकि इतिहास में तथ्यों और घटनाओं का कालक्रमिक विवरण, एक से अधिक प्रमाणों का मिलान करके तथ्यों की पुष्टि, कार्य-कारण सम्बन्ध जैसी रचना विधाओं का। अगर विद्यार्थियों को माध्यमिक, उच्च माध्यमिक और आगे की कक्षा में सफल होना है तो उन्हें इन तमाम लेखन प्रविधियों में दक्षता हासिल करने के अवसर मिलने चाहिए।

अगर हम विधाओं के सायास अध्यापन पर विचार करें तो साहित्यिक विधाओं पर कक्षा में बातचीत से इसकी शुरुआत होगी। लेकिन साहित्य से इतर भी प्रारम्भिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक की भाषा की कक्षाओं में इस पर काम करने की ज़रूरत होगी। उदाहरण के लिए, किसी प्रक्रिया का वर्णन करने वाले पाठ में भाषा के किन पक्षों पर ध्यान देने की ज़रूरत है; अगर हम किसी घटना का विवरण दे रहे हैं तो पाठ के भीतर अलग-अलग हिस्सों को किस प्रकार एक दूसरे से सम्बद्ध करें; किसी ऐसे विषय पर समीक्षात्मक लेख लिखना हो जिस पर अलग-अलग विद्वानों के बीच एक से अधिक राय हों तो पाठ को कैसे संयोजित करें; इत्यादि विषय भाषा के अध्यापन के विषय हो सकते हैं।

> **अधिसंज्ञानात्मक का अर्थ होता है संज्ञान का संज्ञान लेना। अकसर हम किसी वस्तु या विषय का संज्ञान लेते हैं। जब संज्ञान ख़ुद ही संज्ञान का विषय बन जाए तो वह अधिसंज्ञानात्मक अवस्था है।**

साहित्यिक और ग़ैर-साहित्यिक लेखन की अलग-अलग विधाओं के ज्ञान से किसी रचना को पढ़ने में सहूलियत होती है। विद्यार्थी जब किसी संस्मरण को पढ़ने बैठते हैं तो उस विधा के हिसाब से अपनी अपेक्षाओं का तालमेल बिठाकर बैठते हैं। उन्हें पता होता है कि संस्मरण से उन्हें वे अपेक्षाएँ नहीं रखनी चाहिए जो वे कहानी से रख सकते हैं। उसी प्रकार, किसी साहित्यिक कहानी से उन्हें वह अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए जो वे इतिहास लेखन से करते हैं, भले ही वह कहानी किसी ऐतिहासिक घटना या पात्र पर ही क्यों न हो।

यह तो पढ़ने की बात हुई। अगर लिखने की बात करें तो विद्यार्थियों को यह पता होना चाहिए कि संस्मरणात्मक लेखन में उनको अपने व्यक्तित्व को प्रकट करने की छूट है, लेकिन एक सर्वेक्षणकर्ता के रूप में उन्हें अपने बारे में कम और अपने विषय के बारे में अधिक बात करनी चाहिए। प्रारम्भिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अकादमिक सफलता के लिए इस प्रकार का अभ्यास ज़रूरी है।

विधागत विशिष्टताओं की पहचान

विधाओं को सायास तरीक़े से पढ़ाने के पीछे एक अन्य तर्क भी है। वह यह है कि लेखन पद्धतियों और विधाओं की ओर सायास ध्यान देने से अधिसंज्ञानात्मक (metacognitive) और अधिभाषिक (metalinguistic) क्षमताओं का विकास होता है। अधिसंज्ञानात्मक का अर्थ होता है संज्ञान का संज्ञान लेना। अकसर हम किसी वस्तु या विषय का संज्ञान लेते हैं। जब संज्ञान ख़ुद ही संज्ञान का विषय बन जाए तो वह अधिसंज्ञानात्मक अवस्था है। वैसे ही अधिभाषिक का मतलब होता है भाषा में किसी और विषय के बारे में नहीं, बल्कि भाषा के बारे में ही बात करना। वायगोत्स्की की धारा में शिक्षा और विशेष रूप से भाषा की शिक्षा पर सोचने वाले विद्वान कहते हैं कि भाषा एक शीशे की खिड़की की तरह है जिससे हम दुनिया को देखते और उसका संज्ञान लेते हैं। लेकिन पीछे मुड़कर जब हम शीशे का संज्ञान लेते हैं तो हम संज्ञान के दूसरे स्तर पर पहुँचते हैं। यह अधिसंज्ञानात्मक अवस्था है। भाषा के क्षेत्र में बात करें तो यह अधिभाषिक अवस्था

है। जब हम पलटकर खिड़की के शीशे पर नज़र डालते हैं, हमें कई बार दिखता है कि शीशा पूरी तरह पारदर्शी और रंगहीन नहीं है। बाहर जिस रंग की दुनिया दिख रही है उस यथार्थ को गढ़ने में शीशे के रंग की भी भूमिका होती है। उसी प्रकार पाठ में वर्णित किसी चरित्र या घटना का अर्थ इस पर भी निर्भर करता है कि हम उसे किस विधा में रचते हैं।

शुरुआती और प्रारम्भिक स्तर से विद्यार्थी जब माध्यमिक और उच्च माध्यमिक की ओर बढ़ते हैं, तो पाठ्यक्रम की अपेक्षाएँ पठन-पाठन और चिन्तन-मनन की दृष्टि से संज्ञानात्मक के साथ-साथ अधिसंज्ञानात्मक स्तर को हासिल करने की होती हैं। ऐसा सभी विषयों में होता है। गणित में हम अंकगणित से बीजगणित की ओर बढ़ते हैं। विज्ञान में भी अधिक अमूर्त धारणाओं से विद्यार्थी रू-ब-रू होते हैं। इसी क्रम में भाषा के अध्ययन-अध्यापन में हमें संज्ञानात्मक के साथ-साथ अधिसंज्ञानात्मक और अधिभाषिक स्तर पर बढ़ने की ज़रूरत होती है। इस प्रयास में साहित्यिक विधाओं और लेखन पद्धतियों का सायास अध्ययन ज़रूरी है।

> “भाषा के अध्ययन–अध्यापन में संज़ानात्मक के साथ–साथ अधिसंज़ानात्मक और अधिभाषिक स्तर पर बढ़ने की ज़रूरत होती है। इस प्रयास में साहित्यिक विधाओं और लेखन पद्धतियों का सायास अध्ययन ज़रूरी है।”

सन्दर्भ

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2023, पृष्ठ संख्या 241–248, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

मनोज कुमार अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी के शिक्षा संकाय में अध्यापक हैं। दिगंतर जयपुर, रूम-टू-रीड इंडिया जैसी संस्थाओं के साथ काम करते हुए प्रारम्भिक शिक्षा में ज़मीनी स्तर पर काम किया है। शिक्षा, साहित्य, संस्कृति और समसामयिक मसलों पर इनकी कई रचनाएँ हिन्दी और अँग्रेज़ी में प्रकाशित हुई हैं। बच्चों के लिए भी रचनाएँ पत्रिकाओं में या पिक्चर बुक्स के रूप में प्रकाशित हुई हैं।

सम्पर्क : manoj.kumar@azimpremjifoundation.org

सीखने–सिखाने में प्रश्न पूछने के मायने

पूजा आर्या

सार्थक प्रश्न पूछना और विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने के अवसर देना सीखने को अधिक गहन, भागीदारीपूर्ण और रचनात्मक बनाता है। साथ ही, यह शिक्षक के लिए विद्यार्थियों के सीखने की स्थितियों को समझने और उन्हें बेहतर बनाने का एक ज़रिया भी है।

सुबह का समय था। दूसरी कक्षा के विद्यार्थी अपनी कक्षा में ज़मीन पर एक घेरे में बैठे थे। शिक्षिका कक्षा में आईं और उन्होंने बिना कुछ कहे एक घेरे के बीच सूखी पत्ती रख दी। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि उसे ध्यान से देखें। पर्यावरण अध्ययन के इस पाठ की शुरुआत पाठ्यपुस्तक या परिभाषाओं की मदद से करने के बजाय उन्होंने प्रश्न पूछा :

"आपको क्या लगता है कि यह पत्ती पेड़ से क्यों गिरी?"

कक्षा तुरन्त हरकत में आ गई, और विद्यार्थियों में उत्साह भर गया।

"क्योंकि यह सूख गई थी।"

"शायद तेज़ हवा चली होगी!"

"यह पुरानी हो गई थी।"

"मेरी दादी कहती हैं कि नई पत्तियों के आने से पहले पुरानी पत्तियाँ गिर जाती हैं।"

फिर तो विद्यार्थी आपस में बातें करने लगे, अपने विचारों की तुलना करने लगे, और याद करने लगे कि उन्होंने अपने घरों के आस-पास और विद्यालय के मैदान में क्या देखा था। कुछ विद्यार्थी कन्नड़ में बोल रहे थे, वहीं कुछ हिन्दी और अँग्रेज़ी मिलाकर बोल रहे थे। एक विद्यार्थी ने पत्ती उठाई और धीरे से कहा, "शायद अब पेड़ को इसकी ज़रूरत नहीं है!"

उस समय, कक्षा सिर्फ़ शिक्षिका के प्रश्न का उत्तर नहीं दे रही थी, बल्कि विद्यार्थी देख रहे थे, सोच रहे थे, कल्पना कर रहे थे, चीज़ों को आपस में जोड़ रहे थे, चर्चा कर रहे थे, और साथ मिलकर सीख रहे थे।

यही है प्रश्न पूछने की ताक़त।

'सही उत्तर' से परे जाकर प्रश्न पूछना

अकसर कई कक्षाओं में प्रश्न सिर्फ़ इसलिए पूछे जाते हैं ताकि यह पता लग सके कि विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक की जानकारी याद हुई है या नहीं।

इस प्रश्न का उत्तर क्या है; कौन बता सकता है; हमने कल क्या पढ़ा था; आदि जैसे प्रश्नों की अपनी अहमियत है। लेकिन जब कक्षा में सिर्फ़ जानकारी पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं तब हो सकता है कि सीखना सिर्फ़ रटने तक सीमित रह जाए। अकसर कुछ ऐसे विद्यार्थी ही उत्तर देते हैं जिनमें आत्मविश्वास होता है, बाक़ी चुप ही रहते हैं।

प्रश्न पूछने का मतलब सिर्फ़ सही उत्तर की जाँच करना नहीं होता, यह इससे कहीं बढ़कर हो सकता है।

- यह पढ़ाने की एक रणनीति हो सकती है।
- रचनात्मक आकलन का एक तरीक़ा हो सकता है।
- सभी विद्यार्थियों को अपनी बात रखने और निर्णय लेने की आज़ादी देने का एक ज़रिया हो सकता है।
- भागीदारी और बातचीत का एक साधन हो सकता है।

चित्र 1 : पूछे गए प्रश्न का उत्साहपूर्वक जवाब देती छात्रा

जब हम विद्यार्थियों से सोच-समझकर और सार्थक प्रश्न पूछते हैं तो ये उन्हें गहराई से सोचने, विषयों को बेहतर ढंग से समझने, अपनी उत्सुकता ज़ाहिर करने, सही अन्दाज़ा लगाने, विभिन्न चीज़ों के बीच सम्बन्ध जोड़ने, और दूसरों के विचारों के साथ सम्मान के साथ असहमति जताने के लिए भी प्रेरित करते हैं।

पढ़ाने के तरीक़े के रूप में प्रश्न पूछना

शिक्षण प्रक्रियाओं के दौरान प्रश्न पूछना शिक्षकों के सबसे प्रभावशाली और असरदार पढ़ाने के तरीक़ों में से एक माना जाता है। एक सार्थक प्रश्न जिज्ञासा जगाने, बातचीत को बढ़ावा देने, और विद्यार्थियों को कक्षा में सीखी हुई बातों को रोज़मर्रा के अनुभवों से जोड़ने में मदद कर सकता है।

उदाहरण के लिए, गणित की कक्षा 4 में, 'हासिल वाले घटाव' को सीधे समझाने के बजाय, शिक्षक बोर्ड पर लिखते हैं, "आपके पास 100 रुपए हैं। आप 78 रुपए का सामान ख़रीदते हैं। कैसे पता लगाएँगे कि आपके पास कितने रुपए बचे हैं?"

विद्यार्थी अलग-अलग तरह से उत्तर देना शुरू करते हैं, "मैं 100 में से 78 घटाऊँगा"; "मैं पहले 70 घटाऊँगी"; "मैं 78 से आगे गिनूँगा"; "मैं अपनी उँगलियों का इस्तेमाल कर सकती हूँ"; आदि। अब तुरन्त 'सही' तरीक़ा बताने के बजाय, शिक्षक कुछ और प्रश्न पूछते हैं। जैसे–

"क्या एक प्रश्न को हल करने के अलग-अलग तरीक़े हो सकते हैं?" या "आपको क्यों लगता है कि आपका तरीक़ा सही है?"

धीरे-धीरे, कक्षा का माहौल सिर्फ़ उत्तर खोजने तक सीमित न रहकर तरीक़ों, तर्क और समझ पर बातचीत करने की दिशा में बढ़ने लगता है।

कक्षाओं में प्रश्न पूछना ही पढ़ाने का तरीक़ा बन जाता है। सोच-समझकर पूछे गए प्रश्न विद्यार्थियों की पहले से मौजूद जानकारी या पूर्व ज्ञान को सक्रिय करने, जिज्ञासा बढ़ाने, भागीदारी को बढ़ावा देने, और अवधारणा की समझ को गहरा करने में मदद करते हैं। ऐसे प्रश्न विद्यार्थियों को अपनी सोच बताने, दूसरों की बात सुनने और पाठ को अपने अनुभवों से जोड़ने के मौक़े भी देते हैं। जब कक्षा का माहौल केवल एकतरफ़ा निर्देश देने तक सीमित न रहकर बातचीत, सोच-विचार और चर्चाओं का एक सक्रिय केन्द्र बन जाता है तब विद्यार्थी सीखने की प्रक्रिया में पहले से कहीं अधिक सक्रियता और गहनता से हिस्सा लेने लगते हैं।

रचनात्मक आकलन की प्रक्रिया के दौरान प्रश्न पूछना

प्रश्न पूछने से शिक्षिका को कक्षा में होने वाली गतिविधियों के दौरान विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया को लगातार समझने में मदद मिलती है। इसे रचनात्मक आकलन कहते हैं। यह ऐसा आकलन है जो सीखने की प्रक्रिया के साथ-साथ उसे बेहतर बनाने में मदद करता है।

उदाहरण के लिए, कहानी पढ़ते समय शिक्षिका पूछती हैं, "तुम्हें क्या लगता है कि लड़के ने चिट्ठी क्यों छिपाई?"

> **"जिस कक्षा में विद्यार्थियों की अपनी सोच और पहल को अहमियत दी जाती है, वहाँ वे खुलकर प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।"**

कुछ विद्यार्थी आत्मविश्वास के साथ उत्तर देते हैं। कुछ को अपनी बात समझाने में मुश्किल होती है। एक विद्यार्थी कहता है–

"क्योंकि वह डरा हुआ था।"

शिक्षिका आगे पूछती हैं, "कहानी में ऐसी कौन-सी बात है जिससे तुम्हें लगा कि वह डरा हुआ था?"

अब यहाँ शिक्षिका सिर्फ़ यह नहीं जान रही हैं कि विद्यार्थियों को कहानी पता है या नहीं। वे यह भी समझ पा रही हैं कि क्या वे भावनाओं को समझ सकते हैं, कहानी में दिए गए संकेतों का इस्तेमाल कर सकते हैं, और अपने तर्क दे सकते हैं।

इसी तरह, विज्ञान की कक्षा में अगर विद्यार्थी कहते हैं कि पौधे मिट्टी खाते हैं, शिक्षिका तुरन्त उनकी उस दुविधा को समझ जाती हैं जिस पर और चर्चा करने की ज़रूरत है।

और तब प्रश्न पूछने के ज़रिए, शिक्षिका ये बातें समझ सकती हैं–

- विद्यार्थी पहले से क्या जानते हैं?
- उन्हें कौन-सी चीज़ें भ्रमित करती हैं?
- वे कैसे सोच रहे हैं?
- कौन-से विद्यार्थी हिस्सा ले रहे हैं?
- किन विद्यार्थियों को मदद की ज़रूरत है?
- क्या शिक्षक के पढ़ाने के तरीक़े काम कर रहे हैं?

इस अर्थ में, आकलन सिर्फ़ टेस्ट, अंकों या वर्कशीटों तक ही सीमित नहीं है। कक्षा में रोज़ होने वाली चर्चा भी आकलन का अवसर प्रदान कर सकती है।

प्रश्नों के ज़रिए विद्यार्थियों को अपनी बात रखने में सक्षम बनाना

- अकसर कक्षा में प्रश्न पूछने का काम शिक्षक के नियंत्रण में होता है। वे प्रश्न पूछते हैं, और विद्यार्थी उत्तर देते हैं। लेकिन असल भागीदारी तब बनती है जब विद्यार्थी ख़ुद भी प्रश्न पूछने लगते हैं।
- विद्यार्थियों के प्रश्न उनकी उत्सुकता, कल्पनाशीलता और जुड़ाव को दिखाते हैं। फिर भी कई विद्यार्थी प्रश्न पूछने से हिचकिचाते हैं क्योंकि उन्हें डर होता है कि लोग उन पर हँसेंगे, उन्हें टोकेंगे या नज़रअन्दाज़ कर देंगे। जिस कक्षा में विद्यार्थियों की अपनी सोच और पहल को अहमियत दी जाती है, वहाँ वे खुलकर प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।
- पाँचवीं कक्षा में, प्रवासन, यानी एक जगह से दूसरी जगह जाकर बस जाना, के बारे में एक पाठ पढ़ने के बाद, एक

विद्यार्थी ने पूछा, "लोग अपने गाँव क्यों छोड़ देते हैं, भले ही उनकी इच्छा न हो?" शिक्षिका ने पाठ को बीच में रोककर चर्चा शुरू की। फिर क्या था, विद्यार्थियों ने शहरों में काम करने वाले माता-पिता, मौसमी काम और सूखे के समय परिवार के दूसरी जगह बस जाने जैसी बातें बतानी शुरू कर दीं। यह बातचीत और भी प्रभावी इसलिए रही क्योंकि कक्षा में केवल पाठ्यपुस्तक को ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के प्रश्नों को भी महत्त्व दिया गया। विद्यार्थियों को अपनी राय व्यक्त करने की स्वतंत्रता देने पर यह बात भी समझ में आती है कि वे केवल जानकारी प्राप्त करने वाले निष्क्रिय श्रोता नहीं हैं। वे स्वयं सोचने, समझने और अर्थ निकालने की क्षमता रखते हैं।

विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने के लिए बढ़ावा देने के कुछ उपाय

- विद्यार्थियों के प्रश्नों की तारीफ़ करना;
- उन्हें अपने साथियों के लिए प्रश्न बनाने देना;
- उन्हें जोड़ी में चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित करना;
- 'प्रश्न की दीवार' या 'जिज्ञासा का कोना' बनाना;
- उनके विभिन्न प्रकार के उत्तरों का स्वागत करना;
- विद्यार्थियों को उनकी सोच के बारे में बताने को कहना;
- उन्हें सम्मान के साथ असहमति जताने के लिए प्रोत्साहित करना; आदि।

जब विद्यार्थियों को लगता है कि उनके प्रश्नों को अहमियत दी जा रही है, भागीदारी अपने-आप बढ़ जाती है।

कक्षा में प्रश्न पूछना और सोचने के लिए समय देना

हालाँकि, विद्यार्थी अकसर उत्तर देने से हिचकिचाते हैं क्योंकि उन्हें 'ग़लत' उत्तर देने का डर होता है, या वे तुरन्त उत्तर देने में दबाव महसूस करते हैं। कक्षा में सार्थक प्रश्न-उत्तर का मतलब सिर्फ़ प्रश्न पूछना नहीं, बल्कि एक ऐसा वातावरण बनाना भी है जहाँ विद्यार्थी सोचने, विचार करने और उत्तर देने में सहज महसूस करें।

उदाहरण के लिए, मौसम पर चर्चा के दौरान, कोई विद्यार्थी कह सकता है, "आज सूरज बादलों के पीछे छिपा हुआ है।" शिक्षक इस बात को आधार बनाकर कह सकते हैं, "हाँ, ऐसा ही लग रहा है, है न? सूरज तो वहीं है, लेकिन बादल उसकी थोड़ी-सी रोशनी को रोक रहे हैं। जब सूरज बादलों से ढँका होता है तो आपको क्या फ़र्क़ नज़र आता है?" इसके बाद शिक्षक 'सूरज की रोशनी', 'बादलों का छा जाना' और 'तापमान' जैसे विषयों पर बात कर सकते हैं।

इस तरह, शिक्षक विद्यार्थी की रोज़मर्रा की भाषा और देखी-समझी बातों का इस्तेमाल करते हुए उन्हें धीरे-धीरे ज़्यादा औपचारिक वैज्ञानिक अवधारणा की ओर ले जाते हैं। इस तरह की क्रियाएँ विद्यार्थियों की भागीदारी को बढ़ावा देती हैं, उनके विचारों को महत्त्व देती हैं, और अपने विचार व्यक्त करने में उनका आत्मविश्वास बढ़ाती हैं।

सोचने के लिए समय देना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। अकसर होता यह है कि शिक्षक प्रश्न पूछते हैं, और तुरन्त उत्तर पाने की उम्मीद करते हैं। ऐसा करने से केवल कुछ ही विद्यार्थी जल्दी उत्तर दे पाते हैं, और बाक़ी चुप रहते हैं।

प्रश्न पूछने के बाद कुछ क्षणों का समय देने से कक्षा में भागीदारी अधिक समावेशी हो सकती है। इससे सभी विद्यार्थियों, विशेषकर कम बोलने वालों, को अपनी गति से सोचने और उत्तर देने का अवसर मिलता है। समय के साथ, विद्यार्थी अपने विचार साझा करने, प्रश्न पूछने और चर्चाओं में भाग लेने में अधिक आत्मविश्वास महसूस करने लगते हैं।

जब सोच-समझकर प्रश्न पूछने के साथ-साथ सोचने के लिए पर्याप्त समय भी दिया जाता है तो कक्षाएँ अधिक सहयोगी, चिन्तनशील और भागीदारीपूर्ण बन जाती हैं। इस तरह के तरीक़ों से न केवल प्रतिक्रियाओं की गुणवत्ता में सुधार होता है, बल्कि यह भी सुनिश्चित होता है कि प्रत्येक विद्यार्थी को कक्षा में अपनी बात रखने का अवसर मिले।

प्रश्न और उत्तर को सार्थक बनाने के लिए कुछ उपयोगी तरीक़े

- 'क्यों' और 'कैसे' वाले प्रश्न अधिक पूछना;
- एक से ज़्यादा उत्तर देने के लिए बढ़ावा देना;

चित्र 2 : बिना संकोच के शिक्षिका से सवाल पूछती छात्रा

- उत्तर देने के पहले सोचने के लिए समय देना;
- प्रश्नों को स्थानीय अनुभवों से जोड़ना;
- विद्यार्थियों को आपस में प्रश्न पूछने के लिए बढ़ावा देना;
- विद्यार्थियों की कोशिश और जिज्ञासा की तारीफ़ करना;
- अलग-अलग भाषाओं में बातचीत करने की छूट देना;
- ऐसा माहौल बनाना जिसमें विद्यार्थी बिना डरे, खुलकर प्रश्न पूछ सकें; आदि।

विद्यार्थियों को प्रश्न बनाने के लिए प्रोत्साहित करें : एक गतिविधि

कोई कहानी, पाठ या गतिविधि पूरी होने के बाद, विद्यार्थियों को छोटे-छोटे समूहों में बाँट दें। उनसे कहें कि आज वे सिर्फ़ उत्तर देने वाले नहीं, बल्कि 'प्रश्न बनाने वाले' बनेंगे।

हर समूह को पाठ से जुड़े अलग-अलग तरह के प्रश्न तैयार करने के लिए कहें। जैसे–

- ऐसा प्रश्न जो हमें याद रखने में मदद करे;
- ऐसा प्रश्न जो हमें सोचने पर मजबूर करे;
- 'क्यों' या 'कैसे' वाला प्रश्न;
- रोज़मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ा प्रश्न;
- ऐसा प्रश्न जिसके एक से ज़्यादा उत्तर हो सकते हों; आदि।

विद्यार्थियों को आपस में चर्चा करने और प्रश्न तैयार करने के लिए समय दें।

ऐसा करने पर शिक्षक देख पाएँगे कि जो विद्यार्थी आमतौर पर चुप रहते हैं, वे अब अधिक आत्मविश्वासी और सक्रिय हो गए हैं क्योंकि अब उन्हें केवल प्रश्नों के उत्तर देने के बजाय स्वयं प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

इस गतिविधि से विद्यार्थियों को यह समझने में मदद मिलती है कि सीखना सिर्फ़ सही उत्तर देना नहीं है। सोच-समझकर प्रश्न पूछना, दूसरों की बात सुनना और अलग-अलग विचारों पर चर्चा करना भी सीखने का अहम हिस्सा है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

पूजा आर्या अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी में फ़ैकल्टी हैं। वे भारत के विभिन्न राज्यों और विभिन्न स्कूल बोर्डों में शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों और शिक्षा अधिकारियों के साथ मिलकर काम करती हैं। उनका काम भाषा शिक्षण पद्धति और शैक्षिक आकलन पर केन्द्रित है।

सम्पर्क : pooja.arya@apu.edu.in

लैंगिक भेदभाव के प्रति संवेदनशील समझ बनाना

जय शेखर

एक शिक्षक ने अपने विद्यालय के विद्यार्थियों को लिंग-आधारित भेदभाव के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए उनके साथ विषय-आधारित चुनिन्दा किताबों पर काम किया। वे जानना चाहते थे कि आज भी इस विषय पर विद्यार्थियों की सोच क्या है। वे कौन-सी प्रभावी युक्तियाँ हों कि किताबों की सहायता से उनके सोच-विचार को परिष्कृत किया जा सके, और यह भी जाना जा सके कि उनके किताब-आधारित प्रयासों का विद्यार्थियों के विचारों पर क्या और कितना असर हुआ है।

लैंगिक भेदभाव एक ऐसा मुद्दा है जिस पर हम विद्यार्थियों के बीच चर्चा नहीं करते, जबकि लिंग-आधारित भेदभाव हमारे इर्द-गिर्द हमेशा विद्यमान होता है। आज जब पीछे मुड़कर देखता हूँ तो मुझे अपनी माँ की याद आती है जिन्होंने घर के सभी कामों में मुझे शामिल किया। मेरी कोई बहन नहीं है, इसलिए दादी के साथ मैंने दीवारों पर बड़े-बड़े माँडने, गोबर के देवता और खिलौने बनाना, ऊन से कढ़ाई करना, खाना बनाना, आदि घरेलू काम सीखे। कभी-कभी इसके लिए पारिवारिक उपहास का सामना भी करना पड़ा, लेकिन मेरा मनोबल कमज़ोर नहीं हुआ क्योंकि उन कौशलों को सीखने में मेरी रुचि थी।

आज जब अपने विद्यार्थियों से बात करता हूँ तब लगता है कि लिंग-आधारित भेदभाव से जुड़ी मान्यताओं ने उन्हें दृढ़ता से जकड़ रखा है। एक ओर जब लड़के इस बात की पैरवी करते हैं कि उन्हें लड़कियों वाले काम करने नहीं आते, न ही उन्हें करने चाहिए तो दूसरी ओर लड़कियाँ भी इसी तरह की सोच ज़ाहिर करती हैं। इसलिए लाज़िमी है कि इस विषय पर उनकी समझ बनाने में मदद की जाए। उन्हें ऐसी कहानियों से परिचित कराते हुए चर्चा और संवाद का अवसर दिया जाए, जिनसे सम्भव है कि उनके विचारों में खुलापन आए और नज़रिया विस्तृत हो।

चित्र 1: परिवेश में जड़ें जमाए लैंगिक भेदभाव को प्रदर्शित करता एक पोस्टर

कहानियों के साथ अभ्यास के मुख्य उद्देश्य

1. विद्यार्थियों के बीच लिंग-आधारित असमानता / भेदभाव पर चर्चा करना और उनके विचार समझना;
2. विद्यार्थियों के साथ इस विषय से सम्बन्धित किताबें साझा करना और उन्हें सोचने, समझने एवं अपने विचारों को गढ़ने में मदद करना; और
3. किताबों के माध्यम से की गई बातचीत के उन पर हुए असर को समझना।

जिस समूह के साथ काम कर रहे हैं उसके बारे में

मेरे समूह में एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय में कक्षा 5 में अध्ययनरत 15 से 20 विद्यार्थी शामिल हैं। सभी विद्यार्थी ग्रामीण परिवेश के हैं। उनकी घर की भाषा हिन्दी या अवधी है, और माता-पिता बहुत कम पढ़े-लिखे हैं। पाठ्यपुस्तकों के अलावा किसी और प्रिंट सामग्री से उनका कोई जुड़ाव नहीं था, लेकिन पिछले कुछ समय से लगातार पुस्तकालय गतिविधियों में शामिल होने के कारण उन्होंने बहुत-सी किताबें पढ़ी हैं, और उनकी समझ व रुचि विकसित हुई है।

विस्तृत प्रक्रिया

कविता और कहानी के नियमित सत्रों ने विद्यार्थियों को किताबों से परिचित कराया, इससे उनका किताबों के प्रति लगाव बढ़ने लगा। इशू कार्ड पर अपनी पढ़ी किताबें वे ख़ुद दर्ज करते हैं।

विद्यार्थियों के समूह के साथ जेंडर असमानता पर बातचीत करने की शुरुआत को लेकर एक अदृश्य डर था। मुझे लगा कि *न आसमान गिरा न चाँद बौखलाया* कहानी से बातचीत की शुरुआत करना उपयुक्त होगा। कहानी की पात्र जमुना घर के सभी कामों में शामिल होती है, लेकिन किसी एक मान्यता के कारण उसे चॉक छूने की मनाही है। कहानी के अन्त तक वह उस मान्यता को तोड़ देती है। मैंने यह समझने की कोशिश की कि हमारे परिवेश में ऐसी और कौन-सी मान्यताएँ तथा बन्दिशें हैं जो हमारी लैंगिक पहचान के कारण बनाई गई हैं। इसके लिए विद्यार्थियों को दो समूह में बैठाकर चर्चा शुरू की। इसमें कुछ बातें सामने आईं। जैसे—लड़कियों पर कुछ ख़ास कपड़े पहनने को लेकर, लड़कों के साथ खेलने, बिना नक़ाब लगाए बाज़ार जाने, दुकान पर सौदा छूने, आदि की बन्दिशें हैं। विद्यार्थियों ने खुलकर अपनी बातें कहीं।

अगले सत्र में उनके सामने फिर नया प्रश्न रखा कि वे कौन-से काम हैं जो सिर्फ़ लड़के या लड़कियों के लिए निर्धारित हैं। विद्यार्थियों ने एक सूची बनाई। इससे यह स्पष्ट होता है कि घर के कामों में अभी भी लड़कों को शामिल नहीं किया जाता जिससे उनमें पुरुष होने की भावना धीरे-धीरे प्रबल होने लगती है। यह लैंगिक विभेद की मुख्य वजह बनती है। विद्यार्थियों ने कहा कि घर में झाड़ू लगाना, कभी-कभार बर्तन साफ़ करना, कपड़े धोना या घर में साफ़-सफ़ाई करना, आदि काम तो लड़कियों के हैं। घरेलू कामों के अलावा बाज़ार के कोई भी काम करने पर लड़कियों के लिए रोक-टोक लगी हुई है।

मैंने एक नई किताब चुनी—*गुठली तो परी है*। इस कहानी की ख़ास बात यह है कि गुठली को घूमने का शौक़ है। फूल और फलों के बीज इकट्ठे करना, साइकिल चलाना, यह सब उसे पसन्द है। इसके लिए उसे कोई रोकता-टोकता भी नहीं है, लेकिन उसका एक शौक़ और भी है। वह अपनी बहन की फ्रॉक पहनना चाहता है जिसके लिए उसके भाई-बहन और मम्मी-पापा राज़ी नहीं हैं। अब हमारी चर्चा का एक नया आयाम खुल रहा था जिसमें हम सिर्फ़ कामों पर लैंगिक असमानता की छाप नहीं, बल्कि अपने विचारों और अपनी पसन्द की चीज़ें चुनने की आज़ादी पर भी उसकी छाप ढूँढ़ने की कोशिश करने वाले थे। इसके लिए मैंने विद्यार्थियों को धीरे-धीरे किताब पढ़कर सुनाई, और समझने की कोशिश की कि उन्हें गुठली का व्यवहार कैसा लगा। क्या सच में गुठली को फ्रॉक पहननी चाहिए थी? या उसकी माँ को उसकी मदद करनी चाहिए थी? विद्यार्थियों को यही लग रहा था कि गुठली के फ्रॉक पहनने का व्यवहार ठीक नहीं है।

सिर्फ़ बातचीत करते रहने से पुस्तकालय का माहौल बहुत सक्रिय और सजीव नहीं बन पाता है, इसीलिए मैंने इसमें दो गतिविधियाँ शामिल कीं। पहली, वे विद्यार्थी जो ठीक से लिख लेते हैं, उनको कहानी में शामिल पाँच पात्रों में से किसी एक को पत्र लिखना था, वहीं जो लिखने में सहज नहीं थे, उनको गुठली के लिए किसी एक उपहार का चित्र बनाना था। इसके साथ ही, वह उपहार गुठली को क्यों देना चाहते थे, इस बारे में उन्हें एक-दो पंक्तियाँ लिखनी थीं।

विद्यार्थियों द्वारा गुठली को, उसकी माँ, उसके पिता, उसके भाई और उसकी बहन को पत्र लिखे गए।

विद्यार्थियों ने जो सोचा और लिखा—

- अयान ने गुठली के पिता को पत्र में लिखा कि उन्हें गुठली को समझाना चाहिए कि वह लड़का है और वैसा ही रहे, जबकि अरविन्द ने उन्हें आज़ादी से रहने की बातें लिखीं। मुझे समझ में आया कि विद्यार्थियों के क्या पूर्वाग्रह हैं, और सामान्यतः वे क्या सोच रहे हैं।
- अरविन्द ने पत्र की अन्तिम पंक्तियों में लिखा, "अगर आज उसे कपड़ों के लिए रोकेंगे तो कल को नई-नई पाबन्दियाँ लगाते जाएँगे, तब गुठली कभी भी आज़ादी को नहीं समझ पाएगा।"
- क्रान्ति ने गुठली की बहन को पत्र लिखकर समझाया, "अगर गुठली का सपना परी बनने का था, और तुम्हारी नई फ्रॉक पहन ली थी तब तुम्हें गुठली को डाँटना नहीं चाहिए, क्योंकि वह तुमसे छोटा था। तुम्हें समझा देना चाहिए था। मैं तुम्हारी जगह होती तो गुठली को अपने कपड़े दे देती।"
- अरुण ने साइकिल बनाई, और लिखा कि गुठली को साइकिल पर घूमना पसन्द था, इसलिए उसे उपहार में साइकिल देगा।

“ मुझे दिखा कि लड़कों और लड़कियों के खिलौनों में काफ़ी भिन्नता है। जहाँ लड़कियाँ गुड़ियों के खेल, टेडी बियर, किचन सेट, आदि से खेल रही थीं, लड़के क्रिकेट, हॉकी के अलावा रेसिंग कार, बन्दूक, आदि खिलौनों से ख़ुश थे। ”

चर्चा में शामिल विद्यार्थियों ने अपने तरीक़े से गुठली को समझा। इस गतिविधि का मुख्य उद्देश्य था कि विद्यार्थी गुठली पर अपनी समझ बना पाएँ, और ऐसे पात्र हमारी चिन्ता के विषय बनें।

गुठली की बात को आगे बढ़ाने के लिए, मैंने अब नेहा सिंह की लिखी एक नई कहानी 'प्रशांत भैया' चुनी। यह जनवरी 2025 में *प्लूटो* में प्रकाशित हुई थी।

कहानी पढ़ने से पूर्व मैंने सोचा कि इस बार विद्यार्थियों से उन खेल सामग्रियों की सूची बनवाई जाए जो वे खेलते हैं। मुझे दिखा कि लड़कों और लड़कियों के खिलौनों में काफ़ी भिन्नता है। जहाँ लड़कियाँ गुड़ियों के खेल, टेडी बियर, किचन सेट, आदि से खेल रही थीं, लड़के क्रिकेट, हॉकी के अलावा रेसिंग कार, बन्दूक, आदि खिलौनों से ख़ुश थे। प्रशांत भैया की कहानी कहीं-न-कहीं बच्चों की कहानी जैसी ही थी, क्योंकि वे भी डॉक्टर-मरीज़, टीचर-स्टूडेंट, घर-घर, आदि खेल खेलते हैं। इसी प्रकार, प्रशांत भैया को घर-घर का खेल खेलने में बहुत मज़ा आता था जो उनकी माँ को पसन्द नहीं था। माँ ने उनको कार लाकर दी जिस पर प्रशांत भैया ने फूल सजा दिए। यहाँ बात करने की काफ़ी गुंजाइश दिखी। मैंने विद्यार्थियों से प्रश्न किया कि प्रशांत भैया जो खेल 'घर-घर' खेल रहे थे, वह उनकी माँ को पसन्द क्यों नहीं आया? आप होते तो क्या सोचते? उन्होंने कार में फूल सजा दिए, क्या यह ठीक नहीं किया? विद्यार्थियों को पिछले दिनों की चर्चा के दौरान यह एहसास होने लगा था कि लैंगिक भेदभाव सतह पर भले न दिख रहा हो, पर वह गहराई के साथ मौजूद है। जब खेलों पर चर्चा हुई तो मुझे एहसास हुआ कि खेल का पक्ष भी इस विषय से अछूता नहीं रहा। कुछ विद्यार्थियों ने प्रशांत का समर्थन किया, पर कुछ अभी भी माँ के साथ थे।

'प्रशांत भैया' कहानी ने हमारी समझ की कई परतों को खोला। अभी तक मुझे भी ऐसा लगता था कि लैंगिक असमानता केवल कामकाज के स्तर पर ही है, लेकिन इस यात्रा ने मुझे समझने का मौक़ा दिया कि यह जीवन के हर एक पहलू में कहीं-न-कहीं गहराई से कार्य कर रही है। अभी तक हमने विद्यार्थियों से व्यवहार, कपड़ों, पसन्द, खेलों के इर्द-गिर्द चर्चा की, और वे इस विषय का अर्थ समझने लगे।

मुझे नेहा सिंह की एक और कहानी मिली 'सुपर हीरो आद्या' जो *साइकिल* में प्रकाशित हुई थी। कहानी में आद्या सिंगापुर के विद्यालय में पढ़ती है। वह कई स्तरों पर लैंगिक असमानता का सामना करती है, और अपने विरोध का स्वर भी मज़बूती के साथ विद्यालय में रखती है। विद्यार्थियों को आद्या के विचार, उसकी माँ की मदद और वे सभी ज़रूरी मुद्दे, जो कहानी में शामिल थे, समझ आए। अगले दिन कहानी पर चर्चा के दौरान विद्यार्थियों से उन कामों की सूची बनाने को कहा जो लड़कियों के लिए माने जाते हैं, लेकिन रोज़गार के लिए लड़कों ने अपना लिए हैं। इसी प्रकार, उन कार्यों की भी सूची बनानी थी जो लड़कियों को नहीं करने दिए जाते थे, लेकिन आज लड़कियों ने उन्हें आजीविका की तरह अपना लिया है। सूची बनने के बाद गतिविधि में रोचकता के लिए विद्यार्थियों को उन कार्यों के चित्र बनाने का

चित्र 2 : लैंगिक आधार पर कामों का विभाजन देखकर ही विद्यार्थी भी अपना मत बनाते हैं, चित्र में उसका प्रदर्शन

भी मौक़ा दिया। (चित्र 1) चित्र बनाते समय विद्यार्थी बहुत कुछ बना व कह रहे होते हैं। जब उनसे पूछा कि लड़कों को किस काम को करने के लिए रोका जाता है। मुख़्तार ने जवाब दिया कि लड़कों को रोका नहीं जाता, बल्कि उन्हें चिढ़ाते हैं कि 'यह मेहरा है'। हम लोगों ने कुछ टैगलाइन बनाईं। उनमें लिखा कि 'लड़के चिढ़ाए जाते हैं जब वे आटे से खेलते हैं' आदि, और 'लड़कियाँ रोकी जाती हैं जब वे सपने देखती हैं' आदि।

> **"आवाज़ के उतार-चढ़ाव और हल्के संगीत के साथ प्रस्तुत यह कहानी विद्यार्थियों को काफ़ी अच्छी लगी। कहानी का नाम है मितवा। इस कहानी को चुनने का उद्देश्य इस धारणा को तोड़ना था कि कुछ काम लड़कियाँ कर ही नहीं सकतीं।"**

अगले सत्र में कक्षा को दो समूहों में बाँटा गया। विषय रखा गया कि एक समूह अपने पिता द्वारा, उनके व्यवसाय के अतिरिक्त, दिन भर किए गए कार्यों की सूची बनाएगा, और दूसरा समूह अपनी माँ के कार्यों की सूची बनाएगा। फिर सभी उनके चित्र भी बनाएँगे। इस गतिविधि से यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि बड़े हो जाने पर भी जेंडर-आधारित कार्य के बँटवारे बने हुए हैं अथवा नहीं। हमें ज्ञात हुआ कि कुछ सामान्य कार्यों के अलावा शोएब की माँ बकरी चराने भी जाती हैं, मुख़्तार की माँ मछली काटती और पकाती हैं, और किसी की माँ तो दूसरों के घरों में बर्तन, झाड़ू, साफ़-सफ़ाई के काम भी करती हैं। बच्चों को पालने के अलावा किसी की माँ लकड़ी बीनकर भी ला रही थी जिसे उन्होंने चित्र में भी प्रदर्शित किया।

> पिछले दिनों की बातचीत से विद्यार्थियों की समझ अभी इस स्तर पर पहुँची है कि जिस लैंगिक असमानता को वे समझ रहे हैं और महसूस कर रहे हैं, वह काम के बँटवारे को लेकर है, और शायद बड़े होने पर यह बँटवारा धूमिल हो जाएगा। इस बात की पूरी गुंजाइश है कि धीरे-धीरे वे इस बात को भी समझेंगे कि बड़े होने पर भी यह असमानता किस तरह मौजूद रहती है।

यह चर्चा और गतिविधि बेहद उत्साहजनक रही। इस दौरान विद्यार्थियों ने स्वयं यह प्रश्न खड़ा किया कि बड़े होने पर तो सारे काम हमें करने पड़ते हैं तो बच्चों को ही क्यों रोका-टोका जाता है कुछ विशेष कामों के लिए? विद्यार्थियों के कामों का डिस्प्ले पोस्टर बनाना बहुत रोमांचक रहा।

पिछली सभी कहानियों का परिचय रीड अलाउड के माध्यम से हुआ। इस बार एक नई कहानी की ऑडियो प्रस्तुति कक्षा में की। आवाज़ के उतार-चढ़ाव और हल्के संगीत के साथ प्रस्तुत यह कहानी विद्यार्थियों को काफ़ी अच्छी लगी। कहानी का नाम है *मितवा।* इस कहानी को चुनने का उद्देश्य इस धारणा को तोड़ना था कि कुछ काम लड़कियाँ कर ही नहीं सकतीं।

कहानी को बार-बार सुनते वक़्त उन पंक्तियों को ढूँढ़ा जिनमें जेंडर-आधारित असमानता की कोई बात महसूस होती। हमें ऐसे 10 वाक्य मिले।

इसके साथ ही हमने मितवा के चित्र भी बनाए। चित्रों में मितवा का पूरा परिवार खेत पर काम करता हुआ दिखा। किसी चित्र में मितवा साइकिल और ट्रैक्टर चलाते हुए भी दिखाई पड़ी। यदि हमने इतने दिनों तक इस विषय पर चर्चा नहीं की होती तो चित्रों में ये बातें नहीं आतीं।

इस प्रक्रिया से हासिल परिणामों की कुछ महत्त्वपूर्ण बातें

1. **सोच को बदलते देखा** : मैंने देखा कि किताबों के साथ गुज़रते वही विद्यार्थी, जो शुरुआती दौर में *गुठली तो परी है* कहानी के दौरान माता-पिता के साथ थे, 'प्रशांत भैया' वाली कहानी तक पहुँचकर गुठली के साथ हो गए।
2. **जीवन में उतरते दिखे नए विचार** : जो नए विचार गढ़े गए वे जीवन में भी उतरते हुए दिखाई देने लगे। जैसे कि मुख़्तार के घर में शादी थी। उसने अपनी हथेली में मेहँदी

चित्र 3 : खेती के काम में बराबरी की भागीदारी दिखाता एक चित्र

की डिज़ाइन बनाई और अपने मित्रों के नाम लिखे। विद्यालय आने पर किसी ने भी उसे विशेष रूप से चिढ़ाया नहीं।

3. **मिलजुलकर काम करने की भावना का विकास** : कविता के पोस्टर बनाते समय पहले लड़के और लड़कियाँ मिलकर कोई काम नहीं करते थे, लेकिन इस बार टीम में लड़के और लड़कियों ने बिना किसी संकोच के मिलकर अपने काम सहजता से पूरे किए।

4. **नई समझ की तरफ़ बढ़ना** : मैं हिन्दी से अँग्रेज़ी और संस्कृत में अनुवाद पढ़ा रहा था। उस दौरान बोर्ड पर जब सीता लिखा तो एक विद्यार्थी ने वाक्य पूरा करते हुए कहा, "सर, सीता पढ़ रही है!" जबकि एक अन्य लड़की ने जब वही घिसा-पिटा वाक्य बोला कि सीता खाना पकाती है, कक्षा में ही स्वर उठे कि यहाँ भी सीता खाना ही पकाती रहेगी क्या। उसे पढ़ने दो, मितवा की तरह!

5. **कक्षा की बैठक व्यवस्था** : पहले कक्षा में लड़कियाँ एक तरफ़ और लड़के दूसरी तरफ़ बैठते थे, लेकिन अब वे किसी भी अवसर पर एक साथ बिना संकोच के बैठ जाते हैं।

पुस्तकालय की अहमियत

जेंडर असमानता जैसे गम्भीर मुद्दों पर ठोस चर्चा करने के लिए सन्दर्भ-उपयुक्त कहानी और किताबें सबसे ज़्यादा मददगार होती हैं। यदि हमारे पुस्तकालय में इन विषयों पर किताबें उपलब्ध हों, तब यह काम काफ़ी आसानी से होने लगता है। उक्त विषय पर 20 से 25 सत्र करने पर मैंने पुस्तकालय गतिविधियों में विविधता पर भी विशेष ध्यान दिया। इससे विद्यार्थियों की रुचि बनी रही, और उन्हें अपनी बातें खुलकर कहने का मौक़ा मिला। इस प्रकार, पुस्तकालय समूह चर्चा करने, एक दूसरे के विचारों को सुनने-समझने, और अपने विचारों को आकार देने का भी अवसर देता है। शिक्षक के तौर पर मैंने यह महसूस किया कि किसी भी जटिल विषय पर विद्यार्थियों के बीच समझ बनाने में उनकी बातों को धैर्यपूर्वक सुनना बहुत ही ज़रूरी है। साथ ही, उनको सोचने और समझने का पूरा अवसर मिलना चाहिए। शिक्षकों को अपने विचार विद्यार्थियों पर थोपने नहीं चाहिए, अपितु उन्हें धीरे-धीरे ख़ुद के विचार बनाने का मौक़ा देना चाहिए। शिक्षक जितनी संवेदनशीलता और निष्पक्षता से किसी बात को विद्यार्थियों के बीच लेकर जाते हैं, उतनी ही स्पष्टता से वे अपने विचार बनाते हैं।

> **“ विद्यार्थी ने वाक्य पूरा करते हुए कहा, “सर, सीता पढ़ रही है!” जबकि एक अन्य लड़की ने जब वही घिसा-पिटा वाक्य बोला कि सीता खाना पकाती है, कक्षा में ही स्वर उठे कि यहाँ भी सीता खाना ही पकाती रहेगी क्या। उसे पढ़ने दो, मितवा की तरह ! ”**

जय शेखर कम्पोज़िट विद्यालय धर्मपुर, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश में शिक्षक हैं। उन्हें उत्कृष्ट शैक्षिक कार्यों के लिए कई सरकारी व प्रतिष्ठित स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत और सम्मानित किया गया है। वे एससीईआरटी उत्तर प्रदेश द्वारा विकसित पाठ्यपुस्तकों के लेखन मण्डल में शामिल रहे हैं।

सम्पर्क : jaishekhar21@gmail.com

सीखने में रोचकता और उत्साह लाती है खोजबीन विधि

मुकेश चंद शर्मा

विद्यार्थियों के सीखने की प्रकृति उनके परिवेश के साथ अन्त:क्रिया पर आधारित होती है। जब उन्हें अपने आस-पास की दुनिया को देखने, प्रश्न पूछने, खोजबीन करने, जानकारी एकत्र करने, उसका विश्लेषण करने तथा उसे प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है तब वे सक्रिय, जिज्ञासु और सहभागी बनते हैं। यह लेख खोजबीन विधि के ऐसे ही अनुभवों को सामने लाता है।

खोजबीन विधि कैसे काम करती है, और सीखने में कितनी प्रभावी है? यह जानने के लिए मैंने कक्षा 5 के पर्यावरण अध्ययन विषय के पाठ 2, 'पशु-पक्षी हमारे साथी' के आधार पर एक विद्यालय में काम करना तय किया। इस परियोजना में कक्षा 4 और 5 के विद्यार्थियों को शामिल किया गया। उन्होंने उत्साहपूर्वक भाग लिया, परिवेश से जानकारियाँ एकत्र कीं, सामग्री बनाई, अवलोकन किए, अनुभव लिखे और अन्ततः, इन सभी कार्यों का समेकन एक बाल शोध मेले के रूप में किया।

मैंने विषय से जुड़े कुछ लक्ष्यों को आधार बनाया। जैसे–विद्यार्थी अपने आस-पास के प्राकृतिक तथा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश की खोज करते हैं और उससे जुड़ते हैं; वे पर्यावरण में पारस्परिक निर्भरता को अवलोकन व अनुभवों के माध्यम से समझते हैं; आदि। परियोजना में इस बात का भी ध्यान रखा कि विद्यार्थियों को अपने पूर्व ज्ञान और प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से सीखने के अवसर प्राप्त हों।

पाठ को बरतने के लिए अधिगम प्रतिफल

अधिगम प्रतिफल	विद्यार्थियों से अपेक्षित कार्य
परिवेश में पाए जाने वाले जीव-जन्तुओं को पहचानना	जीव-जन्तुओं की सामान्य विशेषताओं के आधार पर उनकी पहचान करना
जीव-जन्तुओं का वर्गीकरण करना	रंग-रूप, रहने के स्थान, भोजन और अन्य विशेषताओं के आधार पर समूह बनाना
अवलोकन और जानकारी को दर्ज करना	भ्रमण के दौरान वस्तुओं, गतिविधियों और स्थानों का अवलोकन कर जानकारी दर्ज करना तथा पैटर्न पहचानना
जीव-जन्तुओं और मानव जीवन के बीच सम्बन्ध समझना	आस-पास पाए जाने वाले जीव-जन्तुओं की मानव जीवन में उपयोगिता और उनके साथ सम्बन्ध को समझना

> “ परियोजना में इस बात का भी ध्यान रखा कि विद्यार्थियों को अपने पूर्व ज्ञान और प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से सीखने के अवसर प्राप्त हों। ”

खोजने और सीखने की यात्रा

1. पशु–पक्षियों पर प्रारम्भिक बातचीत और जानकारी जुटाना

शिक्षण प्रक्रिया की शुरुआत विद्यार्थियों के साथ पशु-पक्षियों पर खुली बातचीत से हुई। उनसे पूछा गया कि उनके आस-पास कौन-कौन से पशु-पक्षी दिखाई देते हैं, और वे उनके बारे में क्या जानते हैं? उन्हें अपने अनुभवी बड़े-बुज़ुर्गों से 6-7 पक्षियों के नाम, उनकी विशेषताओं तथा पर्यावरण में उनकी भूमिका के बारे में जानकारी जुटाने को कहा गया। अधिकांश विद्यार्थी पक्षियों के नाम और उनकी विशेषताओं के बारे में जानकारी लेकर आए, लेकिन पर्यावरण में उनकी भूमिका को वे स्पष्ट रूप से नहीं समझ पाए। विद्यार्थियों ने केवल यह जाना कि पक्षी कीड़ों को खाते हैं। उदाहरण के लिए, मंजरी ने लिखा कि बतख नदी में कीड़े खाती है, और पपीहा बरसात में ऊँचा मुँह करके बूँदों का पानी पीता है। अधिकांश विद्यार्थी इससे सहमत दिखे, क्योंकि उन्होंने यह सुन रखा था। जब उनसे पूछा गया, “तब साल के बाक़ी समय वह पानी के बिना कैसे रहता होगा?” इस प्रश्न ने विद्यार्थियों को सोचने पर मजबूर किया। फिर उन्हें बताया गया कि यह महज़ एक लोकमान्यता है। वास्तव में, पपीहा भी अन्य पक्षियों की तरह ही पानी पीता है। विद्यार्थियों को इस जानकारी का अवलोकन करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

2. परिचित पशु–पक्षियों की सूची और वर्गीकरण

अगले चरण में विद्यार्थियों से उनके परिचित पशु-पक्षियों की सूची बनवाई गई। चर्चा से सामने आया कि इन जीव-जन्तुओं को अलग-अलग समूहों में बाँटा जा सकता है। किशन ने कहा कि जानवरों को माँस खाने वाले और पेड़-पौधों पर निर्भर

चित्र 1: पक्षियों के आवास का अवलोकन और सर्वेक्षण करते विद्यार्थी

जानवरों के रूप में देख सकते हैं। सार्थक ने जंगली और पालतू जानवरों के आधार पर बाँटने की बात कही। विद्यार्थियों ने ऐसे कई आधार सुझाए। इन अवलोकनों को एक सारणी में रखा गया। इसके लिए वर्गीकरण सम्बन्धी कार्यपत्रक (वर्कशीट) की मदद ली गई।

विद्यार्थियों के अनुभव	अनुभवों के आधार
शाकाहारी और माँसाहारी	भोजन के आधार पर
जंगली और पालतू	रहने के आधार पर
जल, स्थल या पेड़ों पर / जल और स्थल, दोनों में रहने वाले	रहने के स्थान के आधार पर
उड़ने वाले और न उड़ने वाले	चलने-फिरने के आधार पर
अकेले, जोड़े में या समूह में रहने वाले	रहने के तरीक़े के आधार पर

विद्यार्थियों ने रहने के स्थान के आधार पर अधिकांश जीवों का सही वर्गीकरण किया, जबकि भोजन के आधार पर वर्गीकरण करते समय कुछ जीव एक से अधिक समूहों में रखने पड़े। उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों ने छिपकली को शिकार करने वाले तथा कीड़े खाने वाले दो समूहों में रखा। मंजरी और सताक्षी ने प्रश्न किया, "क्या कोई जीव एक से अधिक समूह में रखा जा सकता है?" अंबिका ने बताया कि उसने बल्ब के पास छिपकली को देखा है, क्योंकि वहाँ उसे कीड़े मिल जाते हैं। इस पर मंजरी ने कहा कि कीड़े उसे आसानी से नहीं मिलते, बल्कि उन्हें वह चकमा देकर पकड़ती है। यह शिकार करना भी हुआ। शेर, भेड़िए और कुत्ते को मृत जीव खाने वाले तथा शिकार करने वाले दो समूहों में रखा गया।

एक समूह ने चींटी को 'मृत जीव खाने वाले' जीवों में रखा, जबकि किसी भी समूह ने गिद्ध और कौवे का नाम सूची में नहीं लिखा।

वर्गीकरण में दिए गए तर्कों पर चर्चा की गई। अनुभवों के आधार पर विद्यार्थियों ने बताया कि चील, बाज़ और उल्लू को अकेले रहने वाले वर्ग में रखना चाहिए, वहीं कबूतर, भेड़ और बकरी जैसे जीवों को समूह में रहने वाले वर्ग में। हालाँकि, जोड़े और समूह में रहने वाले जीवों के बीच स्पष्ट अन्तर करना चुनौतीपूर्ण था। इस चर्चा ने यह समझने का मौक़ा दिया कि किसी जीव का व्यवहार परिस्थितियों के अनुसार बदल भी सकता है। यह गतिविधि विद्यार्थियों के लिए अवलोकन, तुलना, वर्गीकरण, तर्क प्रस्तुत करने तथा अपने अनुभवों के आधार पर निष्कर्ष निकालने में मददगार हुई।

3. प्रकृति भ्रमण कर पक्षियों का अवलोकन

विद्यार्थियों को बताया गया कि वे पक्षियों को ध्यान से देखने के लिए प्रकृति भ्रमण पर जाएँगे। यह सुनकर वे उत्साहित हुए। चर्चा की गई कि उन्हें किन बातों का अवलोकन करना है, और क्या सावधानी रखनी है। छोटे समूह में उन्होंने 10-11 प्रकार के पक्षियों का अवलोकन किया। उन्होंने पक्षियों के नाम, रंग, आकार, चोंच, पंजे, आवाज़, व्यवहार तथा उनके रहने के तरीक़ों पर जानकारियाँ दर्ज कीं।

इस दौरान विद्यार्थियों ने दर्जिन चिड़िया (टेलरबर्ड) और फ़ाख़्ता (डव) जैसे पक्षियों के बारे में भी जाना। गाँव से कुछ लोग भी इस

गतिविधि में शामिल हुए। विद्यार्थियों से चर्चा की गई कि उन्होंने क्या देखा, क्या नया जाना, और यह अनुभव उन्हें कैसा लगा। कुछ ने बताया कि वे पक्षियों को तो रोज़ देखते थे, लेकिन इतने ध्यान से कभी नहीं देखा।

> **सार्थक ने लिखा—"मुझे तोते को पिंजरे में क़ैद करके रखना अच्छा नहीं लगता। मुझे आज़ादी से उड़ते तोते अच्छे लगते हैं।**

अवलोकन प्रपत्र : एक नमूना

पक्षी का नाम	कहाँ देखा (पेड़, ज़मीन, पानी, उड़ते हुए)	विवरण (आकार, रंग, चोंच, पंजे, आवाज़, व्यवहार)	संख्या (अकेले, जोड़े में, झुण्ड में)
घरेलू गौरैया (हाउस स्पैरो)	दिनांक 23.01.2026 दोपहर में अपने विद्यालय के बरामदे में लगे पंखे पर बने घोंसले के पास	आकार 15 सेमी / नर / सिर का रंग सलेटी, पेट और पूँछ सफ़ेद / सलेटी, चोंच छोटी व्यवहार : उचकना, लगातार फुदकना, चहचहाना / आवाज़: चिरप चिरप चिर्र चीं-चीं	अकेले / कभी-कभी 2-3-4 के झुण्ड में

4. पक्षियों के बारे में लिखना

विद्यार्थियों ने लिखकर लाए गए अनुभवों को कक्षा में सुनाया।

सुज्योति ने लिखा—"आज हम दो-दो के समूह में प्रकृति भ्रमण के लिए विद्यालय से पूरे गाँव तक गए। जितने पक्षी देखे या याद आए, उनके नाम लिखे। अपने शिक्षक से दर्जिन चिड़िया के बारे में जाना। उसे अँग्रेज़ी में टेलरबर्ड कहते हैं। हमने बहुत मज़े किए, मैं बहुत ख़ुश हूँ।"

प्रत्येक विद्यार्थी ने किसी एक परिचित पक्षी के बारे में विस्तार से बताया। पक्षियों के अवलोकन पर समझ बढ़ाने के लिए एनसीईआरटी की पुरानी पाठ्यपुस्तक *रिमझिम* के अध्याय 13 में 'हुदहुद' का पाठ दिया गया है। इसकी शुरुआत 'हुदहुद को कलगी कैसे मिली' शीर्षक से होती है। कहानी हुदहुद पक्षी की विशेषताओं, उसके रहन-सहन तथा व्यवहार के बारे में रोचकता से बताती है। इससे विद्यार्थियों को यह समझने में मदद मिली कि किसी पक्षी के बारे में विस्तार से कैसे लिखा जा सकता है।

सार्थक ने लिखा—"तोता हरा दिखता है। उसकी चोंच लाल रंग की होती है। टाँय-टाँय करता है। गले में लाल धारी होती है। तोते झुण्ड में रहते हैं। लोग इन्हें पालते भी हैं। मुझे तोते को पिंजरे में क़ैद करके रखना अच्छा नहीं लगता। मुझे आज़ादी से उड़ते तोते अच्छे लगते हैं। तोते की चोंच छोटी और उसके दो पंख होते हैं। तोती अण्डे देती है।"

भागवंती ने लिखा—"मोर के सिर पर एक तुरी जैसी बनी होती है। उसकी दो आँखें और दो पंजे होते हैं। गर्दन नीली होती है, जिस कारण इसे नीलकण्ठ कहा जाता है। मन करता है इसकी मीठी आवाज़ सुनते ही रहो। इसके पंख हरे, नीले और पीले होते हैं। मोर बारिश में नाचता है।"

चित्र 2 : एक परिवार में पशुओं की गणना सम्बन्धी बातचीत करते विद्यार्थी

चर्चा में पक्षियों के संरक्षण और उनके लिए सुरक्षित वातावरण की चिन्ता भी दिखाई दी। सुज्योति ने बताया, "गर्मियों में पक्षियों के लिए गाँव में परिण्डे लगाते हैं। विद्यालय में भी परिण्डा लगा सकते हैं, लेकिन यहाँ कोई बड़ा पेड़ ही नहीं है। गाँव में जहाँ बड़े पेड़ हैं वहाँ पक्षी ज़्यादा रहते हैं। इसलिए हमको पेड़ भी लगाने चाहिए।"

> **सर्वेक्षण गतिविधि विद्यार्थियों में प्रश्न निर्माण, संवाद कौशल, सहयोग, आँकड़े एकत्र करने और सामाजिक सहभागिता जैसे कौशलों के विकास का प्रभावी माध्यम बनी।**

5. बड़े–बुज़ुर्गों से पक्षियों की जानकारी जुटाना

विद्यार्थियों के साथ चर्चा की गई कि यदि बड़े-बुज़ुर्गों से पक्षियों के बारे में जानकारी लेनी हो तो वे कौन-कौन से प्रश्न पूछ सकते हैं। विद्यार्थियों ने कई प्रश्न सुझाए। भावना ने एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न जोड़ा, "अब कौन-कौन से पक्षी कम हो गए हैं?" चर्चा के बाद दो और प्रश्न सामने आए–

- 15-20 साल पहले कौन-कौन से पक्षी दिखाई देते थे?
- यदि उनमें कमी आई है तो उसके क्या कारण हैं?

किशन ने अपने पिता से मिली जानकारी के आधार पर बताया, "पहले गिद्ध काफ़ी दिखाई देते थे और कौवे भी अधिक थे, लेकिन अब गिद्ध तो दिखाई ही नहीं देते।" विद्यार्थियों ने पेड़-पौधों की कमी और शिकार को इसका कारण बताया। यहाँ उनका ध्यान रासायनिक खाद और कीटनाशकों के उपयोग के गिद्धों पर पड़ने वाले प्रभाव की ओर दिलाया, और कहा गया कि इसकी जानकारी वे आगे जुटाएँ। इस तरह के अभ्यास ने विद्यार्थियों को पर्यावरणीय बदलावों को समझने का अवसर दिया।

6. गाँव के पशुओं का सर्वेक्षण

पक्षियों के बाद विद्यार्थियों को गाँव के पशुओं की जानकारी जुटाने का प्रस्ताव दिया गया। सब सहर्ष तैयार हो गए। पहले उनसे गाँव में मौजूद पशुओं के बारे में बातचीत हुई। विद्यार्थी पशुओं के नाम तो बता पाए, लेकिन संख्या और अन्य बातों के बारे में उनकी जानकारी सीमित थी। बातचीत को आगे बढ़ाते हुए कुछ प्रश्न पूछे गए–

- गाँव में लगभग कितने पशु होंगे?
- किस घर में कौन-कौन से पशु होंगे?
- पशुओं को पालने के लाभ क्या हैं?

इन प्रश्नों पर विद्यार्थियों ने अपने अनुमान साझा किए। यह महसूस हुआ कि वास्तविक और सटीक जानकारी एकत्र करने की ज़रूरत है। जानकारी जुटाने के लिए विद्यार्थियों ने सुझाव दिए, और चर्चा कर ज़रूरी प्रश्न बनाए। प्रश्नों के आधार पर एक सर्वे प्रपत्र बनाया गया।

जानकारी के लिए सर्वे प्रपत्र

- व्यक्ति का नाम
- क्या पशु पालते हैं?
- पशुओं के नाम
- पशुओं की संख्या
- उन्हें क्या खिलाया जाता है?
- उन्हें कहाँ रखा जाता है?
- उन्हें पालने का उद्देश्य क्या है?

प्रत्येक समूह को एक सर्वे सारणी दी गई। प्रश्न पूछने और जवाब दर्ज करने की ज़िम्मेदारी तय की गई। गलियों के आधार पर प्रत्येक समूह को क्षेत्र आवंटित किए। दो समूहों में शिक्षक भी शामिल रहे। तय किया गया कि किसी से जानकारी लेने से पहले उसकी सहमति ली जाएगी। शुरुआत में कुछ विद्यार्थियों में झिझक थी, लेकिन धीरे-धीरे वे सहजता से बातचीत करने लगे।

लोगों से जानकारी एकत्र करने के दौरान विद्यार्थियों ने उन्हें सर्वेक्षण का उद्देश्य बताया। विद्यालय लौटकर उन्होंने प्राप्त आँकड़ों के आधार पर चार्ट तैयार किए। सर्वेक्षण गतिविधि विद्यार्थियों में प्रश्न निर्माण, संवाद कौशल, सहयोग, आँकड़े एकत्र करने और सामाजिक सहभागिता जैसे कौशलों के विकास का प्रभावी माध्यम बनी।

आँकड़ों के आधार पर बना चार्ट (एक नमूना)

समूह : मंजरी / किशन, कक्षा 4 और 5

व्यक्ति का नाम	क्या पशु पालते हैं?	पशुओं के नाम	पशुओं की संख्या	उन्हें क्या खिलाया जाता है?	उन्हें कहाँ रखा जाता है?	उन्हें पालने का उद्देश्य क्या है?
साहिरी दादी	हाँ	भैंस गाय पाड़ी	3 2 2	चारा बाट	बाड़े में	दूध के लिए
सुरेश	हाँ	भैंस बछड़ा बकरी	3 3 2	चारा बाट	बाड़े में	दूध के लिए; खाद के लिए; बेचने के लिए
आसाराम	हाँ	भैंस गाय बकरी	2 2 5	चारा बाट पेड़ के पत्ते	बाड़े में	दूध के लिए; व्यवसाय के लिए; खाद के लिए

7. बाल शोध मेले में अर्जित ज्ञान की प्रस्तुति

विद्यार्थियों द्वारा किए गए कार्य तथा एकत्र की गई जानकारियों को चार्टों पर व्यवस्थित रूप से प्रदर्शित किया गया। इस पूरी सहभागी प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थी उत्साहित तथा सक्रिय दिखे। शिक्षकों और विद्यार्थियों ने इस नवाचार को अभिभावकों तथा पंचायत के अन्य शिक्षकों के साथ साझा करने के उद्देश्य से पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (पीईईओ) से चर्चा की। इस तरह बाल शोध मेला आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

विद्यार्थियों ने विभिन्न गतिविधियों और इनसे प्राप्त निष्कर्षों को स्पष्ट रूप से लिखा। इनके प्रस्तुतीकरण की ज़िम्मेदारी आपस में तय कर ली। उनके द्वारा बाल शोध मेले में अपने अनुभव, सर्वेक्षण, अवलोकन और निष्कर्षों को आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत किया गया। बाल शोध मेला केवल एक प्रदर्शनी नहीं थी, बल्कि विद्यार्थियों की खोज, समझ, सहयोग और सीखने की पूरी यात्रा को साझा करने का मंच था। उनके चेहरों पर इसका आत्मविश्वास स्पष्ट देखा जा सकता था।

'पशु-पक्षी हमारे साथी' पाठ पर आधारित इस शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से यह अनुभव हुआ कि पर्यावरण अध्ययन विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, संवेदनशीलता और विविध जीवन कौशल विकसित करने का एक प्रभावी माध्यम है।

मुकेश चंद शर्मा लगभग 15 साल से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में काम कर रहे हैं। वे राजस्थान के टोंक में कार्यरत हैं। मुकेश को भाषा और पर्यावरण अध्ययन के मुद्दों पर विद्यार्थियों के साथ नवाचार करना पसन्द है।

सम्पर्क : mukesh.sharma@azimpremjifoundation.org

"खोजबीन-आधारित सीखने में विद्यार्थी अपने आस-पास की प्राकृतिक दुनिया का अन्वेषण करते हुए स्वयं पैटर्न और सम्बन्धों को खोजते हैं; शिक्षक इन खोजों को आगे व्यवस्थित ज्ञान और वैज्ञानिक अवधारणाओं में जोड़ता है।"

National Curriculum Framework for School Education (NCF-SE 2023), ch. 4, sec. 4.6.1.2

कक्षा प्रबन्धन के लिए तीन रणनीतियाँ

शताब्दी सैकिया

विद्यार्थियों के सीखने के स्तर और पृष्ठभूमियों में विविधता की वजह से अकसर कक्षा प्रबन्धन चुनौतीपूर्ण बन जाता है। एक टीचर एजुकेटर ने अमरीकी शिक्षाविद् ली कैंटर के प्रभावी कक्षा प्रबन्धन सूत्र का अध्ययन किया, और इन्हें अपनी कक्षा में आज़माने के प्रयास किए। इन तरीक़ों से उन्हें अपने तथा विद्यार्थियों के व्यवहार का प्रबन्धन करने और कक्षा में सीखने का सकारात्मक वातावरण बनाए रखने में मदद मिली।

किसी विद्यालय और वहाँ के विद्यार्थियों के साथ इतनी निकटता से काम करने का यह मेरा पहला अनुभव है। ज़्यादातर मैं विद्यार्थियों की ज़रूरतों के अनुसार विभिन्न गतिविधियों में उन्हें शामिल करती हूँ। यहाँ विद्यार्थियों के सीखने का स्तर अलग-अलग है, और वे विभिन्न पृष्ठभूमियों से आते हैं। इसकी वजह से अकसर अव्यवस्था की हालत बन जाती है, क्योंकि सभी विद्यार्थी एक साथ गतिविधियों में भाग नहीं ले पाते हैं। ऐसे चुनौतीपूर्ण हालात में प्रभावी कक्षा प्रबन्धन ही वह मुख्य और बुनियादी आधार बन जाता है जिसके माध्यम से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अन्य सभी महत्त्वपूर्ण पहलुओं को सुव्यवस्थित और अनुशासित किया जा सकता है।

इन चुनौतियों का समाधान खोजने के दौरान, मैंने कक्षा प्रबन्धन के विश्व प्रसिद्ध विशेषज्ञ ली कैंटर (Lee Canter) का बिहेवियर मैनेजमेंट साइकिल (व्यवहार प्रबन्धन चक्र) पढ़ा। इस चक्र के तीन चरण हैं : स्पष्ट निर्देश देना, विद्यार्थियों को सकारात्मक रूप से सुदृढ़ करने के लिए व्यावहारिक वर्णन का उपयोग करना, और सुधारात्मक क़दम उठाना।

सुझाई गई रणनीतियाँ

इस पूरे चक्र के बारे में एक बात बहुत अच्छी लगी कि यह पूरी प्रक्रिया बहुत व्यवस्थित और व्यावहारिक है। इसमें विद्यार्थियों को दोष नहीं दिया जाता। इसके बजाय, यह शिक्षक को इस बात पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है कि निर्देश कैसे दिए जाते हैं, इन निर्देशों के माध्यम से वे अन्य विद्यार्थियों को कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं, और ग़लतियों को बलपूर्वक के बजाय इच्छापूर्वक कैसे सुधारा जा सकता है। यहाँ बताना चाहती हूँ कि

चित्र 1: निर्देशों का पालन करने के बाद स्टार पाने से ख़ुश विद्यार्थी

मैंने इस चक्र में सुझाई गई रणनीतियों को अपनी कक्षा में कैसे लागू किया, और इससे मुझे तथा मेरे विद्यार्थियों, दोनों को किस तरह से लाभ हुआ।

1. स्पष्ट निर्देश देना

पहले, मैं अकसर विद्यार्थियों से कहती थी–"अपना काम शुरू करो"; "ध्यान दो"; "शान्त रहो", आदि। लेकिन ली कैंटर को पढ़ने के बाद मुझे एहसास हुआ कि ये निर्देश अस्पष्ट थे। इन पर विद्यार्थी आमतौर पर ध्यान नहीं देते थे। इसलिए अपने निर्देश देने के तरीक़े को बदल दिया। "अपना काम शुरू करो" कहने के बजाय कहना शुरू किया, "अपनी नोटबुक निकालो, आज की तारीख़ लिखो। जब तक हम अपना काम समाप्त न कर लें तब तक बात नहीं करेंगे, नहीं तो इसमें ज़रूरत से ज़्यादा समय लग जाएगा।" जब मैंने अपनी कक्षा में स्पष्ट निर्देश देने शुरू किए तो देखा कि इससे अनावश्यक भ्रम और अफ़रा-तफ़री कम हो गई। विद्यार्थी अपने काम में भली-भाँति जुटने लगे, क्योंकि वे समझ गए थे कि उन्हें क्या करना है। यह सोचने के बजाय कि कहाँ से शुरू करें, उन्होंने तुरन्त काम करना शुरू कर दिया। वे समझ गए थे कि कार्य में देरी करने से गतिविधि में अधिक समय लगेगा, इसलिए शान्त रहकर काम करने के लिए प्रोत्साहित हुए।

2. विद्यार्थियों को सकारात्मक रूप से प्रोत्साहित करने के लिए व्यवहार सम्बन्धी वर्णन का उपयोग करना

पहले, पढ़ाते समय, मेरा ध्यान उन विद्यार्थियों पर जाता था जो बातें करते रहते थे, कक्षा की गतिविधियों में भाग नहीं लेते थे, और कभी-कभी दूसरे विद्यार्थियों को भी भाग नहीं लेने देते थे। मेरी सारी ताक़त उन्हें सुधारने में लगी रहती थी। लेकिन धीरे-धीरे ख़ुद को बदलना शुरू किया। मुझे लगा कि उन्हें जितना सुधारने की कोशिश करती थी, वे उतने ही अलग-थलग होते जा रहे थे। इससे एक नकारात्मक वातावरण बन रहा था। यह भी महसूस हुआ कि मेरा लहज़ा मददगार या उत्साहवर्धक होने के बजाय अधिक सुधारात्मक हो जाता था।

> **“ पहले मैं अकसर विद्यार्थियों से कहती थी– “अपना काम शुरू करो”; “ध्यान दो”; “शान्त रहो”, आदि। लेकिन ली कैंटर को पढ़ने के बाद मुझे एहसास हुआ कि ये निर्देश अस्पष्ट थे। इन पर विद्यार्थी आमतौर पर ध्यान नहीं देते थे। ”**

इसलिए मैंने 'व्यवहार सम्बन्धी वर्णन' के बारे में पढ़ा, और विद्यार्थियों से यह पूछने के बजाय, कि आप बातें क्यों कर रहे हैं? या कृपया बात मत कीजिए, मैंने कहना शुरू किया, "मैं देख रही हूँ कि रिया ने पहले ही लिखना शुरू कर दिया है", या "देख रही हूँ कि राहुल शान्ति से बैठकर काम कर रहा है"। समय के साथ, देखा कि जितना अधिक मैंने सकारात्मक व्यवहारों का 'वर्णन' करना शुरू किया, विद्यार्थी भाग लेने के लिए उतने ही ज़्यादा प्रोत्साहित हुए। मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि जब मैं ज़ोर से किसी विद्यार्थी द्वारा किए जा रहे कार्यों का वर्णन करती हूँ तब दूसरों को भी लगता है कि उनके बारे में बताया जाए, और उनकी ओर सबका ध्यान जाए। यह बात उन्हें अपना काम शुरू करने और उसे पूरा करने के लिए प्रेरित करती है। यह तरीक़ा काफ़ी सरल था, और इसे लम्बे समय तक अपनाया जा सकता था। यह तरीक़ा बहुत प्रभावशाली रहा।

चित्र 2 : विद्यार्थियों के सकारात्मक व्यवहार के बारे में बातचीत लाभदायक होती है

मुझे यह भी लगता है कि विद्यार्थी अपना काम न करने के लिए डाँट खाने या सज़ा पाने के इतने आदी हो चुके हैं कि यह बात उन्हें पहले ही हतोत्साहित कर देती है, क्योंकि दूसरी कक्षा के कुछ विद्यार्थी शुरू में मेरे पास आने या पढ़ाई के बारे में मुझसे बात करने में भी बहुत डरते थे। वे बस मुझसे कहते रहते थे कि उनसे पढ़ाई नहीं होती और उन्हें कुछ भी नहीं आता।

जब मैंने स्पष्ट निर्देशों और व्यवहार सम्बन्धी वर्णन का उपयोग करना शुरू किया तो धीरे-धीरे कुछ बदलाव आया। वे क्या नहीं कर रहे हैं, यह बताने के बजाय, उनकी छोटी-छोटी कोशिशों की भी सराहना करने लगी। वर्णनों से सभी को प्रोत्साहित करना शुरू किया। इससे विद्यार्थियों के मन से असफलता या ग़लती करने का डर दूर करने में मदद मिली। जब उन्होंने महसूस किया कि मैं उनके प्रयासों पर ध्यान दे रही हूँ तो वे सुरक्षित महसूस करने लगे।

इससे विद्यार्थियों की इस भावना को बदलने में भी मदद मिली कि "मैं कमज़ोर हूँ"। इनमें से कई विद्यार्थी कक्षा के भीतर सकारात्मक तरीक़े से अपना नाम सुनने के आदी नहीं थे। अकसर उनके नाम तभी पुकारे जाते थे, जब उन्हें सुधारा जा रहा हो, चेतावनी दी जा रही हो, या तुलना की जा रही हो। इसलिए वे स्वाभाविक रूप से अपनी पहचान को असफलता से जोड़ने लगे थे। सकारात्मक सन्दर्भों में अपना नाम सुनने से उन्हें वह पहचान मिली जिसके वे हमेशा से ही हक़दार थे, और इससे उनमें सीखने की इच्छा भी जागी।

3. सुधारात्मक कार्रवाई करना

एक अन्य क्षेत्र जिसमें गहराई से विचार किया कि मैं विद्यार्थियों में सुधार कैसे लाती हूँ। कभी-कभी मैं थकी हुई होती थी, और उनके व्यवहार को समझ नहीं पाती थी। इससे मुझे बड़ी निराशा होती थी, और मैं झुँझलाहट में "अपना काम करो" जैसे निर्देश दे देती थी। लेकिन फिर एहसास हुआ कि जब सुधार या बेहतरी की बात झुँझलाहट और क्रोध के भाव के साथ कही जाती है तब विद्यार्थियों के लिए उस सुझाव को सही ढंग से समझना मुश्किल हो जाता है; ऐसी स्थिति में वे या तो ख़ुद को सही साबित करने के लिए बचाव की मुद्रा में आ जाते हैं, या फिर पूरी तरह से उस विषय की परवाह करना ही छोड़ देते हैं।

ली कैंटर के चक्र की मदद से मैंने विद्यार्थियों को सिखाया कि उन्हें अपने व्यवहार की ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए। उनसे कहना शुरू किया, "मैंने कहा था कि आप बोलने से पहले अपना हाथ उठाएँ, लेकिन आप चिल्लाने लगे, इसलिए आपने एक पॉइंट गँवा दिया। अगले सवाल के लिए आप अपना हाथ उठा सकते हैं।"

यह देखकर मुझे लगता है कि इससे विद्यार्थियों को अपना काम ख़ुद चुनने में आसानी होती है। इससे उनका अपना बचाव करने वाला रवैया भी कम होता है। जब विद्यार्थियों को लगता है कि उन्हें दोषी ठहराया जा रहा है तब वे या तो अपना काम करना छोड़ देते हैं या उसे गम्भीरता से नहीं लेते। लेकिन जब वे इसे अपनी पसन्द मानकर करते हैं तब वे अपने कामों को लेकर ज़्यादा जागरूक हो जाते हैं।

इन सबके माध्यम से, मुझे यह भी एहसास हुआ कि कक्षा में अनुशासन का अर्थ विद्यार्थियों को नियंत्रित करना नहीं है। बल्कि इसका मक़सद उन्हें उनके कामों के बारे में सिखाना, और अपने व्यवहार को ख़ुद नियंत्रित करने की ज़िम्मेदारी देना है।

> **जब विद्यार्थियों को लगता है कि उन्हें दोषी ठहराया जा रहा है तब वे या तो अपना काम करना छोड़ देते हैं या उसे गम्भीरता से नहीं लेते। लेकिन जब वे इसे अपनी पसन्द मानकर करते हैं तब वे अपने कामों को लेकर ज़्यादा जागरूक हो जाते हैं।**

मेरे विचार

जब सोचती हूँ तो लगता है कि इन तरीक़ों ने मुझे अपनी कक्षा को बेहतर और शान्त तरीक़े से सँभालने में मदद की है। इससे उलझन कम करने और सकारात्मक माहौल बनाए रखने में भी मदद मिली है। मैंने मुख्य रूप से विद्यार्थियों के साथ व्यवहार का वर्णन करने का तरीक़ा अपनाया है। उनके साथ एक छोटा-सा 'स्टार गेम' भी खेलती हूँ जिसमें विद्यार्थियों के नाम लिखती हूँ, और जब वे किसी निर्देश का पालन करते हैं तब उनके नाम के आगे स्टार का चिह्न बना देती हूँ। इसके नियम सरल हैं : यदि वे स्टार चाहते हैं तो उन्हें निर्देश का पालन करना होगा, नहीं करने पर उन्हें स्टार नहीं मिलेगा।

> हालाँकि स्टार देने जैसी रणनीतियाँ कक्षा के प्रबन्धन के लिए अच्छी हो सकती हैं, लेकिन यह भी ज़रूरी है कि विद्यार्थी किसी कार्य को करने के लिए इन रणनीतियों पर निर्भर न हो जाएँ। ऐसा होने पर हो सकता है कि वे, बिना यह समझे कि असल में क्या कर रहे हैं, काम को जल्दी-जल्दी पूरा करने की कोशिश करें। इससे कभी-कभी सहपाठियों के बीच बहस भी हो जाती है, और वे शिकायत करने लगते हैं। स्टार जैसे पुरस्कार देने का तरीक़ा सन्तुलित होना चाहिए। उद्देश्य हो कि विद्यार्थियों के व्यवहार को सही दिशा दी जा सके, और उन्हें प्रभावी ढंग से सँभाला जा सके। यह भी सुनिश्चित करना ज़रूरी है कि वे सीखें कि बिना किसी पुरस्कार के भी अपने व्यवहार पर कैसे नियंत्रण रखा जाए। मेरे हिसाब से, ऐसा सन्तुलन तब बनाया जा सकता है जब कुछ दिनों तक उन्हें स्टार दिए बिना ही उनसे व्यवहार के बारे में बात की जाए।

आख़िर में, इस पूरे दृष्टिकोण से मैंने यह सीखा है कि कक्षा का प्रबन्धन मेरी अपनी तैयारी से शुरू होता है। यह मेरे उद्देश्य की स्पष्टता, मेरे बात करने के तरीक़े, और मेरे आचरण में निरन्तरता से शुरू होता है। ज़्यादातर विद्यार्थी इन कक्षा प्रबन्धन की रणनीतियों से परिचित नहीं होते, क्योंकि वे ऐसे माहौल के आदी होते हैं जहाँ ग़लती करने या शिक्षक के निर्देशों को न मानने पर उन्हें दण्ड मिलता है।

पिंकी मासी से परिचय

जब मैंने पहली और दूसरी कक्षा के लिए कक्षा सम्बन्धी नियम बनाए तो शुरू में लगा कि उन्हें एक बार समझा देना ही काफ़ी होगा। लेकिन किसी ने भी नियमों का पालन नहीं किया। बाद में, मैं उनसे नियमों के विषय के बारे में रोज़ाना चर्चा करने लगी। इससे वे धीरे-धीरे समझने लगे कि ये नियम क्या हैं। लेकिन इसके बावजूद भी वे नियम तोड़ते रहे। मुझे एहसास हुआ कि विद्यार्थियों को यह पता नहीं था कि नियम तोड़ने पर क्या होगा।

तब मैंने ब्लैकबोर्ड पर उन्हें 'पिंकी मासी' से परिचित कराया। यह एक साधारण इमोजी है। जब विद्यार्थी नियमों और निर्देशों का पालन करते हैं तब वह मुस्कुराती है, और जब वे ऐसा नहीं करते तब वह दु:खी हो जाती है। मैं नियमों पर चर्चा करती, और बताती कि यदि वे उनका पालन नहीं करेंगे तब पिंकी मासी को कैसा लगेगा। उन्हें यह भी बताया कि अगर पिंकी मासी दु:खी होती हैं तो मुझे भी दु:ख होता है। पिंकी मासी की एक छोटी-सी कहानी भी सुनाई। इससे विद्यार्थियों को धीरे-धीरे उस इमोजी से जुड़ने में मदद मिली, क्योंकि वे उसे या मुझे दु:खी नहीं करना चाहते थे। यह रणनीति पहली कक्षा के विद्यार्थियों के साथ लम्बे समय तक काम आई, जबकि दूसरी कक्षा के साथ वर्णन वाली रणनीति ने बेहतर काम किया।

हमूमन करबो

तीन विद्यार्थियों को कक्षा में अकसर ध्यान केन्द्रित करने में कठिनाई होती थी। वे पाठों और गतिविधियों के दौरान आपस में बातें करने या खेलने में अधिक रुचि रखते थे। जब मैंने व्यवहार वर्णन का उपयोग करना शुरू किया तो धीरे-धीरे उनकी भागीदारी में बदलाव देखा। मैं उनके सहपाठियों से कहती थी, "मैं देख रही हूँ कि खिलेश्वरी ने अपनी कॉपी निकाल ली है, और काम करना शुरू कर दिया है"; "राज बड़े उत्साह से अपना काम पूरा करने में लगा हुआ है"; या "मानवी गतिविधि पर ध्यान दे रही है"।

जब भी मैं ये सब कहती तो अकसर सावन, लुमेश और ईशांत को आपस में फुसफुसाते हुए सुनती थी, "हमूमन करबो" (छत्तीसगढ़ी में इसका अर्थ है, हम भी करेंगे)। इसके बाद वे तुरन्त अपनी कॉपी-किताबें निकाल लेते, या गतिविधि में भाग लेने लगते। यानी एक ऐसी स्थिति बन गई कि उन्हें बिना कुछ कहे, वे ख़ुद अपनी मर्ज़ी से काम करने लगे।

चित्र 3 : निर्देशों के पालन पर सन्तुलित रणनीति के तहत स्टार देना

एक बार व्यवहार वर्णन वाला तरीक़ा काम नहीं कर रहा था, इसलिए मैंने स्टार देने वाले तरीक़े का उपयोग किया। उन्होंने बड़े ध्यान के साथ उस गतिविधि में भाग लिया, और स्टार मिलने पर ख़ुशी-ख़ुशी कहने लगे, "मोला स्टार मिलिस" (मुझे स्टार मिला)। तब मुझे महसूस हुआ कि उन्हें बार-बार निर्देश देने के बजाय, इस तरीक़े ने भागीदारी को अधिक बढ़ावा दिया। उनमें से ज़्यादातर विद्यार्थी इसलिए हिस्सा ले रहे थे, क्योंकि वे चाहते थे कि उनके नाम की सराहना हो, या बोर्ड पर उनके नाम के आगे एक स्टार लगा हो। इस प्रकार, इन रणनीतियों ने न केवल मुझे कक्षा का प्रबन्धन करने में मदद की, बल्कि एक ऐसा माहौल भी तैयार किया जहाँ विद्यार्थी अपने-आप कक्षा की गतिविधियों में भाग लेने और जुड़ने के लिए उत्सुक थे।

कक्षा प्रबन्धन और शिक्षाशास्त्र

इस तरीक़े ने मेरी शिक्षण पद्धतियों में भी मुझे मदद की है। मैं गणित पढ़ाती हूँ। यह विषय मुझे काफ़ी चुनौतीपूर्ण लगता है। इसी कारण, अकसर इस विषय को लेकर आत्मविश्वास की कमी महसूस करती हूँ। शुरुआत में, गतिविधियों के दौरान कक्षा को सँभालने में मुझे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कुछ विद्यार्थी मेरे निर्देशों का पालन करते और कक्षा में भागीदारी करते थे, बाक़ी को पाठ के साथ जुड़े रहना कठिन लगता था। भागीदारी के अलग-अलग स्तरों वाले विद्यार्थियों को सँभालना और गतिविधियाँ करना आसान नहीं था। जब *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* पढ़ी तो मुझे समझ आया कि कक्षा प्रबन्धन और सीखने का सकारात्मक वातावरण शिक्षण कार्य से अलग नहीं हैं। ये दोनों ही प्रभावी शिक्षाशास्त्र के महत्त्वपूर्ण उपकरण हैं। इस समझ ने मुझे अपने कक्षा प्रबन्धन के तरीक़े के प्रति अधिक जागरूक होने के लिए प्रोत्साहित किया।

समय के साथ मैंने देखा कि कक्षा प्रबन्धन ने सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों की भागीदारी को अधिक समावेशी बनाने में मदद की। इन रणनीतियों का जितना अधिक उपयोग किया, वे मेरे पास आने में उतना ही अधिक स्वतंत्र महसूस करने लगे। इससे उनकी सीखने की क्षमता भी बढ़ी, क्योंकि वे अपनी शंकाओं को दूर करने और अपना काम दिखाने के लिए मेरे पास आने लगे।

मेरा मानना है कि विद्यार्थियों के लिए कक्षा एक सुरक्षित व अपनापन देने वाली जगह होनी चाहिए, और उन्हें भाग लेने, ग़लतियाँ करने, और अपने कार्यों को चुनने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। भले ही 'चुनने' वाले हिस्से पर अभी काम चल रहा है, लेकिन प्रबन्धन के इन तरीक़ों ने साफ़तौर पर मुझे विद्यार्थियों के लिए ऐसा माहौल बनाने में मदद की है जहाँ वे बिना डरे ग़लतियाँ कर सकें, और उनसे सीख सकें, बजाय इसके कि छोटी-छोटी ग़लतियों के लिए उन्हें सज़ा मिले।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

शताब्दी सैकिया अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, कुरुद ब्लॉक, धमतरी, छत्तीसगढ़ में कार्यरत हैं। यह लेख उनके एक सरकारी विद्यालय में किए गए नियोजित काम के अनुभवों पर आधारित है।

सम्पर्क : shatabdee.saikia@azimpremjifoundation.org

डेमॉन्स्ट्रेशन मॉडल : अनुभव के साथ सीख और सुधार

सारिया अली

डेमॉन्स्ट्रेशन मॉडल शिक्षकों के क्षमता संवर्धन के लिए आज़माया हुआ कारगर तरीक़ा है। इसमें सिखाने और सीखने वाले, दोनों सीखते हैं। इस लेख में शिक्षिका द्वारा डेमॉन्स्ट्रेशन मॉडल पर काम करने के अनुभव, और समझ में हुई वृद्धि को दर्ज करने का प्रयास किया गया है।

वयस्कों के क्षमता संवर्धन की प्रक्रिया में अकसर 'कोई' किसी के क्षमता वर्धन पर कार्य कर रहा होता है, और प्रतिभागी सुनते दिखाई देते हैं। शिक्षकों के साथ क्षमता संवर्धन पर काम करने के मायने अलग हैं। इसमें आप कुछ सिखाने से पहले ख़ुद सीखते हैं, उसके परिणाम देखते हैं, और सिखाते समय भी कुछ नया सीख रहे होते हैं। यह प्रक्रिया क्षमता संवर्धन के 'डेमॉन्स्ट्रेशन मॉडल' में काफ़ी ठीक तरीक़े से होती हुई नज़र आती है।

डेमॉन्स्ट्रेशन कार्यशाला क्या है, और इसे करने के चरण क्या हैं

डेमॉन्स्ट्रेशन शब्द का मतलब है 'किसी कार्य की प्रक्रिया को करके दिखाना'। डेमॉन्स्ट्रेशन मॉडल को आसान परिभाषा में समझें तो यह कार्यशाला का एक ऐसा स्वरूप है जिसमें एक शिक्षक, शिक्षण प्रक्रियाओं को वास्तविक कक्षा में क्रियान्वित करके दिखाते हैं, और प्रतिभागी शिक्षक पीछे बैठकर अवलोकन करते हैं।

डेमॉन्स्ट्रेशन के फ्रेम को निम्न बिन्दुओं से समझ सकते हैं–

1. एक शिक्षक विद्यार्थियों के साथ सक्रिय रूप से शिक्षण प्रक्रिया पर काम करते हैं जिसका असर उनके स्तर पर दिखता है। ऐसे ही शिक्षक की कक्षा में इसका आयोजन किया जाता है।
2. इस कार्यशाला में प्रतिभागी शिक्षक आमतौर पर उसी पंचायत / क्लस्टर का हो।
3. डेमॉन्स्ट्रेशन वाले दिन डेमो देने वाले शिक्षक विद्यार्थियों को कक्षा में पढ़ाते हैं, और प्रतिभागी शिक्षक पीछे बैठकर ध्यानपूर्वक अवलोकन करते हैं।
4. कक्षा समाप्त होने के बाद प्रतिभागी और डेमो शिक्षक के बीच सीख, चुनौती और आगे की योजना को लेकर बातचीत होती है।

मूलतः इस प्रकार से एक डेमॉन्स्ट्रेशन कार्यशाला आयोजित होती है। यद्यपि इस प्रक्रिया को सामान्यत: विद्यार्थियों की उपस्थिति में

> डेमॉन्स्ट्रेशन मॉडल को आसान परिभाषा में समझें तो यह कार्यशाला का एक ऐसा स्वरूप है जिसमें एक शिक्षक, शिक्षण प्रक्रियाओं को वास्तविक कक्षा में क्रियान्वित करके दिखाते हैं, और प्रतिभागी शिक्षक पीछे बैठकर अवलोकन करते हैं।

चित्र 1 : प्रतिभागी शिक्षकों की उपस्थिति में अपनी कक्षा प्रक्रियाओं का डेमो करते एक शिक्षक

चित्र 2 : सुबह की सभा में पूछे जा रहे सवालों के जवाब देते विद्यार्थी

वास्तविक कक्षा में ही आयोजित किया जाता है, लेकिन एक अन्य स्वरूप में यह बिना विद्यार्थियों के भी हो सकती है। ऐसी स्थिति में केवल प्रतिभागी शिक्षक ही शामिल होते हैं, और डेमॉन्स्ट्रेशन विभिन्न शिक्षण प्रक्रियाओं का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए किया जाता है। इस लेख में फ़ोकस पहले वाले प्रकार पर करेंगे।

एक बेहतर डेमो का दृश्य

डेमो के फ्रेम को एक दृश्य से समझा जा सकता है। यह कार्यशाला चित्तौड़गढ़, राजस्थान के एक प्राथमिक विद्यालय में आयोजित की गई। यहाँ कुछ 35 विद्यार्थी हैं, और दो शिक्षक पढ़ाते हैं। डेमो हिन्दी विषय पर आयोजित किया गया, और पास के विद्यालयों के 9 हिन्दी शिक्षकों को प्रतिभागी के रूप में बुलाया गया।

हिन्दी के शिक्षक ने नियमित पाठ योजना से काम करना शुरू कर दिया था। निरन्तरता का प्रमाण विद्यार्थियों के भाषा के स्तर में दिखता है। यहाँ मॉर्निंग असेम्बली में भी भाषा व गणित की रोचक गतिविधियाँ कराई जाती हैं।

इस विद्यालय में डेमो कार्यशाला कुछ इस प्रकार आयोजित हुई–

डेमो से पहले की प्रक्रिया

1. शिक्षक ने निर्धारित किया कि वे राजस्थान स्टेट बोर्ड की हिन्दी की कक्षा 4 की पाठ्यपुस्तक में शामिल विजयदान देथा की कहानी 'कुरज री विनती' पर कार्य करेंगे। इसके लिए उन्होंने पहले 5 दिनों की पाठ योजना बनाई। डेमो योजना के पहले दिन होना था। (कुरज साइबेरियाई पक्षी हैं जो वर्षा ऋतु में राजस्थान आते हैं)। यह पाठ कक्षा 4 का है, लेकिन डेमो कक्षा के दौरान कक्षा 3 और 4 साथ में बैठने वाली थी।
2. तय किया गया कि कक्षा के साथ-साथ प्रतिभागियों को असेम्बली भी दिखाई जाएगी। यानी डेमो सुबह 7:30 बजे शुरू करने का सोचा गया। कक्षा का अवलोकन और उसके बाद की बातचीत मिलाकर, कार्यशाला 11:00 बजे तक आयोजित की जानी थी।

डेमो वाले दिन

1. कार्यशाला की शुरुआत असेम्बली से हुई। प्रतिभागियों से पीछे बैठकर अवलोकन करने को कहा गया।
2. विद्यार्थियों ने प्रार्थना करने के बाद एक कहानी का रोल-प्ले किया; कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थियों ने एक कविता सुनाई; और कक्षा 5 के विद्यार्थियों ने कुछ इबारती सवाल पूछे। मज़ेदार बात थी कि सभी विद्यार्थी पूरे आत्मविश्वास के साथ जवाब दे रहे थे। प्रस्तुति दे रहे विद्यार्थियों में किसी प्रकार की झिझक नहीं थी। यह दर्शा रहा था कि विद्यार्थी इस प्रक्रिया से परिचित हैं, और यह निरन्तर की जाती है।
3. इसके बाद प्रतिभागी शिक्षकों के साथ कार्यशाला के स्वरूप और अपेक्षाओं पर बात की गई। जैसे–सभी को कक्षा में अवलोकन करते समय बीच में बात नहीं करनी है; विद्यार्थियों के साथ संवाद नहीं करना है; अपने अवलोकन दर्ज करते रहने हैं; अपने सवाल भी लिखकर रख लेने हैं; आदि।

4. सभी को भाषा की शिक्षण प्रक्रियाओं का पर्चा दिया गया, और कहा गया कि कक्षा के दौरान देखी गई प्रैक्टिस को चिह्नित करते चलें।

5. असेम्बली के बाद डेमो वाली कक्षा शुरू होनी थी। प्रतिभागी पीछे बैठे, विद्यार्थियों को शिक्षक ने बीच में गोल घेरे में बैठाया। विद्यार्थियों की सहजता के लिए शिक्षक ने पहले ही उन्हें बता दिया था कि कुछ लोग उनके साथ पढ़ने आ रहे हैं।

6. शिक्षक ने योजना अनुसार कुछ इस प्रकार काम किया–

   - पहले शिक्षक द्वारा वातावरण निर्माण के लिए विद्यार्थियों से एक कविता / कहानी सुनी गई, और पूछा गया कि वे कैसा महसूस कर रहे हैं, या यदि उन्हें पिछले दिन के कुछ अनुभव सुनाने हों? फिर विद्यार्थियों को पाठ का नाम बताया गया।
   - शिक्षक ने सन्दर्भ निर्माण करने के लिए कहानी से जुड़े कुछ सवाल किए। जैसे–खेतों का ध्यान किस-किस प्रकार रखा जाता है; कोई पक्षी खेत में आकर फ़सल खाए तो कैसे ध्यान रखते हैं; आदि।
   - अगले चरण में शिक्षक ने कहानी के चित्रों पर बातचीत की। विद्यार्थियों को ठीक से अवलोकन करने का मौक़ा दिया गया, और हर चित्र पर विभिन्न प्रकार के सवाल पूछे। उदाहरण के लिए, कुरज खेत पर क्या करने आई; किसान कुरज से क्या बात कर रहा होगा; आदि।
   - शिक्षक ने फिर कहानी को मौखिक रूप से हावभाव के साथ विद्यार्थियों को सुनाया जो काफ़ी रोचक था। उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए बीच-बीच में सवाल भी पूछते रहे। उदाहरणार्थ, कुरज ने सबसे पहले किससे विनती की; किसान ने किस प्रकार का लालच दिखाया; आदि।
   - कहानी सुनाने के बाद शिक्षक ने विद्यार्थियों से कहानी सुनी। इसमें सभी को कहानी सुनाने के लिए प्रोत्साहित किया। कुछ विद्यार्थियों को आगे बुलाकर कहानी सुनाने को कहा गया।
   - शिक्षक ने कहानी का एक चार्ट बनाया हुआ था जिसमें उसे आसान शब्दों में लिखा गया था। इस प्रक्रिया के बाद उस चार्ट पर पहले शिक्षक ने उँगली रखकर ख़ुद पढ़ा, फिर विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए कहा। शिक्षक ने ख़ासकर उन विद्यार्थियों को मौक़ा दिया जो अभी पठन के शुरुआती स्तर पर थे। इस दौरान कुछ विद्यार्थी अटक रहे थे, कुछ अनुमान लगा रहे थे। तब शिक्षक ने शुरू की कुछ पंक्तियों को पढ़ने में विद्यार्थियों की मदद की।

चित्र 3 : डेमो के दौरान दिए जा रहे निर्देशों को समझते हुए प्रतिक्रिया देते विद्यार्थी

- आख़िर में शिक्षक ने उप-समूह में कार्य करवाया। कक्षा स्तर के विद्यार्थियों से कहानी को अपने शब्दों में लिखने के लिए कहा। कक्षा स्तर से पीछे के विद्यार्थियों को कहानी में आए कठिन शब्दों का चयन कर अपनी कॉपी में लिखने को कहा। यह समूह कठिन शब्द शिक्षक के लगाए चार्ट से लिख रहा था।

  यहाँ डेमो समाप्त हुआ। कुछ देर प्रतिभागी शिक्षकों ने विद्यार्थियों से कुछ सवाल पूछे। उन्हें विद्यार्थियों की कॉपी का अवलोकन भी करने दिया गया।

7. डेमो के बाद प्रतिभागियों से कुछ इस प्रकार बातचीत की गई–

   - आपको कक्षा में हो रही कौन-सी प्रक्रिया सबसे प्रभावी लगी?

     इसके जवाब अलग-अलग थे। जैसे–कहानी का हावभाव से वाचन रोचक था, और विद्यार्थी अच्छे से सुन रहे थे; चित्रों पर बातचीत प्रभावी थी जिससे वे ठीक से कहानी समझ पाए; पठन के दौरान उनका आत्मविश्वास प्रभावी था, और वे रुकते समय डर भी नहीं रहे थे; उप-समूह में काम की योजना अच्छी थी; आदि।

   - आपके हिसाब से कौन-कौन सी शिक्षण प्रक्रियाएँ होती हुई नज़र आ रही थीं, अपने पर्चे को देखकर बताइए?

     इसमें सभी शिक्षकों की प्रतिक्रिया ली गई, और पाया कि ज़्यादातर चरण हो रहे थे।

   - अपनी कक्षा में इनमें से कौन-सी चीज़ें करने का प्रयास करते हैं, और क्या नहीं हो पाती हैं?

     बताया गया कि मौखिक वाचन प्रभावी नहीं हो पाता जिस वजह से थोड़ा असहज महसूस होता है; चित्र पठन पर काम हो पाता है, लेकिन अपने शब्दों में कहानी नहीं लिखते हैं; आदि।

   - इस कार्यशाला के बाद आप कौन-सी 2-3 चीज़ें अपनी कक्षा में लागू करेंगे?

     प्रतिभागियों ने बताया कि मौखिक वाचन पर अभ्यास किया जाएगा, और चित्र पठन को पाठ योजना में सुनिश्चित किया जाएगा; विद्यार्थियों को पढ़ी गई कहानी सुनाने का अवसर दिया जाएगा; इत्यादि।

8. शिक्षक ने कहानी का चार्ट बनाया ताकि विद्यार्थियों को आसान शब्दों में कहानी समझ आ जाए। साथ ही, यह भी बात हुई कि कुछ प्रक्रियाओं को निरन्तर करने की ज़रूरत है। उदाहरण के लिए, कहानियों पर बातचीत, चित्रों का इस्तेमाल, मॉर्निंग असेम्बली में विद्यार्थियों को सुनना, इत्यादि। आख़िर में शिक्षक ने अपनी आगे की योजना भी बताई।

यह एक अच्छी डेमो कार्यशाला थी। इससे प्रतीत हो रहा था कि शिक्षक ने जिन प्रक्रियाओं को अपनाया, वे इन्हें निरन्तर करते हैं। विद्यार्थियों के साथ नई कहानी पर कार्य किया गया। उनकी सहज प्रतिक्रिया देखकर स्पष्ट हो रहा था कि उन्होंने बुनियादी दक्षताएँ हासिल की हुई हैं।

इस पूरे दृश्य से एक अच्छी डेमो कार्यशाला की समझ बनाई जा सकती है।

> **"'वयस्क द्वारा सीखने' का बड़ा हिस्सा है सिखाने वाले का निरन्तर सीखते रहना। डेमो के लिए शिक्षक की तैयारी इस बात को प्रमाणित करती है।"**

इस मॉडल को प्रभावी क्यों मानें

डेमो करने के लिए शिक्षक ने 2-3 पाठों पर पहले ही काम करके देख लिया था। वे पूरी तरह सहज थे, और प्रक्रिया पर विश्वास पा चुके थे। इस पूरी प्रक्रिया में वे स्वयं एक बेहतर शिक्षक के रूप में बढ़ पाए, और सुगमकर्ता के रूप में कई कार्यशालाओं में सत्र लेते हैं। इससे कुछ बिन्दु समझ आते हैं–

1. 'वयस्क द्वारा सीखने' का बड़ा हिस्सा है सिखाने वाले का निरन्तर सीखते रहना। डेमो के लिए शिक्षक की तैयारी इस बात को प्रमाणित करती है।

   शिक्षक जब अपनी शिक्षण पद्धति को व्यवस्थित कर विद्यार्थियों के स्तर में इसका असर देखते हैं तो उनके पढ़ाने के तरीक़ों में एक दीर्घकालीन बदलाव जैसा नज़र आता है। परिणाम देखने के बाद ही अन्य लोगों के साथ साझा किया जाता है।

2. प्रतिभागियों में बदलाव के नज़रिए से तीन बातें समझ आई हैं–

   - एक, जब विद्यार्थियों का स्तर देखते हैं, और पाते हैं कि किसी विशेष शिक्षण पद्धति के माध्यम से विद्यार्थी सीख रहे हैं तब उस पद्धति पर विश्वास बनता है।
   - दूसरा, प्रतिभागियों का यह महसूस करना कि यदि मैं भी ऐसा कुछ करूँ तब मैं भी अपने साथियों को कुछ सिखा पाऊँगा।
   - तीसरा, एक-सी परिस्थितियों में किसी की सफलता देखने से यह विश्वास बनता है कि अपने विद्यालय में भी कुछ किया जा सकता है।

डेमो मॉडल दोनों ही पक्षों–सीखने वाले और सिखाने वाले–के क्षमता संवर्धन के लिए कारगर हैं। हमारे अनुभव में डेमो देने के बाद कई प्रतिभागी शिक्षकों का मनोबल बढ़ता हुआ दिखा, और उन्हें अन्य मंचों पर भी सुगमकर्ता बनाया गया। कई ऐसे भी शिक्षक हैं जिन्होंने अपना शोध पत्र (पर्चा) लिखा है, और राज्य स्तरीय सेमिनारों में भी भागीदारी की है। यह सब इस मॉडल के प्रभावी होने को और स्पष्ट करता है।

> डेमॉन्स्ट्रेशन करने का उद्देश्य यह दर्शाना नहीं है कि विद्यार्थियों को कितना आता है। इसका उद्देश्य यह दिखाना है कि शिक्षक ऐसा क्या काम कर रहे हैं जो विद्यार्थियों के स्तर में सुधार ला रहा है।

अनुभवों से सीखना और उन्हें सुधारना

प्रस्तुत की गई कार्यशाला एक बेहतर उदाहरण है, लेकिन शुरू के अनुभवों ने हमें कुछ अहम बातें भी सिखाईं जिनसे कार्यशालाओं की गुणवत्ता को सुनिश्चित किया जा सकता है–

1. शुरू की कुछ कार्यशालाओं में देखा गया कि शिक्षक ने उसी विषयवस्तु पर डेमो दिया जो पहले भी हो चुका था। इसका मतलब है, विद्यार्थियों को वही गतिविधि, वही सवाल, वही टास्क दिए गए। कुछ हद तक यह नाट्य रूपान्तरण जैसा लग रहा था।

   ऐसा होना इस बात का प्रतीक नहीं होता कि यदि विद्यार्थी पढ़ाने की पद्धतियों से परिचित होते हैं तो विषयवस्तु में बदलाव उनकी प्रतिक्रिया पर असर नहीं डालता, जैसा हमने डेमो के दृश्य में देखा।

   इससे यह भी पता नहीं चलता है कि कक्षा में आई चुनौतियों के दौरान वे शिक्षक किस प्रकार से अपनी योजना सुधारते हैं, और विद्यार्थियों को सिखाने के लिए अलग-अलग प्रयास करते हैं।

2. कुछ जगह यह भी देखा गया कि डेमो दे रहे शिक्षक सब कुछ श्रेष्ठ करने के चक्कर में असहज हो रहे थे। शिक्षकों की सहजता बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसका मतलब है, उन्हें इस पर ध्यान नहीं देना है कि विद्यार्थी कुछ ग़लत न बोल दें। ऐसा करने से झलकता है कि शिक्षक असहज हैं। यह प्रक्रिया में बाधा जैसा दिखता है।

   समझने वाली बात यह है कि डेमॉन्स्ट्रेशन करने का उद्देश्य यह दर्शाना नहीं है कि विद्यार्थियों को कितना आता है। इसका उद्देश्य यह दिखाना है कि शिक्षक ऐसा क्या काम कर रहे हैं जो विद्यार्थियों के स्तर में सुधार ला रहा है।

कुछ दूर आए हैं, अभी और दूर जाना है

इस लेख में हमने एक डेमो के दृश्य से समझा कि कार्यशाला में क्या होता है, यह प्रभावी क्यों है, और किन चीज़ों को डेमो के दौरान नहीं करना चाहिए। इससे शिक्षकों का शिक्षण प्रक्रियाओं पर भरोसा बनते देखा गया है। ऊपर दी गई सभी बातों को ध्यान में रखते हुए इन तीन चीज़ों को महत्ता के साथ याद रखना ज़रूरी है–

1. जो शिक्षक निरन्तरता से काम कर विद्यार्थियों में असर देख पाएँ, वहाँ इसे आयोजित करना।
2. प्रतिभागियों को स्पष्ट पता होना कि उन्हें अवलोकन कैसे करना है, और क्या दर्ज करना है।
3. डेमो के बाद हर प्रतिभागी को योजनाबद्ध तरीक़े से आगे बढ़ने का नज़रिया मिले, इसका सुगमकर्ता को विशेष ध्यान रखना है।

सारिया अली, पिछले 6 साल से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में काम कर रही हैं। एक प्रैक्टिशनर के रूप में, उनकी इस सवाल पर नियमित रूप से विचार-विमर्श करने में गहरी रुचि रहती है कि वयस्क, ख़ासतौर पर शिक्षक, कैसे सीखते हैं। वर्तमान में चित्तौड़गढ़, राजस्थान में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : sariya.ali@azimpremjifoundation.org

एलकेजी और यूकेजी में कविताओं के ज़रिए भाषा शिक्षण

कविता कपिल

आँगनवाड़ी में आने वाले बच्चों के साथ कविताओं और कहानियों के ज़रिए संवाद करना रुचिकर और अर्थपूर्ण होता है। यदि सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखते हुए बच्चों के सन्दर्भ व रुचियों के अनुरूप कविताओं और कहानियों का चयन किया जाए तब प्रतिफल हासिल करने के अवसर बढ़ जाते हैं। इस लेख में कुछ ऐसी ही कविताओं के साथ आयोजित भाषा गतिविधियों के अनुभव दर्ज हैं।

पिछले पाँच सालों से, मैं आँगनवाड़ी के बच्चों के साथ कविता सुनने-सुनाने, और उनको लय के साथ गाने को लेकर काम कर रही हूँ। कविताएँ गाना और सुनना, उन्हें बहुत पसन्द होता है। यहीं से एक विचार उभरा कि कविता पर और कौन-सी गतिविधियाँ हो सकती हैं जिनके माध्यम से बच्चों के साथ पढ़ने-पढ़ाने का काम किया जा सकता है।

इसे समझने में *एनसीएफ़-एफ़एस 2023** से मदद मिली। यह दस्तावेज़ 4 से 5 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए हिन्दी और अँग्रेज़ी, दोनों भाषाओं में हासिल किए जाने वाले कुछ प्रतिफलों की बात करता है।

- बच्चे घर और आस-पड़ोस में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं के गीतों को मज़े से सुनें, और गुनगुनाएँ;
- लिखी सामग्री को बाएँ से दाएँ, और ऊपर से नीचे की ओर पढ़ना सीखें;
- कक्षा में, विद्यालय में, खेलते समय अपने शिक्षकों व साथियों से दैनिक जीवन से जुड़ी बातचीत में प्रतिभाग करें;
- पहली आवाज़ की मदद से परिचित शब्दों को पढ़ पाएँ;
- कविता में आए एक जैसे, तुकान्त शब्दों का आनन्द ले पाएँ; आदि।

चित्र 1 : याद की गई कविता के शब्द मिलाते विद्यार्थी

चित्र 2 : कविता पट्टियों से कविता बनाने के लिए अनुमान लगाती छात्रा

इन सभी प्रतिफलों को ध्यान में रखते हुए कविता के माध्यम से काम करने की तैयारी की। शुरुआत कविताओं के चयन से की गई। 4 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए 4-5 पंक्तियों वाली सरल और अर्थपूर्ण कविताएँ चुनी गईं। जैसे–

हाथी राजा बहुत भले
सूँड हिलाते कहाँ चले
मेरे घर आ जाओ न!
हलुवा पूड़ी खाओ न!

वह देखो वह आता चूहा
आँखों को चमकाता चूहा
लम्बी पूँछ हिलाता चूहा
मूँछों में मुस्काता चूहा
बिल्ली से डर जाता चूहा

इस तरह की अर्थपूर्ण कविताएँ बच्चों को बातचीत के बहुत सारे अवसर देती हैं। इन्हें बड़े और स्पष्ट शब्दों में चार्ट पर लिखा। यह पहला मौक़ा होता है जब बच्चे अपनी पसन्दीदा कविता को लिखित रूप में देखते हैं। यह बहुत ज़रूरी है कि बच्चे ऐसी कविताएँ देखें जिनसे उनका जुड़ाव कविता के भावों से बनता हो।

कक्षा के दौरान

पहले दिन कविता को बच्चों के साथ हावभाव से गाया गया। यह कविता थी–

मुर्गी माँ घर से निकली,
झोला ले बाज़ार चली।
बच्चे बोले चें चें चें
अम्मा हम भी साथ चलें।

बच्चों से इस पर बात की गई। यह कविता परिवार के बारे में बात करने के बहुत सारे मौक़े देती है। मैंने पूछा, "आप मम्मी के साथ कहाँ-कहाँ जाते हैं?" उत्तर में बच्चों ने बताया कि वे नानी के घर, दुकान और शाम को घूमने जाते हैं। इसी तरह पूछे गए अन्य प्रश्नों के उत्तर देते हुए उन्होंने यह भी बताया कि मम्मी कौन-कौन सा सामान लेने बाज़ार जाती हैं; मम्मी के साथ बाहर जाने के लिए वे क्या करते हैं; आदि। इसके बाद 'कितना पानी' कविता को गाया गया, और उस पर भी बातचीत शुरू हुई–"*मछली के अलावा और कौन-कौन पानी में रहता है?*", पूछने पर बच्चों ने जलचर जानवरों के बारे में बताया। यह भी बताया कि मछली अगर पानी से बाहर आ जाए तो क्या होगा। इस तरह दैनिक जीवन से जुड़ी बातचीत को अभिव्यक्त करने में अर्थपूर्ण कविताएँ मदद करती हैं।

उँगली रखकर पढ़ना

अब बच्चों का परिचय 'कविता चार्ट' से कराया गया। उन्हें बताया कि जो कविता हम गा रहे थे वह ऐसे लिखी जाती है। उस समय उनके चेहरों पर ख़ुशी के भाव थे। ख़ुशी इस बात की कि कुछ नया हो रहा है। अब तक हम कक्षा में 'म' की ध्वनि और बनावट को लेकर काम कर चुके थे। कुछ बच्चों ने 'मुर्गी माँ' कविता में 'म' देखना शुरू किया। कक्षा में कुछ बातचीत शुरू हुई। जैसे–

पहला बच्चा : मैम, इसमें तो 'म' लिखा है!

दूसरा बच्चा : मैम, 'म' तो बहुत सारे हैं!

शिक्षिका : 'म' से क्या-क्या चीज़ें होती हैं?

बच्चे : मैम, मुर्गी, मछली और मम्मी!

इस शुरुआती बातचीत के बाद मैंने पढ़ने को लेकर कुछ बातें कीं। उदाहरण के लिए, पढ़ते वक़्त हमें बाएँ से दाएँ की ओर जाना है, और ऊपर से शुरू करके नीचे की ओर। इसके बाद कविता को एक छोटी छड़ी की सहायता से पढ़ा जिससे सभी बच्चे चार्ट में शब्दों की लिखावट को, और मुझे भी देख पाएँ। फिर कुछ बच्चों ने चार्ट पर कविता पढ़ने की पहली कोशिश की। मैंने अनुभव किया कि शुरुआत में बच्चे कविता चार्ट में पहले शब्द पर उँगली रख रहे थे, और कविता बोलते हुए अपनी उँगली को आगे की ओर नहीं बढ़ा रहे थे। उदाहरण के लिए, बच्चे ने अपनी उँगली मुर्गी पर रखी और पूरी पंक्ति बोली, "मुर्गी माँ घर से निकली।" इस दौरान उसकी उँगली मुर्गी पर ही रही। यहाँ से बच्चों के साथ पंक्तियों को लेकर काम करना शुरू किया। अब जब नए चार्ट बनाए तब कविता की पंक्तियों को दो अलग रंगों से लिखा ताकि उन्हें दो पंक्तियों का अन्तर समझ आए। उसके बाद बच्चों ने उँगलियों को ऊपर से नीचे की ओर बढ़ाना शुरू किया।

> **यह बहुत ज़रूरी है कि बच्चे ऐसी कविताएँ देखें जिनसे उनका जुड़ाव कविता के भावों से बनता हो।**

रीडिंग कॉर्नर

कविता से जुड़ी गतिविधियाँ पूरी होने के बाद बच्चों से बात की कि अब इस कविता चार्ट को रीडिंग कॉर्नर में लगाएँगे। उन्हें यह भी बताया कि जब भी आपको ख़ाली समय मिले, आप यहाँ आकर कविताएँ पढ़ सकते हैं। अब बच्चों को जब भी अवसर मिलता है या अपना काम जल्दी ख़त्म कर लेते हैं, रीडिंग कॉर्नर में जाकर कविताएँ पढ़ते हैं। शुरुआत में, मैंने रीडिंग कॉर्नर में लगे कविता चार्ट को उनके साथ पढ़ना शुरू किया। बाद में यह गतिविधि बच्चों की पढ़ने की आदत का हिस्सा बन गई। कविताओं के साथ की गई इन गतिविधियों के बाद अवलोकन में पाया गया कि एलकेजी के सभी बच्चे बिना झिझक के हावभाव के साथ कविता सुनाने लगे हैं, और चार्ट में कविता पढ़ते समय उनकी उँगली उसी पंक्ति पर होती है जिसे वे बोल रहे होते हैं। एलकेजी के लिए जिन कुछ प्रतिफलों की बात *एनसीएफ़-एफ़एस 2023* में की गई है, उन्हें इन गतिविधियों के द्वारा पूरा किया जा सकता है।

यूकेजी के बच्चे और कविताएँ

5–6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए *एनसीएफ़–एफ़एस 2023* में दोनों भाषाओं के जिन प्रतिफलों की बात गई है, उनमें से कुछ हैं–

- छोटे–छोटे गीतों और कविताओं को गा सकें, गुनगुना सकें;
- परिचित गीतों और कविताओं को ध्यान से सुन सकें, और उनके बारे में बातचीत कर सकें;
- परिचित कविताओं से तुकान्त शब्दों को पहचान सकें, नए तुकान्त शब्द बना सकें;
- दो शब्दों के बीच में जगह होती है, यह पहचानना शुरू कर सकें;
- जिन अक्षरों को वे जानते हैं, उनसे बने शब्दों में एक उच्चारण–इकाई (सिलेबल) वाले शब्दों को पढ़ सकें; आदि।

इन प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए कुछ नई गतिविधियाँ की जाती हैं जो यूकेजी के बच्चों के स्तर की होती हैं। साथ ही, ऊपर दी गई सभी गतिविधियाँ भी यूकेजी कक्षा में दोहराई जाती हैं।

कक्षा के पहले की तैयारी

एलकेजी में वाक्यों को लेकर बच्चों की कुछ समझ बन चुकी होती है। यूकेजी के स्तर पर उनके साथ शब्दों की समझ को लेकर काम किया जाता है। इसके लिए भी सबसे पहले कविता का चयन किया जाता है। इस स्तर के लिए 6–8 पंक्तियों वाली कविताएँ ही चुनी गईं। *जैसे–लाल टमाटर–लाल टमाटर, मैं तो तुमको खाऊँगा, अभी न खाओ मैं कुछ दिन में, और अधिक पक जाऊँगा,* आदि। इसके बाद कविता के चार्ट बनाए, और इसकी पंक्तियों को अलग–अलग लिखा। शुरू के कुछ महीनों में बच्चों के साथ कविता की बिखरी हुई पंक्तियों को जोड़ने जैसी गतिविधियाँ की जाती हैं। उसके बाद कविता में आए शब्दों को अलग–अलग किया जाता है। इन शब्दों को वाक्यवार छाँटकर उनसे वाक्य बनाने की गतिविधि कराई जाती है।

पंक्तियों को जोड़कर कविता बनाना

इस गतिविधि में बच्चे जब कविता से परिचित हो जाते हैं, उन्हें कविता की पंक्तियों से पूरी कविता बनानी होती है। इसमें कविता की पंक्तियों को अलग–अलग काटकर बच्चों को दिया जाता है। एक चार्ट पर पूरी कविता लिखी होती है। जब बच्चों का परिचय इस गतिविधि से कराया गया तो उनके कुछ सवाल थे। वे पूछ रहे थे कि हम कविता की पंक्ति कैसे लगाएँगे; कौन–सी पंक्ति पहले आएगी; आदि।

बच्चों की मदद करते हुए उन्हें बताया कि हम दी गई पट्टियों में लिखी हुई पंक्तियों के पहले वर्ण को कविता चार्ट में लिखी पंक्तियों के पहले वर्ण से मिलाएँगे। उदाहरण के लिए, 'मुर्ग़ी माँ' कविता में बच्चे जब पहली पंक्ति को ढूँढ़ेंगे, वे देखने की कोशिश करेंगे कि किस पंक्ति की शुरुआत में 'म' वर्ण आया है। उसके बाद उन्होंने हर पंक्ति के पहले वर्ण की मदद से कविता चार्ट पर पंक्तियाँ रखकर पूरी कविता बनाने की गतिविधि को पूरा किया।

आगे की कविताओं में बच्चों का एक और सवाल सामने आया। इसमें उन्होंने पूछा, "मैम देखो, पहला वर्ण दोनों पंक्तियों में एक जैसा है!" उदाहरण के लिए–

अण्डा झूल रहा था झूला,
अपने पंखों पर झूलेंगे

दोनों ही पंक्तियाँ 'अ' वर्ण से शुरू होती हैं।

बच्चों की मदद करते हुए, मैंने उनका ध्यान पूरे शब्द की ओर दिलवाया।

पूरा शब्द देखने पर उनका ध्यान अन्य वर्णों पर गया। उन्होंने पाया कि दोनों में आख़िरी वर्ण अलग है। उदाहरण के लिए, 'अण्डा' और 'अपने' शब्द को ध्यान से देखें तो समझ आता है कि 'अण्डा' शब्द में आख़िरी वर्ण 'ड' है और 'अपने' में 'न' वर्ण है। यहाँ से कविता बनाने की गतिविधि में बच्चों ने पूरे शब्द को देखकर कविता की पंक्तियों की मदद से कविता को पूरा किया। इस तरह आगे बच्चों के साथ शब्द और उसकी आख़िरी वर्ण की ध्वनि को लेकर काम करना शुरू किया गया।

चित्र 3 : याद की गई कविता को उँगली लगाकर पढ़ता बच्चा

कविता के चित्र

बच्चे विद्यालय से घर जाने के बाद भी कविताएँ पढ़ें, और माता-पिता भी इसमें उनकी मदद कर पाएँ, इसलिए मैंने उनकी कॉपी में कविता की पट्टी लगा दी। कुछ दिन बाद एक बच्चे ने पूछा, "मैम, इसके नीचे चित्र बना लें क्या?" इसके बाद हमने सभी बच्चों के साथ कविता के चित्र बनाने की गतिविधियाँ कीं। उन्होंने बहुत बारीक़ी से कविता पर चित्र बनाए, और उन चित्रों को लेकर बात भी की।

चित्र 4 में 'चिड़ियों का स्कूल' कविता का चित्रण किया गया है। इसमें बच्चों ने चिड़िया के साथ-साथ विद्यालय आते समय दिखने वाली दुकानों और चिड़िया को खाना खाते हुए दिखाया है। इस तरह से यह गतिविधि उन्हें स्वतंत्र अभिव्यक्ति के मौक़े देती है।

शब्दों की समझ

शब्दों की समझ के लिए बच्चों के साथ दो गतिविधियाँ की जाती हैं। पहली, जिसमें शिक्षिका यानी यहाँ मैं, कविता के कुछ शब्द बोलती हूँ, और बच्चों को उन्हें कविता में से ढूँढ़कर कॉपी में लिखना होता है। दूसरी गतिविधि में, बच्चों को कविता के शब्द कार्ड दिए जाते हैं जिन्हें मिलाकर वे पूरी कविता बनाते हैं।

चित्र 4 : कविता के भाव को चित्र में उकेरने की एक कोशिश

समेकन

कविता भाषा शिक्षण के प्रति आकर्षण पैदा करती है। इससे किसी दी गई विषयवस्तु के बारे में सोचने, कल्पना करने, अनुमान लगाने और निष्कर्षों तक पहुँचने में सहूलियत होती है, तथा मज़ा भी आता है। शुरुआती स्तर पर कविताएँ बच्चों को भाषा का उपयोग करने का मौक़ा देते हुए, अपनी को भाषा समृद्ध करने, उसमें आनन्द लेने के अवसर देती हैं।

सन्दर्भ

- Page 184, Chapter 6, Assessment C–9.1, Balvatika 2 & Balvatika 3, *NCF–FS (2022)* and Page 138, Chapter 5, Content of Language, Competency C–9.2, *NCF–FS (2022)*
- Page 259–271, C–9.4, C–9.7, C–10.1, Language and Literacy Development, *NCF–FS (2022)*

कविता कपिल पिछले 8 सालों से छोटे बच्चों के साथ सीखने-सिखाने को लेकर काम कर रही हैं। वर्तमान में, वे अज़ीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर, उत्तराखण्ड में एलकेजी व यूकेजी के बच्चों को पढ़ाती हैं।

सम्पर्क : kavita.kapil@azimpremjifoundation.org

विज्ञान शिक्षण की प्रक्रिया में एग्ज़िट टिकट की उपयोगिता

अश्लेषा शर्मा

'एग्ज़िट टिकट' तकनीक क्या है? यह प्रत्येक पाठ के समापन पर हर विद्यार्थी के सीखने के स्तर को समझने में शिक्षक की सहायता कैसे करती है, ख़ासतौर पर जब विज्ञान को पढ़ाया जा रहा हो? इस लेख में शिक्षिका अपने उन अनुभवों को साझा कर रही हैं जो उन्हें कक्षा में एग्ज़िट टिकट के प्रभावशाली इस्तेमाल के दौरान मिले।

सीखना या अधिगम विद्यार्थी और शिक्षक, दोनों के लिए एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है; शिक्षक के लिए यह और भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि उन्हें विद्यार्थियों के सीखने पर ध्यान देना होता है, और उसी के अनुरूप अपनी शिक्षण रणनीति में परिवर्तन करना पड़ता है, विशेष रूप से विज्ञान की कक्षाओं में जहाँ अवधारणाएँ धीरे-धीरे विकसित होती हैं। एक नई शिक्षिका होने के कारण, मुझे इन दोनों कार्यों के साथ तालमेल बिठाना कठिन लगा। लेकिन कुछ ही महीनों के शिक्षण के बाद, हमारे विद्यालय में आयोजित शिक्षक पेशेवर विकास सत्र के दौरान, मुझे कक्षा में अधिगम हेतु एग्ज़िट टिकट तकनीक का उपयोग करने के बारे में जानकारी मिली।

एग्ज़िट टिकट यह पता लगाने का एक सरल लेकिन विश्वसनीय तरीक़ा है कि विद्यार्थी को किसी विशेष पाठ की कितनी समझ प्राप्त हुई है। इसमें पाठ के अन्त में दो या तीन प्रश्न पूछे जाते हैं, और हर विद्यार्थी काग़ज़ की एक छोटी पर्ची पर उनके उत्तर लिखता है। इसके बाद शिक्षक इन्हें इकट्ठा कर लेते हैं, और बाद में देखते हैं। यह पाठ की समझ को शीघ्रता से परखने का एक अच्छा माध्यम है, और इसका स्वरूप काफ़ी हद तक अनुमानित होता है जिससे उत्तरों को भी जल्दी से जाँचा जा सकता है। विज्ञान की कक्षा में, जहाँ ग़लतफ़हमियों की सम्भावना अधिक होती है, एग्ज़िट टिकट से विद्यार्थी की प्रगति और समझ का पता चलता है जिससे उन ग़लतफ़हमियों को शीघ्र सुधारना आसान हो जाता है।

कार्यान्वयन

शुरू में, कक्षा में एग्ज़िट टिकट की रणनीति को लागू करना मुश्किल लगा था, क्योंकि प्रश्न सटीक लेकिन इतने छोटे होने चाहिए थे कि विद्यार्थी 3 से 5 मिनट के अन्दर उनके उत्तर दे सकें। इसके अलावा, चूँकि मेरी कक्षा के विद्यार्थी इस गतिविधि से अनजान थे, इसलिए उन्हें इसे समझने में कुछ समय लगा। लेकिन बाद में, जब उन्हें इसकी आदत हो गई, वे पाठ के अन्त में इसकी प्रतीक्षा करने लगे; यही नहीं, इनकी माँग भी करने लगे। शुरुआत में, मैंने अपनी सातवीं की विज्ञान कक्षा में एग्ज़िट टिकट के लिए दो प्रश्नों का इस्तेमाल किया : पहला, विद्यार्थी से यह पूछना कि उन्होंने कक्षा के दौरान क्या सीखा? जैसे—प्रकाश-संश्लेषण की मुख्य अवधारणा; और दूसरा, पढ़ाई गई विशेष विषयवस्तु से जुड़ा प्रश्न, जैसे—हरित वर्णक (क्लोरोफ़िल) की भूमिका। बाद में, उनकी वैज्ञानिक सोच को और गहरा करने के लिए ज़्यादा खुले और विश्लेषणात्मक प्रश्न शामिल किए गए।

सातवीं कक्षा के लिए एग्ज़िट टिकट के प्रश्नों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

1. पाठ : सजीवों में उत्सर्जन
प्रश्न : अगर हमारे शरीर में उत्सर्जी पदार्थ जमा होने लगें तो क्या होगा?

2. पाठ : कंकाल तंत्र, जोड़ और माँसपेशियाँ
प्रश्न : सोचिए कि अगर इनसान में अलग-अलग कशेरुकाओं (vertebrae) के बजाय एक ही लम्बी रीढ़ की हड्डी होती तो क्या होता? इसका हमारे संचलन पर क्या असर पड़ता?

3. पाठ : संचलन और गमन
प्रश्न : क्या आप बता सकते हैं कि अंकुरित होता हुआ बीज प्रकाश की तरफ़ क्यों बढ़ता है?

चित्र 1 : एग्ज़िट टिकट के माध्यम से आपस में अपनी समझ का परीक्षण करते विद्यार्थी

इसे व्यवहार में देखना

यह देखना एक दिलचस्प बात है कि किसी आम विषय पर विद्यार्थियों की सोच एक जैसी होते हुए भी कितनी अनोखी हो सकती है। विज्ञान की कक्षा में यह बात बहुत काम की होती है, क्योंकि विद्यार्थी अकसर घटनाओं को अलग-अलग नज़रिए से समझते हैं। उदाहरण के लिए, जब मैंने पूछा, "अगर हमारे शरीर में उत्सर्जी पदार्थ जमा होने लगें तो क्या होगा?" तो एक विद्यार्थी ने बताया, "अगर हमारे शरीर में उत्सर्जी पदार्थ जमा हो जाएँ तो हमें कई बीमारियों का सामना करना पड़ेगा।" दूसरे विद्यार्थियों ने इसके कार्य पर ध्यान दिया और कहा, "अगर हमारे शरीर में उत्सर्जी पदार्थ जमा हो जाएँ तो हमारा शरीर उन्हें बाहर निकाल देगा।" (चित्र 2 और 3) दोनों ही उत्तर तकनीकी रूप से सही थे, और अलग-अलग नज़रिए को दिखाते थे। एक तरफ़ सेहत पर असर, और दूसरी तरफ़ अंगों का कार्य। इस प्रकार, यह विविधता बताती है कि प्रश्न ऐसे होने चाहिए जिनके शब्द एकदम सटीक हों, और जिनका एक ही सही उत्तर हो ताकि आकलन आसान हो सके, और ग़लतफ़हमियों को दूर करते समय स्पष्टता बनी रहे।

रोज़ इस तरह के प्रश्नों के उत्तर देने से विद्यार्थियों को अपने विचारों को बेहतर ढंग से व्यवस्थित करने, और ज़्यादा वैज्ञानिक तरीक़े से सोचने में मदद मिलती है। यहाँ प्रश्न-उत्तर के दो उदाहरण और देखें–

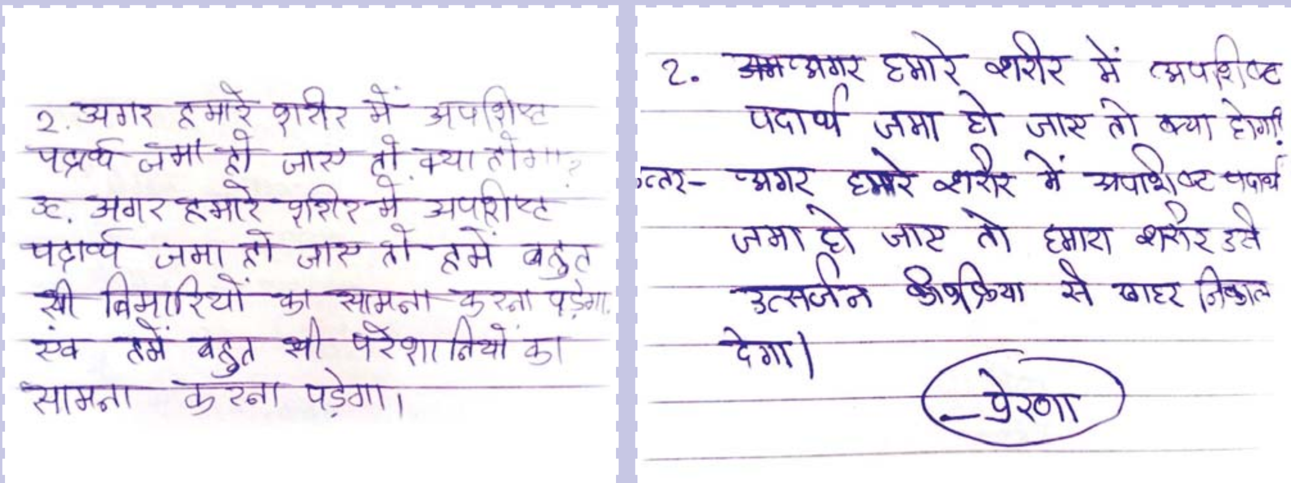
2. अगर हमारे शरीर में अपशिष्ट पदार्थ जमा हो जाए तो क्या होगा?
उ. अगर हमारे शरीर मे अपशिष्ट पदार्थ जमा हो जाए तो हमें बहुत सी बिमारियों का सामना करना पड़ेगा. एवं हमें बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

2. अगर हमारे शरीर में अपशिष्ट पदार्थ जमा हो जाए तो क्या होगा!
उत्तर- अगर हमारे शरीर में अपशिष्ट पदार्थ जमा हो जाए तो हमारा शरीर इसे उत्सर्जन प्रक्रिया से बाहर निकाल देगा।
—प्रेरणा

चित्र 2 : किसी प्रश्न के एक से अधिक उत्तर हो सकते हैं। दोनों उत्तर आंशिक या पूर्ण रूप से सही हो सकते हैं। आवश्यक है कि विद्यार्थियों को उत्तर सोचने और बताने के लिए प्रेरित किया जाए। कई बार एक ही विद्यार्थी से प्रश्न के उत्तर का दूसरा विकल्प सोचने के लिए कहा जा सकता है।

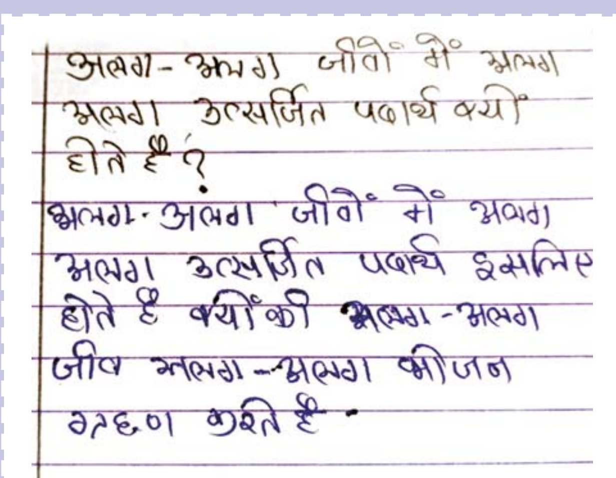
अलग-अलग जीवो में अलग अलग उत्सर्जित पदार्थ क्यों होते है?
अलग-अलग जीवों में अलग अलग उत्सर्जित पदार्थ इसलिए होते है क्योंकी अलग-अलग जीव अलग-अलग भोजन ग्रहण करते है।

चित्र 3 : यहाँ पर सोचने का एक नया तरीक़ा देखने को मिलता है जिसमें विद्यार्थी ने खाए गए भोजन, और शरीर से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थ के प्रकार के बीच सम्बन्ध जोड़ा है। शिक्षक अगले पाठ के दौरान इस विषय पर चर्चा कर सकते हैं।

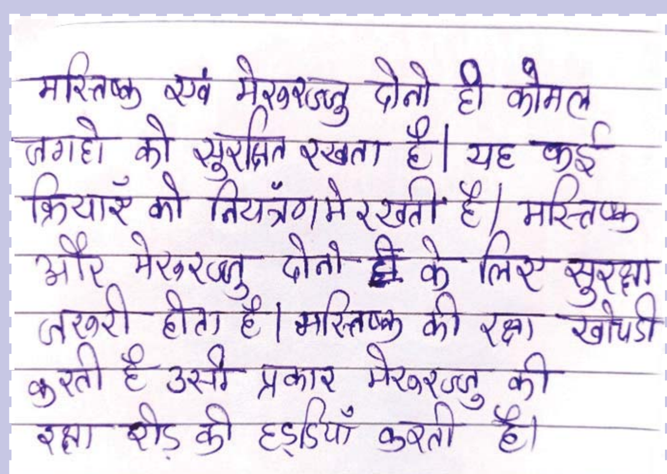
मस्तिष्क एवं मेरुरज्जु दोनो ही कोमल जगहो को सुरक्षित रखता है। यह कई क्रियाएँ को नियंत्रण मे रखती है। मस्तिष्क और मेरुरज्जु दोनो के लिए सुरक्षा जरुरी होता है। मस्तिष्क की रक्षा खोपडी करती है उसी प्रकार मेरुरज्जु की रक्षा रीढ़ की हड्डियाँ करती है।

चित्र 4 : यहाँ पर एक ग़लतफ़हमी और ग़लत वाक्य संरचना दिखाई देती है। दो अवधारणाओं को मिला दिया गया है। इसे अगले पाठ में स्पष्ट किया जा सकता है।

तालिका 1 : पाठ योजना में ही एग्ज़िट टिकट शामिल करना।

पाठ	विषय	अन्त:क्रिया	गतिविधि	टीएलएम (शिक्षण अधिगम सामग्री)
4	पैर और घुटने की हड्डियाँ	जाँघ की हड्डी (उरु अस्थि) सबसे लम्बी और सबसे मज़बूत हड्डी होती है–इस पर चर्चा करें।	हड्डी की बनावट को समझने के लिए पैर के अलग-अलग हिस्सों को पहचानें और हिलाएँ।	पैर की हड्डियों और घुटने के चित्र।
	जोड़	घुटना फलक (नी-कैप) घुटने के जोड़ की सुरक्षा करता है।	जोड़ों की जगह और उनका संचलन।	मानव कंकाल का मॉडल।
		कन्दुक खल्लिका सन्धि (बॉल-एंड-सॉकेट जॉइंट) और क़ब्ज़ा सन्धि (हिंज जॉइंट) पर चर्चा।	एग्ज़िट नोट–अगर हमारे जोड़ लचीले न होते तो क्या होता?	पाठ्यपुस्तक।

कुछ विचार

एग्ज़िट टिकट की प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण भाग विद्यार्थियों को उनके उत्तरों पर निरन्तर फ़ीडबैक प्रदान करना है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि कक्षा में विद्यार्थियों की शंकाओं और ग़लतफ़हमियों का निवारण किया जाए ताकि आगे बढ़ने पर उन्हें अवधारणा की सटीक समझ मिल सके।

इसे प्रतिदिन की पाठ योजना में 3 से 5 मिनट के लिए शामिल करना आवश्यक है ताकि यह नियमित कार्य का एक स्वाभाविक हिस्सा बन सके। अपनी पाठ योजना के ऊपरी भाग में, मैंने एग्ज़िट टिकट को अलग से शामिल किया है। (देखें चित्र 5)

चूँकि प्रत्येक विद्यार्थी को उत्तर लिखना पड़ता है, इसलिए यह उन विद्यार्थियों की सहायता करता है जो कक्षा की गतिविधियों में भाग लेने में संकोच करते हैं, या झिझकते हैं। जब कक्षा में उनकी ग़लतफ़हमियों को इस प्रकार से सुलझाया जाता है तो उन्हें ग़लत उत्तर देने पर बुरा नहीं लगता; और जब वे सही तथा पूर्ण उत्तर लिखते हैं तो हम कक्षा में उस उत्तर की सराहना कर सकते हैं।

चुनौतियाँ

1. समय का प्रबन्धन

45 मिनट के कालखण्ड के दौरान 3 से 5 मिनट का समय निकालना कठिन हो सकता है, विशेषकर तब जब किसी गतिविधि में निर्धारित समय से अधिक समय लग जाए। शुरू में इसमें तालमेल बिठाने में मुश्किल हुई, लेकिन अब मैं पाठ योजना बनाते समय एग्ज़िट टिकट के लिए भी थोड़ा अतिरिक्त समय रख लेती हूँ।

2. प्रश्न बनाना

सटीक और सरलता से जाँच योग्य प्रश्न तैयार करने में मुझे थोड़ा समय लगा। उदाहरण के तौर पर, "हार्मोन विकास और वृद्धि को कैसे प्रभावित करते हैं?" जैसे प्रश्न से कई बार सही मगर अस्पष्ट उत्तर मिल सकते हैं। लेकिन अगर इस प्रश्न को बदलकर, "ऑक्सिन हार्मोन, पौधे के तने की वृद्धि और विकास को कैसे प्रभावित करता है, विशेषकर फ़ोटोट्रोपिज़्म के सन्दर्भ में?" कर दिया जाए तो इससे एक विशिष्ट और आसानी से जाँचा जा सकने वाला उत्तर प्राप्त होता है।

3. विद्यार्थी अनुकूलन

इस अभ्यास के प्रारम्भ में, कई विद्यार्थियों को निर्धारित समय के भीतर अपने वैज्ञानिक विचारों को व्यक्त करने में कठिनाई हुई। इस समस्या के समाधान हेतु कुछ शुरुआती पाठों में सरल प्रश्न रखे गए, फिर धीरे-धीरे प्रश्नों की जटिलता को बढ़ाया गया।

> **"मैंने महसूस किया है कि जब से मैंने एग्ज़िट टिकट तकनीक का प्रयोग शुरू किया है, और प्राप्त प्रतिक्रियाओं के अनुसार आगामी पाठों की रूपरेखा तैयार की है, तब से मेरी विज्ञान की कक्षा का वातावरण काफ़ी जीवन्त हो गया है।"**

मिलने वाले लाभ

1. एकाग्रता भंग होने से बचाना

कक्षा के अन्तिम कुछ मिनटों में, जब विद्यार्थियों का ध्यान कम होने लगता है तब यह गतिविधि उनकी सहभागिता बनाए रखती है, और सीखे गए विषय को पुनः सुदृढ़ करने में सहायता करती है।

2. शिक्षक को विद्यार्थियों की सोच से जोड़े रखना

इससे शिक्षक को विद्यार्थियों के सोचने की प्रक्रिया, और उनकी ग़लतफ़हमियों के बारे में पता चलता है जिन्हें अगले पाठ में दूर किया जा सकता है।

3. पाठ्यक्रम के तालमेल को बेहतर बनाना

यह तरीक़ा इस बात को जाँचने का एक बढ़िया माध्यम है कि सीखने के उद्देश्यों को प्राप्त किया गया है या नहीं। यदि विद्यार्थियों को ऊष्मा के स्थानान्तरण जैसी किसी ख़ास अवधारणा को समझने में कठिनाई होती है तो उस विषय को अधिक प्रभावी ढंग से समझाने के लिए एक व्यावहारिक गतिविधि की योजना बनाई जा सकती है।

4. तुरन्त फ़ीडबैक देना

विद्यार्थियों को तुरन्त फ़ीडबैक दिया जा सकता है। इससे सही समझ पक्की होती है, और ग़लतियाँ सुधारी जा सकती हैं।

ध्यान रखने वाली बातें

1. विविध प्रकार के प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ), सही या ग़लत, और लघु उत्तर वाले प्रश्नों जैसे अलग-अलग तरह के प्रश्न शामिल किए जा सकते हैं। विद्यार्थियों से कुछ अवधारणाओं पर अपनी समझ लिखने को कहा जा सकता है जिससे शिक्षक उनकी सोच का अधिक बेहतर तरीक़े से आकलन कर सकते हैं। (चित्र 6)

2. साथियों से सीखने का माध्यम

यह तरीक़ा साथियों से सीखने का एक प्रभावशाली माध्यम भी हो सकता है। विद्यार्थी छोटे समूहों में अपने उत्तर साझा कर सकते हैं, उनकी जाँच कर सकते हैं, और तुलना कर सकते हैं। इससे समझ विकसित करने के लिए मिलकर काम करने की भावना बढ़ती है, और सीखी हुई बातें लम्बे समय तक याद रहती हैं।

3. विविध प्रकार के उत्तर

विद्यार्थियों को उनकी क्षमताओं के अनुसार उत्तर देने की स्वतंत्रता देने से सीखने की विभिन्न शैलियों का ध्यान रखने में सहायता मिलती है। लेखन कौशल में निपुण विद्यार्थी विस्तारपूर्वक उत्तर लिख सकते हैं, जबकि सीमित क्षमता वाले विद्यार्थी सरल उत्तर लिख सकते हैं। दोनों के उत्तर सही माने जाते हैं।

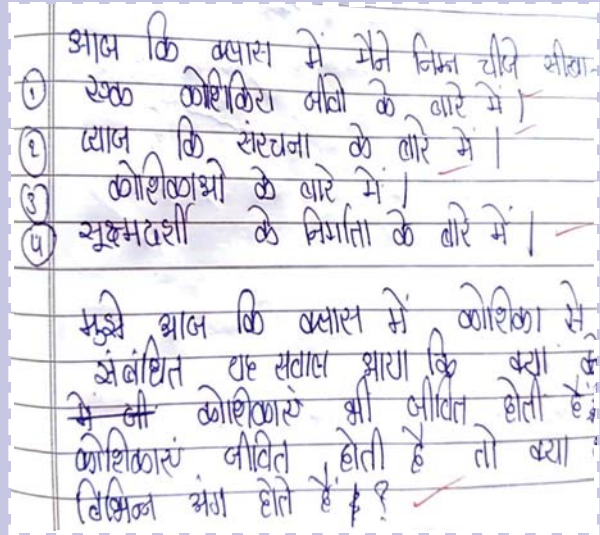

चित्र 5 : जब कक्षा में यह प्रश्न किया गया कि आपने क्या सीखा? तब आठवीं कक्षा के एक विद्यार्थी ने अपने उत्तर के साथ एक प्रश्न भी रखा। इस प्रश्न का उत्तर अगली कक्षा में दिया गया। इससे उस विद्यार्थी को यह अनुभव हुआ कि वह पढ़ाने और सीखने की प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

निष्कर्ष

मैंने महसूस किया है कि जब से मैंने एग्ज़िट टिकट तकनीक का प्रयोग शुरू किया है, और प्राप्त प्रतिक्रियाओं के अनुसार आगामी पाठों की रूपरेखा तैयार की है, तब से मेरी विज्ञान की कक्षा का वातावरण काफ़ी जीवन्त हो गया है। यह तकनीक शिक्षण और समझ के बीच की दूरी को कम करने में एक बेहतरीन साधन साबित हुई है जिससे कई तरह की वैज्ञानिक अवधारणाओं को समझना आसान हो जाता है। ग़लतफ़हमियों को सुलझाकर, विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाकर, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करके, इस तकनीक ने सीखने-सिखाने की इस प्रक्रिया को विद्यार्थियों और शिक्षकों, दोनों के लिए एक सरल व समृद्ध अनुभव बना दिया है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

अश्लेषा शर्मा छत्तीसगढ़ के धमतरी स्थित अज़ीम प्रेमजी स्कूल में मिडिल और सेकेंडरी कक्षाओं के विद्यार्थियों को विज्ञान पढ़ाती हैं। उन्हें विज्ञान पढ़ाना काफ़ी रोमांचक तथा सन्तोषजनक लगता है, और वे विद्यार्थियों की जिज्ञासा एवं उनके प्रश्नों के माध्यम से अवधारणाओं को समझने-समझाने का आनन्द लेती हैं।

सम्पर्क : aslesha.sharma@azimpremjifoundation.org

तुलना की अवधारणा : गणितीय समझ का आधार

मुकेश मालवीय

क्या 'गणित' को समझने में तुलना का कौशल प्रभावी हो सकता है? अपने इस प्रश्न पर विचार करते हुए लेखक गणित की कुछ चयनित अवधारणाओं में तुलना के मायने खोजते हैं। अपने कक्षा अनुभवों के आधार पर वे दर्शाते हैं कि बहुत-सी गणितीय अवधारणाओं को समझने, उनकी व्याख्या करने में तुलना की अवधारणा की समझ एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

एक दिन मैं स्वयं के लिए इन प्रश्नों को समझने की कोशिश कर रहा था–

जो शब्द हम बोलते हैं या समझ पाते हैं, उनके अर्थ हमारे पास कैसे आए होंगे?

बोली या सुनी बात के अर्थ निर्माण की प्रक्रिया क्या है?

उदाहरण के लिए, यदि मैं कहूँ कि "मुझे रास्ते में कुत्ता दिखा", इस वाक्य में 'रास्ते' या 'कुत्ता' शब्द का मतलब क्या है? अलग तरह से कहूँ तो इन शब्दों को बोलने या सुनने से, बोलने वाले या सुनने वाले के संज्ञान में किस तरह की छवि या अर्थ बनता है? और यही अर्थ क्यों बना?

थोड़ा चिन्तन करने पर यह समझ आता है कि शायद हमने शब्दों (ध्वनियों) पर अर्थों का आरोपण किया है। कुत्ता शब्द का अर्थ इससे सम्बन्धित मेरे कई सारे अवलोकनों व सूचनाओं से मेरे पास बना है। इनमें आवाज़, आकार, कई अलग-अलग छवियाँ, अलग-अलग समय पर इस शब्द के उपयोग को सुनने या बोलने के अनुभव से बने विभिन्न सम्बन्ध, आदि शामिल हैं। इन सभी तरह की छवियों, जानकारियों, अनुभवों से मिलकर मेरे लिए 'कुत्ता' शब्द की एक अवधारणा बनी है। जब भी मैं इस शब्द को सुनता हूँ या बोलता हूँ, मैं इसके एक विशेष अर्थ, जो इस शब्द को बोलने, सुनने, लिखने वाले अन्य व्यक्तियों के लिए भी लगभग वही या वैसा ही है, को ग्रहण करता हूँ। हम बहुत-से ऐसे शब्दों का इस्तेमाल भी करते हैं जिनके लिए हमारे पास कोई ठोस छवियाँ तो नहीं हैं, पर उन शब्दों से जुड़े सन्दर्भ और अनेक अनुभव हैं जो उस शब्द के अर्थ / अवधारणा का हमें एहसास कराते हैं।

तो एक मोटा निष्कर्ष यह बन सकता है कि किसी शब्द का अर्थ उस शब्द पर एक या दो सूचनाओं या जानकारियों से नहीं बना, बल्कि उस शब्द से जुड़े हमारे तरह-तरह के अनुभवों या अर्थों के आरोपण के मौक़ों या अनुभवों के बाद बना है।

अब यहीं हम उन शब्दों या अवधारणाओं पर विचार करें जो विद्यालय में किसी विषय के अन्तर्गत विद्यार्थियों में पढ़ने-सुनने को मिलती हैं। उदाहरण के लिए, गणित में इकाई, दहाई, परिमाप, स्थानीय मान, क्षेत्रफल, आदि। विद्यार्थियों को इस तरह

चित्र 1 : गणित में शब्द, चित्र और अवधारणा एक दूसरे से गहरे से जुड़े हैं

के शब्द विद्यालय से बाहर की दुनिया में कम या बिल्कुल सुनने को नहीं मिलते हैं। इन शब्दों के अर्थ बनाने में विद्यार्थियों को शिक्षक और पाठ्यपुस्तक के साथ संवाद पर ही निर्भर होना होता है। तब यह मोटा निष्कर्ष जो हम बना रहे थे कि "किसी शब्द का अर्थ उस शब्द से बारे में तरह-तरह के अनुभवों के बाद बनता है", यहाँ शिक्षकों के लिए चिन्तन की एक जगह खुलती है। विषयगत अवधारणाओं के लिए जो शब्द हैं उनका अनुप्रयोग और अनुभव विद्यार्थियों के विद्यालयी जीवन में काफ़ी विरल है। जैसे-जैसे इनके बारे में अनुभव बढ़ता है, अवधारणाओं की स्पष्टता भी बढ़ती जाएगी।

गणतीय सन्दर्भों में शब्दों और अवधारणाओं की व्याख्या

दैनिक जीवन में या विद्यालय के बाहर जिन शब्दों या अवधारणाओं का हम इस्तेमाल करते हैं, उनके लिए कोई हमसे किसी अवधारणा की व्याख्या नहीं करवाता। कोई हमसे यह नहीं कहता कि कुत्ता क्या होता है, या इसकी क्या परिभाषा है? शब्द का इस्तेमाल या उसे सुनकर थोड़ा कम-ज़्यादा समझ लेने से काम चल जाता है। व्याख्या की भाषा के लिए कुछ अतिरिक्त कौशल की ज़रूरत होती है। जैसे, यहाँ गणित विषय को समझने

चित्र 2 : भाषा में जटिल अवधारणाओं के निर्माण को समझने के लिए पास और दूर को दर्शाता एक चित्र

और उसकी व्याख्या करने के लिए एक आवश्यक कौशल की बात करते हैं।

गणितीय शब्दावली वाले कुछ शब्दों की समझ को टटोलने के लिए, मैंने कक्षा 6 के विद्यार्थियों के साथ कम-ज़्यादा, दूर-पास, आदि जैसी शुरुआती अवधारणाओं को लेकर बातचीत शुरू की। उनसे कहा, "एक पास की वस्तु और एक दूर की वस्तु का नाम बताओ"? विद्यार्थी उनके पास और उनसे दूर की वस्तुओं के नाम पूरे वाक्य में बताने लगे। जैसे—मेरा घर पास है, महेश का घर दूर है; रीना मेरे पास बैठी है, अंशिता मुझसे दूर बैठी है; आदि। इस बीच, मैं सवाल करता रहा कि पास का क्या मतलब है, और दूर का क्या मतलब है? एक विद्यार्थी ने कहा, "लड़कियों का छात्रावास विद्यालय से पास है, और लड़कों का छात्रावास विद्यालय से दूर है। लड़कियों के छात्रावास तक जल्दी पहुँच सकते हैं, और लड़कों के छात्रावास जाने में देर लगेगी।" मैंने पूछा, "लड़कों के छात्रावास तक जाने में देर क्यों लगेगी?" जवाब था, "वो दूर है।"

मैंने फिर पूछा, "यह दूरी क्या है?" एक विद्यार्थी ने कहा, "दूरी किलोमीटर है।" कुछ ने कहा, "मीटर है।" वहीं एक अन्य ने दूरी को लम्बाई बताया। हम किसी निष्कर्ष पर पहुँचते, तभी स्मिता ने कहा, "लड़कियों के छात्रावास जल्दी पहुँचेंगे, और लड़कों के छात्रावास पहुँचने में देर लगेगी।" मैंने पूछा, "क्यों?" उसने कहा, "दूरी अधिक है तो समय ज़्यादा लगेगा, और दूरी कम है तो समय कम लगेगा।"

क्या हम दूरी की तुलना कर रहे हैं? यहाँ हमने पास और दूर की कोई सुस्पष्ट परिभाषा नहीं बनाई, पर हमारी समझ में यह आया कि पास और दूर को समझने के लिए जो अनकही समझ काम कर रही है वह तुलना की समझ है। हम पास और दूर शब्द को दूरी या वहाँ तक पहुँचने में लगने वाले समय की तुलना के आधार पर बताने की कोशिश कर रहे हैं।

मेरे लिए बच्चों की यह समझ महत्त्व रखती है। गणितीय सन्दर्भों में कुछ शब्दों और अवधारणाओं की व्याख्या के लिए तुलना की समझ (कौशल) की आवश्यकता होती है।

मैंने इन विद्यार्थियों से अगला प्रश्न किया, "इस कमरे में कितने विद्यार्थी बैठे हैं?" विद्यार्थियों ने गिनकर कहा, "38 विद्यार्थी हैं। इनमें 20 लड़कियाँ और 18 लड़के हैं।"

फिर कहा, "यानी लड़कियाँ ज़्यादा हैं और लड़के कम! अब बताओ यहाँ ज़्यादा का क्या मतलब है, और कम का क्या?" उत्तर था, "20 ज़्यादा होता है, 18 कम।" मैंने पूछा, "20 में क्या ज़्यादा है? या यह बताओ कि 20 का मतलब क्या है?" हम कुछ देर इस तरह उलझते रहे। हमें यह तो शायद पता था कि ज़्यादा और कम के क्या-क्या मायने हैं, पर इस तरह हमने कभी किसी शब्द का विश्लेषण और व्याख्या नहीं की थी। मैंने स्वयं से पूछा, "किसी भी संख्या का मतलब क्या है? जैसे 45, अगर हम दूसरी संख्या से इसकी तुलना न भी करें तब भी 45 का अर्थ तभी बनेगा जब हम इसमें समाहित 1 को 45 बार देखें, या इसे किसी

और समूह (दहाई और इकाई) में समझें। मैं इस निर्णय पर पहुँचा कि संख्याओं की समझ का मसला असल में तुलना की समझ को अपनाकर ज़्यादा अर्थवान हो सकता है। अब विद्यार्थियों के साथ मेरे संवाद की दिशा यह थी कि किसी संख्या को समझने और बताने के लिए उस संख्या में निहित मात्रा की तरफ़ उनका ध्यान जाए। इसी तरह संख्याओं में जोड़-घटा, गुणा-भाग जैसी संक्रियाओं के सवाल या उदाहरणों को लेकर उनमें संख्या और संक्रिया के बाद के प्रतिफल को भी तुलना का आधार लगाकर उन्हें व्यापक अर्थ देने के संवाद कक्षा में हुए।

भिन्न संख्या को तुलना की समझ से समझना

भिन्न संख्याओं के लिए मूल प्रश्न है, किसी इकाई के किसी टुकड़े / हिस्से को हम क्या कहें? हम एक से बड़ी सभी संख्याओं को एक की समझ से तुलना करके समझते हैं। क्या इसी तरह एक से तुलना की समझ को आधार बनाकर उसके किसी टुकड़े या हिस्से की भी समझ बना सकते हैं? मैंने विद्यार्थियों के बीच यह समस्या रखी। उन्हें चॉक दिखाकर कहा कि यह एक चॉक है, फिर एक और चॉक ली और कहा कि यह दो चॉक हैं। अब मैंने एक चॉक को तोड़ दिया, और उस टुकड़े को दिखाकर पूछा कि यह कितनी चॉक हैं? यह एक टुकड़ा चॉक है। मैंने पूछा, "यदि हम इसे संख्या की तरह ही बताना चाहें तो इसे क्या कहेंगे? इसे एक तो कह नहीं सकते क्योंकि हमने पूरी चॉक को एक कहा है।" एक विद्यार्थी ने कहा, "यह आधे से कम है।" तब मैंने एक दूसरी चॉक लेकर उसे आधा कर दिया, और पूछा, "यह टुकड़ा कितना है?" विद्यार्थियों ने कहा, "आधा है।" "अब बताओ, आधा क्या होता है?" हमने समझा कि चॉक के दो बराबर टुकड़े मिलकर पूरी एक चॉक बनाते हैं। इसलिए यह एक टुकड़ा आधा है।

चित्र 3 : तुलना की समझ को आधार बनाकर सन्दर्भित सामग्री से भिन्न को समझना (चरण 1)

अब वापस उस छोटे टुकड़े को लिया जो आधे से छोटा था। यह टुकड़ा कितना है? यह कैसे पता लगेगा? क्या इस टुकड़े को हमें पूरी चॉक पर जमाकर देखना चाहिए?

(अगर हम पहले से भिन्न को एक के कुछ बराबर हिस्से में से, किसी हिस्से के रूप में देखते आए हों तब एक मसला यह है कि वास्तविक जीवन में मापन यंत्रों के अतिरिक्त किसी इकाई का ऐसा बराबर हिस्सों में विभाजित कोई हिस्सा हमें नहीं मिलता।) समस्या इस तरह सामने आती है कि एक रोटी को खाना खाते समय हम एक निवाले के लिए जितना तोड़ते हैं, वह टुकड़ा कितना है। अगर हमें यह बताना हो कि यह रोटी का टुकड़ा कितना है, तब हम क्या करेंगे?

हम ठहरकर सोचेंगे तब शायद एक तरीक़ा हमें यह सूझेगा कि इस टुकड़े को मैं पूरी रोटी पर जमा कर देखता हूँ कि उस रोटी पर यह कितनी बार जम सकेगा। मान लीजिए यह टुकड़ा पूरी रोटी पर 13 बार जम सकता है तब हमारे पास एक जवाब है कि यह एक रोटी का 13वाँ हिस्सा है। यदि यह टुकड़ा पूरा-पूरा नहीं जमता, 12 बार जमाने पर रोटी का कुछ हिस्सा छूटा रहता है, और 13 बार में इस टुकड़े का कुछ भाग रोटी से बाहर हो जाता है तो यह एक नई समस्या है जो उस टुकड़े और रोटी की तुलना से हल नहीं हुई। अब फिर सोचना होगा कि क्या करें! विवेकशील चिन्तन से शायद हमें यह तर्क मिलेगा कि इस टुकड़े के दो बराबर हिस्से किए जाएँ, और एक हिस्से को पूरी रोटी पर जमाकर देखा जाए। अब यदि यह हिस्सा 25 बार में पूरी रोटी कवर कर लेता है तो हम कहेंगे इस टुकड़े का आधा हिस्सा पूरी रोटी के 25वें हिस्से के बराबर है।

इस प्रक्रिया का मुख्य आधार तुलना ही है। इस समझ को हम किन्हीं लिपि प्रतीकों या शब्द प्रतीकों पर आरोपित कर सकते हैं। जैसे, 1/13 या 2 पच्चीसवें हिस्से या कुछ और।

गणित के जानकार लोग इस पर सवाल उठा सकते हैं कि रोटी का टुकड़ा अनियमित आकार है, इसे रोटी पर कैसे जमाया जा सकता है; या इस टुकड़े के दो बराबर एक जैसे हिस्से तो हो नहीं सकते; या गणित शुद्धता और सटीक उत्तर का विषय है; आदि। मैंने अपनी कक्षा के हरेक विद्यार्थी को एक-एक काग़ज़ दिया, और पूछा, "आपके पास कितने काग़ज़ हैं?" सबने कहा, "एक है।" "यदि मैं इस तरह का एक और काग़ज़ आपको दूँ तब आपके पास कितने हो जाएँगे?" सबने कहा, "दो।" "अच्छा, अब सब अपने-अपने काग़ज़ में से एक टुकड़ा काग़ज़ फाड़ लो। अब आपको यह बताना है कि आपका टुकड़ा कितना है।" जब हम भिन्न को समझने के लिए संवाद और प्रक्रिया कर रहे थे, हमारे पास भिन्न को लेकर व्याख्या की एक भाषा बन रही थी।

मुझे विद्यालय में किसी वर्ग, आयत, त्रिभुज या चतुर्भुज का क्षेत्रफल निकालना सिखाया गया था जो प्रायः लम्बाई और चौड़ाई के गुणा के सूत्रों (जिनमें कुछ कोण आदि भी शामिल होते हैं) से निकाला जाता है। यहाँ क्षेत्रफल की व्याख्या और अर्थ, क्षेत्रफल शब्द पर ठीक से आरोपित नहीं किए गए थे। भुजाओं (लम्बाई और चौड़ाई) के गुणन से ही एक इकाई वाले वर्गाकार क्षेत्र का क्षेत्रफल मिलता है। एक इकाई वाले वर्गाकार क्षेत्र से उस त्रिभुज, चतुर्भुज या अन्य किसी दिए गए क्षेत्र की तुलना करना ही क्षेत्रफल निकालना है, मेरी यह

चित्र 4 : तुलना की समझ को आधार बनाकर परिवेशीय सामग्री से भिन्न को समझना (चरण 2)

समझ शिक्षक बनने के बाद विद्यार्थियों को समझने-समझाने के दौरान बनी।

क्या हम गणित की अन्य अवधारणाओं को भी तुलना के इस नज़रिए से परख सकते हैं? सोचिएगा! मैंने पहले कभी गणित को इस तरह से नहीं समझा था। मेरा मानना है सूत्र और यांत्रिक तरीक़ों से सवाल हल करने से उत्तर आते हैं, समझ या व्याख्या की भाषा कम ही आती है।

लोक जीवन में भी व्याख्या की भाषा है

अभी हाल ही में, मैं एक भीड़ भरी ट्रेन में खड़े-खड़े यात्रा कर रहा था। मेरे पीछे दो दोस्त आपस में बात कर रहे थे। एक दोस्त, जो कहीं से एक क़िला देखकर आ रहा था, अपने दोस्त को उस क़िले के बारे में बता रहा था। वह बोला, "वो क़िला बहुत बड़ा था।" दूसरे ने सवाल किया, "कितना बड़ा?" दोस्त ने कहा, "अब तुझे कैसे बताऊँ! देख, ये जो ट्रेन का एक डिब्बा जितना बड़ा है, अगर इतने बड़े तीन डिब्बे जोड़ दें तो वह क़िला इतना तो लम्बा रहा होगा, और लगभग 5 डिब्बों की लम्बाई के बराबर उसकी चौड़ाई रही होगी। इतना बड़ा था वह क़िला, समझे? उसके दोस्त के साथ मुझे भी समझ में आ गया कि क़िला कितना बड़ा होगा। मैं सोच रहा था कि यदि वह दोस्त यह बोलता कि क़िले का क्षेत्रफल लगभग 95-96 हज़ार वर्ग फ़ुट रहा होगा। तब क्या दोस्त या मैं इस बात का कोई एहसास बना पाते कि वह क़िला कितना बड़ा है!

मुकेश मालवीय एक सरकारी विद्यालय में शिक्षक हैं। अपनी शिक्षण प्रक्रियाओं को प्रभावी बनाने के लिए शैक्षिक विषयवस्तु और विधियों का विश्लेषण करते रहते हैं। साथ ही, अपनी कक्षा के अनुभवों और विषयों की समझ पर लेखन करते रहते हैं। आप एनसीईआरटी द्वारा संचालित गणित की पाठ्यपुस्तकों के लेखन में शामिल रहे हैं।

सम्पर्क : mukeshmalviya15@gmail.com

मनीषा को लिखना आ गया तो मैं भी पास हो गई

अफ़रोज़ जहाँ

मैं भोपाल के बैरसिया ब्लॉक के अन्तर्गत आने वाले ग्राम मोतिया खेड़ा के प्राथमिक विद्यालय में 2021 से कार्यरत हूँ। देखा जाए तो गाँव से 3 किलोमीटर के दायरे में न तो कोई आँगनवाड़ी है न ही कोई अन्य शिक्षण केन्द्र। एकमात्र हमारा विद्यालय ही है जहाँ गाँव के अधिकांश बच्चे पढ़ने आते हैं। मुझे कक्षा तीसरी से पाँचवीं तक के विद्यार्थियों को पढ़ाने की ज़िम्मेदारी दी गई है। पढ़ाने के दौरान समझ आया कि कक्षा तीसरी में पढ़ने वाले विद्यार्थी अन्य कक्षाओं की अपेक्षा लिखने और पढ़ने, दोनों ही में पिछड़े थे। मुझे समझने में थोड़ा समय लगा कि इन विद्यार्थियों को पढ़ने-लिखने के अवसर कम मिले हैं, इसलिए इनकी बुनियादी शिक्षा कमज़ोर रह गई।

कक्षा के अन्य विद्यार्थियों की तुलना में इस कक्षा में पढ़ने वाली मनीषा काफ़ी पीछे थी। उसका भाई संदीप भी कक्षा चौथी का छात्र था। जहाँ संदीप को पढ़ने में कठिनाई होती थी, वहीं मनीषा को पढ़ने के साथ लिखने में भी दिक़्क़त आती थी। वह उल्टे अक्षर बनाती थी। मैं कक्षा के बाक़ी विद्यार्थियों की तरह ही कक्षा शिक्षण के बाद उसे गृहकार्य देती। पर मुश्किल यह थी कि वह कभी भी काम करके नहीं लाती। उसके परिवार से बात की तो मालूम हुआ कि वह घर पर बस्ता ही नहीं खोलती। समझाने का उस पर कोई असर नहीं होता। मैंने अपने स्तर पर कई बार उससे बात की, पर उसका जवाब होता, "मैडमजी, मैं होमवर्क करना चाहती हूँ, पर मुझसे होता ही नहीं है। मैं सीधा लिखने का सोचती हूँ, पर उल्टा ही लिखा जाता है!"

ऐसा वक़्त भी आया जब मनीषा के रोज़ाना के इस बर्ताव पर कक्षा के अन्य विद्यार्थी उसका मज़ाक़ उड़ाने लगे। पर उसे कुछ भी बोलो, वह मुस्कुरा देती। उसकी प्यारी-सी मुस्कान देखकर मेरा ग़ुस्सा भी शान्त हो जाता। मैं भी मुस्कुरा देती। साथी शिक्षक कहते, "मैडम, आप मुस्कुराती क्यों हैं? ऐसे तो यह और नहीं लिखेगी!" पर मेरा मानना है कि बच्चों को सज़ा से नहीं सुधारा जा सकता। स्नेहपूर्ण व्यवहार ही बच्चों को सहज बनाता है, और उनके सीखने में मदद करता है।

ख़ैर, कक्षा के बाक़ी विद्यार्थियों को छोटी-छोटी कहानी की किताबें, सरल टेक्स्ट पर काम करने को देती, वहीं मनीषा को लिखने के मौक़े ज़्यादा देती। मध्य प्रदेश राज्य की पहली कक्षा की पुस्तक *भाषा भारती* से प्रतिदिन उसे अभ्यास कराती, और सरल कहानियों की किताबें पढ़ने के लिए देती। मनीषा को खेलना और कहानी सुनना अच्छा लगता था तो मैंने भी उसे सिखाने के दौरान इन्हीं तरीक़ों को प्राथमिकता में रखा। मुझे और कक्षा के विद्यार्थियों को हैरानी तब हुई जब वह इन पुस्तकों को बिना अटके अच्छे से पढ़ने लगी। उसने रोज़ाना अपनी इस समस्या पर काम किया। मनीषा का भाई संदीप भी धाराप्रवाह पढ़ने लगा। वे मौन वाचन करते, जोड़ी में पढ़ते तो कभी समूह में। इस प्रक्रिया से उनका पढ़ना बेहतर होता गया।

जब कभी मुझे कक्षा 1 एवं 2 के विद्यार्थियों को पढ़ाने का काम मिलता, समूह कार्य की प्रक्रिया में मनीषा को भी शामिल कर लेती। वह बोर्ड पर अक्षर लिखती और दूसरे विद्यार्थी उनकी पहचान करते। इस काम में मनीषा के साथ छोटे विद्यार्थियों को भी मज़ा आता था। कभी विद्यार्थियों के साथ हवा में अक्षर / अंक बनाना, कभी एक दूसरे के हाथ पर उँगली से लिखना तो कभी मिट्टी व रेत पर यही प्रक्रिया करने का काम दोहराती। इसे मनीषा और छोटे विद्यार्थी रुचिपूर्वक करते। एक दिन मनीषा बोली, "मैडम, मैं भी बच्चों को पढ़ा सकती हूँ!" यह कहते समय उसकी आँखों में अलग ही चमक थी। धीरे-धीरे उसकी लिखावट सुधरने लगी। उसे कक्षा 1 एवं 2 की *अंकुर अभ्यास पुस्तिका* दीं। इनमें लिखने का कार्य उसने किया। विद्यार्थियों के स्तर में सुधार देखते हुए उन्हें हिन्दी / अँग्रेज़ी के शब्द बोर्ड पर लिखने का काम देने लगी। चूँकि विद्यार्थी चित्र की ओर जल्दी आकर्षित होते हैं, इसलिए कभी बोर्ड पर चित्र बना देती, जिसका शीर्षक वे लिखते। सही लिखने पर विद्यार्थी एक दूसरे के लिए ताली बजाते और ग़लत लिखने पर मदद करते। साल के अन्त तक आते-आते मनीषा सही शब्दों को लिखने के साथ ही पढ़ना-लिखना भी काफ़ी हद तक सीख गई थी। जब उसके शब्द सीधे होने लगे तो लिखने में भी उसकी रुचि अपने-आप बढ़ती गई।

इससे पहले मनीषा प्राय: संदीप के साथ ही पढ़ती-लिखती दिखती। कक्षा के अन्य विद्यार्थियों से भी उसकी दोस्ती होने लगी। एक दिन काम पर जाते समय उसके मम्मी-पापा मिलने आ गए। उन्हें ख़ुशी थी कि उनके बच्चे उन्हें किताब पढ़कर सुनाते हैं, नाम लिखकर बताते हैं। बच्चों को नियमित विद्यालय भेजने में उनका भी बड़ा सहयोग रहा।

कक्षा 5वीं के विदाई समारोह (फ़ेयरवेल पार्टी) के समय मनीषा ने सुन्दर लिखावट में विद्यार्थियों के लिए कार्ड बनाए। विद्यार्थी कार्ड पाकर ख़ुश थे। उन्होंने मनीषा को 'थैंक्स' कहा। मनीषा वैसे ही मुस्कुरा दी जैसे वह मुस्कुराती थी।

इस स्तर तक पहुँचने के पड़ाव बेशक कई थे। समय काफ़ी लगा, पर तसल्ली है कि मेरी मेहनत व्यर्थ नहीं गई। विद्यार्थी पढ़ने की उम्मीद लेकर विद्यालय आते हैं, और मैं उनकी इस उम्मीद पर काम कर पा रही हूँ। मनीषा को सिखाने के दौरान मेरा सीखना-समझना भी एक उपलब्धि ही है।

अफ़रोज़ जहाँ, प्राथमिक विद्यालय मोतिया खेड़ा, विकासखण्ड बैरसिया, भोपाल, मध्य प्रदेश

दिनचर्या कार्यपत्रक : एक छोटी पहल, बड़ा बदलाव

संतोष कुमार निर्मलकर

ग्रामीण क्षेत्रों में अकसर देखा जाता है कि विद्यार्थियों की दिनचर्या व्यवस्थित नहीं होती। विद्यालय आने से पहले और घर लौटने के बाद का समय वे अपनी इच्छा के अनुसार ही बिताते हैं। पढ़ाई, गृहकार्य, व्यक्तिगत स्वच्छता या समय प्रबन्धन जैसी बातों पर उनका ध्यान कम ही रहता है। अभिभावकों के विशेष ध्यान न देने पर विद्यार्थी अपना अधिकांश समय खेलकूद या इधर-उधर घूमने में व्यतीत कर देते हैं। परिणामस्वरूप वे अगले दिन बिना किसी तैयारी के विद्यालय पहुँच जाते हैं।

प्रार्थना सभा के दौरान जब हम विद्यार्थियों से उनकी दैनिक दिनचर्या के बारे में चर्चा करते थे तब कई चिन्ताजनक तथ्य सामने आते थे। कुछ विद्यार्थी बिना ब्रश या स्नान किए ही विद्यालय आ जाते थे। कई विद्यार्थियों ने कॉपी में दिए गए अभ्यास कार्य को घर पर खोलकर तक नहीं देखा होता था। सामान्यत: अभिभावक खेती-किसानी अथवा अन्य कार्यों में व्यस्त रहने के कारण बच्चों की पढ़ाई और दिनचर्या पर नियमित ध्यान नहीं दे पाते थे।

यह स्थिति हमारे प्रधान पाठक के लिए चिन्ता का विषय बनी। उन्होंने सुझाव दिया कि क्यों न विद्यार्थियों की दिनचर्या से सम्बन्धित एक कार्यपत्रक (वर्कशीट) तैयार किया जाए जिसे विद्यार्थी अपने अभिभावकों की सहायता से भरें, और प्रतिदिन उस पर अभिभावकों के हस्ताक्षर व संक्षिप्त टिप्पणी भी दर्ज हो।

चूँकि हमारे विद्यालय में प्रिंटर की सुविधा थी, इसलिए सभी विद्यार्थियों के लिए कार्यपत्रक तैयार करना आसान था। हमने उनकी दैनिक गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए एक कार्यपत्रक तैयार किया। इसमें सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक की महत्त्वपूर्ण आदतों को शामिल किया गया। इन आदतों में समय पर उठना, ब्रश करना, शौच जाना, स्नान करना, सुबह पढ़ाई करना, समय पर विद्यालय आना, खेलकूद के बाद हाथ-पैर धोना, शाम को अध्ययन करना तथा समय पर सोना शामिल था।

इसके अतिरिक्त, परिवार के सदस्यों के प्रति व्यवहार और मोबाइल के उपयोग जैसे महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को भी विशेष रूप से जोड़ा गया। दो सप्ताह की गतिविधियों को समेटते हुए कार्यपत्रक तैयार किया गया, और प्रत्येक विद्यार्थी को उसके नाम सहित वितरित किया गया। प्रार्थना सभा में नियमित रूप से उन्हें स्मरण कराया जाता कि वे अपने अभिभावकों की सहायता से कार्यपत्रक भरें।

एक सप्ताह बाद जब कार्यपत्रकों की समीक्षा की गई तो सकारात्मक परिणाम दिखाई देने शुरू हुए। विद्यार्थी समझ गए कि कार्यपत्रक तभी पूरा होगा जब वे निर्धारित गतिविधियों का पालन करेंगे। इससे वे सुबह समय पर उठने लगे, ब्रश, स्नान करने के साथ-साथ विद्यालय आने से पहले कम-से-कम एक घण्टा अध्ययन करने लगे। उनकी दिनचर्या में स्पष्ट सुधार दिखाई देने लगा।

समय-समय पर आयोजित विद्यालय प्रबन्धन समिति की बैठकों और अभिभावक चर्चाओं में भी इस कार्यपत्रक पर चर्चा होती रही। कई अभिभावकों ने इसकी सराहना की, विशेषकर मोबाइल उपयोग से सम्बन्धित बिन्दु को लेकर। जिन विद्यार्थियों का अधिकांश समय मोबाइल पर बीतता था, उन्होंने उसका उपयोग सीमित करना शुरू कर दिया। कुछ विद्यार्थियों ने तो इसे लगभग बन्द ही कर दिया।

इसी दौरान, कुछ अभिभावकों ने बताया कि बच्चे विद्यालय आने के लिए पैसे माँगते हैं। ये पैसे वो कुछ छुटपुट ख़र्चों—टॉफ़ी, बिस्कुट आदि ख़रीदने—के लिए माँगते हैं। अभिभावकों के लिए बच्चों की यह माँग भी मुश्किल हो रही थी। इस मुद्दे को अगले कार्यपत्रक में जोड़ लिया गया, और विद्यार्थियों से इस सम्बन्ध में खुलकर बातचीत की गई। 'पैसे माँगने से पहले सोचो' कार्यपत्रक के ज़रिए लम्बी

परिचर्चा कराई गई। इससे उन्हें अपनी वास्तविक ज़रूरतों और इच्छाओं में फ़र्क़ करना आया। विद्यार्थी यह भी महसूस कर पाए कि उनके अभिभावक कड़ी मेहनत करके पैसा कमाते हैं, और उस पैसे से घर के ज़रूरी ख़र्चे चलते हैं। परिणामस्वरूप, ऐसे विद्यार्थियों की संख्या में कमी आ गई जो विद्यालय आने के लिए अभिभावकों से पैसे माँगते थे। इस प्रकार, एक छोटी-सी पहल ने बड़ा बदलाव लाने का कार्य किया। विद्यार्थी स्वयं से भी पढ़ाई के लिए समय निकालने लगे। व्यक्तिगत स्वच्छता, भोजन, अध्ययन, जीवन व्यवहार तथा समय से सोने और उठने जैसी आदतों में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई दिया। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि इन कार्यपत्रकों के माध्यम से अभिभावक भी बच्चों की शिक्षा और दिनचर्या के प्रति अधिक सजग और गम्भीर हुए। यह केवल विद्यार्थियों के व्यवहार में बदलाव नहीं था, बल्कि विद्यालय और समुदाय के बीच सहभागिता को मज़बूत करने वाला एक प्रभावी प्रयास भी सिद्ध हुआ।

संतोष कुमार निर्मलकर, सहायक शिक्षक, शासकीय प्राथमिक शाला दुधवारा, धमतरी, छत्तीसगढ़

उर्दू स्कूल में कन्नड़ पढ़ाने के मेरे अनुभव

सुमलता एच कांबले

मैं कर्नाटक के बागलकोट ज़िले के जमखंडी तालुका के सरकारी उर्दू मॉडल सीनियर प्राइमरी स्कूल में कन्नड़ शिक्षिका हूँ, और कक्षा 4 से 7 के विद्यार्थियों को पढ़ाती हूँ। यहाँ मैं अपनी कक्षा में कन्नड़ भाषा सीखने में विद्यार्थियों को होने वाली समस्याओं, उनके लिए मेरे द्वारा खोजे गए समाधान, और प्राप्त परिणामों के बारे में अपने अनुभव साझा कर रही हूँ।

मैं जिन कक्षाओं में कन्नड़ पढ़ाती हूँ, वहाँ अधिकांश विद्यार्थियों को कन्नड़ अक्षरों का सही ज्ञान ही नहीं है। वे प्रत्येक अक्षर को पहचानने में समस्या का सामना करते हैं, और कन्नड़ अक्षर लिखने की शैली से भी परिचित नहीं हैं। उन्हें इन अक्षरों को लिखने का दक्षिणावर्त मॉडल (इ, ञ, ण, श, आदि) और वामावर्त मॉडल (अ, आ, ई, औ, ल, क, ज, आदि) कठिन लगता है। साथ ही, कौन-सा अक्षर ऊपर से नीचे लिखना है और कौन-सा अक्षर नीचे से, यह भी उनके लिए एक उलझन है। लेखन के साथ-साथ कन्नड़ में बोलना भी उनके लिए एक बड़ी समस्या है। वे अक्षरों और शब्दों के उच्चारण में बार-बार कठिनाई का सामना करते हैं। उन्हें कन्नड़ में धाराप्रवाह बात करने में काफ़ी समस्या है।

हमारा विद्यालय उर्दू मीडियम स्कूल है। यहाँ पढ़ने वाले विद्यार्थी उर्दू भाषी पृष्ठभूमि से आते हैं। उनकी मातृभाषा उर्दू है। घर में और रिश्तेदारों के बीच वे उर्दू बोलते हैं। स्कूल में वे कन्नड़ को केवल एक भाषा के रूप में सीखते हैं। इसके अलावा, विज्ञान, गणित, पर्यावरण अध्ययन जैसे विषय उन्हें उर्दू माध्यम में ही पढ़ाए जाते हैं। इसलिए स्कूल में कन्नड़ सीखने की सम्भावना कम होती जाती है। मेरा मानना है कि स्कूल में कन्नड़ माहौल की कमी उनके भाषा सीखने में पिछड़ने का मुख्य कारण है। इसके साथ ही, कन्नड़ जैसी भाषा जो कि उनकी मातृभाषा नहीं है, उसे सीखने के प्रति उनमें रुचि की कमी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्हें भाषा सीखने के महत्त्व के बारे में पता नहीं है। चूँकि घर के माहौल या आस-पास के वातावरण में कन्नड़ सीखने के अवसर बहुत कम हैं, इसलिए उनके लिए कन्नड़ सीखना स्वाभाविक रूप से कठिन हो रहा है।

एक शिक्षिका के तौर पर, यह सब देखकर चुप बैठना मेरे लिए सम्भव नहीं था। मैंने समस्याओं के बीच समाधान की सम्भावनाओं के बारे में सोचा। हालाँकि इस दिशा में पूर्ण सफलता सम्भव नहीं थी, फिर भी अपनी क्षमता के अनुसार प्रयास करने की पहल की।

सबसे पहले, विद्यार्थियों के दैनिक अनुभवों को केन्द्र में रखकर बातचीत करते हुए उर्दू भाषा के माध्यम से कन्नड़ में भी बात करने की द्विभाषी पद्धति का उपयोग किया। दैनिक जीवन के कई प्रचलित शब्दों के बारे में कन्नड़ में जागरूकता पैदा करने, उनका उच्चारण करने, और उन्हें पहचानने पर ज़ोर दिया। इसके बाद, विद्यार्थियों को कन्नड़ के प्रत्येक अक्षर को लिखने का अभ्यास कराने की विधि अपनाई। उनका ध्यान खींचने के लिए अक्षरों के आकर्षक 'फ़्लैश कार्ड' (मिंचुपट्टी) तैयार किए। न केवल ख़ुद फ़्लैश कार्ड बनाए, बल्कि विद्यार्थियों को तरीक़ा सिखाकर उनसे भी बनवाए। जैसे—मूल अक्षर अ, आ, उ, ए, क, ग, च, ज, ट, ड, त, द, प, ब, य, ल, व, आदि। प्रत्येक विद्यार्थी को एक-एक अक्षर का फ़्लैश कार्ड बनाने के लिए कहा।

बाद में, दैनिक उपयोग के सरल अक्षरों वाले शब्दों का उच्चारण करवाया, उनके चित्र दिखाए, और उन्हीं शब्दों के फ़्लैश कार्ड बनाकर उनका ध्यान आकर्षित किया। उनके प्रत्येक शब्द (जैसे—अरसा, आटा, हरा, हणा, बलग, बलप, ओटा, पदक, रथ, औषध, आदि) के उच्चारण पर ध्यान दिया। इस अभ्यास के बाद, दैनिक शब्दों और वाक्यों के माध्यम से कन्नड़ के 'गुणिताक्षर' और 'संयुक्ताक्षर' का परिचय देने का प्रयास किया। मिसाल के तौर पर, आने, इलि, हावु, कागे, मने, कज्जाय, चक्कुली, एत्तु, चप्पली, कल्ला, बेल्ला, आदि। इस दौरान, मैंने प्रत्येक शब्द में शामिल अक्षरों की ओर विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित किया। उदाहरणार्थ, आने = आ + न् + ए, इलि

= इ + ल् + इ, हावु = ह् + आ + व् + उ, मने = म् + अ + न् + ए, कागे = क् + आ + ग् + ए, आदि। इस मॉडल में फ़्लैश कार्ड का उपयोग करके स्वर और व्यंजन सिखाने का प्रयास किया। दोहराव वाली गतिविधि होने के कारण इससे सीखने का सुदृढ़ीकरण एक साथ हो रहा था।

मेरे लिए सबसे अधिक फ़ायदेमन्द रहा था—'पैलिंड्रोम'। यानी नलागे सुरुली—आगे और पीछे से एक जैसे पढ़े जाने वाले शब्द— मनोरंजन, शिक्षण और प्रोत्साहन की दृष्टि से विद्यार्थियों के लिए मज़ेदार खेल बन गए, क्योंकि इन्हें दाएँ तरफ़ से लिखें या पढ़ें या बाएँ तरफ़ से लिखें या पढ़ें, वे एक जैसे ही रहते हैं। इससे न तो उच्चारण में कोई अन्तर आता है न ही अर्थ में। आमतौर पर विद्यार्थी उर्दू लिपि दाएँ से बाएँ लिखते और पढ़ते हैं। कन्नड़ लिपि बाएँ से दाएँ लिखी और पढ़ी जाती है। इस तकनीक के उपयोग से सभी विद्यार्थी बिना किसी लिपि भेद या भाषा भेद की बाधा के इन शब्दों को आराम से पढ़ सके। साथ ही, वे आसानी से समझकर लिखने और उच्चारण करने में सक्षम हुए। इससे विद्यार्थियों में सीखने की रुचि बढ़ी। ये शब्द थे—सरस, नयन, कनक, नमन, आदि। इनके परिचय से पहले इनके चित्रों का उपयोग करना और भी फ़ायदेमन्द रहा।

मेरा एक और प्रयोग उन विद्यार्थियों को बोलने के लिए प्रोत्साहित करने के बारे में था जो कक्षा में बोलने से हिचकते थे। उन्हें प्रेरित किया कि चाहे वे ग़लत हों या सही, पहले कुछ कहें। शुरू में मना करने वाले विद्यार्थी धीरे-धीरे अपनी झिझक छोड़कर इसके अभ्यस्त हो गए। भले ही वे आधी कन्नड़ और आधी उर्दू बोलते, फिर भी मैं चुप रहती थी। मैंने उनका मज़ाक़ नहीं उड़ाया। उन्होंने जो कुछ भी बोला, उसे वैसा ही स्वीकार किया। इससे उनमें आत्मविश्वास आया। इसके लिए चित्र दिखाकर बात करवाना, भूमिका निभाना (रोल-प्ले), कहानियाँ सुनाना, बाज़ार जाने की बातें, त्योहारों का मज़ा, घर पर बनी विशेष डिश पर चर्चा जैसे नए-नए तरीक़े खोजे ताकि विद्यार्थी खुलकर अभिव्यक्ति कर सकें।

जब कक्षा में पाठ्य और पाठ्येतर भावगीत गवाने या उनके ऑडियो-वीडियो देखने-सुनने की व्यवस्था की तो विद्यार्थियों ने इसमें रुचि और जिज्ञासा के साथ भाग लिया, क्योंकि यह उनके लिए एक नया अनुभव था। बाद में, बनाई गई धुन में मैंने और विद्यार्थियों ने मिलकर उन गीतों को सामूहिक रूप से गाया, और कक्षा में सुखद वातावरण बनाया।

अब तक उपयोग किए गए फ़्लैश कार्ड, ऑडियो-वीडियो और चित्रों को कक्षा में अलग से रखा गया ताकि विद्यार्थी अपने ख़ाली समय में उनका उपयोग कर सकें।

मैंने कक्षा में भयमुक्त वातावरण बनाया था, इसलिए विद्यार्थी बिना नागा मेरी कन्नड़ कक्षा में आने लगे। यहाँ तक कि जब दूसरे शिक्षक छुट्टी पर होते थे, वे मुझे दूसरी कक्षाओं में भी कन्नड़ गतिविधियों के लिए ले जाने लगे। अब पाठ ख़त्म होते ही वे फ़ौरन उसके प्रश्न-उत्तर लिखकर दिखाते थे। उन्होंने गृहकार्य बहुत लगन के साथ करना शुरू कर दिया। ब्लैकबोर्ड पर लिखने के लिए उनमें होड़ मचने लगी। उत्साह इतना था कि उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि अब स्कूल के कार्यक्रमों में स्वागत गीत कन्नड़ में ही हों। इससे बड़ी ख़ुशी मेरे लिए और क्या हो सकती है! कन्नड़ स्कूलों में ऐसा माहौल स्वाभाविक है, लेकिन उर्दू स्कूल में कन्नड़ सीखने के प्रति विद्यार्थियों की यह जिज्ञासा, उत्साहजनक व अनूठी है। इससे सभी विद्यार्थियों की लिखावट दिन-ब-दिन स्पष्ट होने लगी। ब्लैकबोर्ड, फ़्लैश कार्ड, अभ्यास पत्र और कॉपी बुक में लिखकर उनके कन्नड़ अक्षर सुन्दर दिखने लगे। कुल मिलाकर, उर्दू स्कूल के विद्यार्थियों की कन्नड़ सीखने के प्रति यह ललक मेरे पेशेवर जीवन का एक सार्थक और सन्तोषजनक क्षण है जिसे मैं कृतज्ञता के साथ कह रही हूँ।

कन्नड़ से हिन्दी में किरन मंजुनाथ द्वारा अनुवादित।

सुमलता एच कांबले, शिक्षिका, सरकारी उर्दू मॉडल सीनियर प्राइमरी स्कूल नं. 3, जमखंडी उर्दू, बागलकोट, कर्नाटक

"शिक्षा के ज़रिए समुदाय के जीवन में बेहतरी ला सकते हैं" : मीनाक्षी आर्या

भास्कर उप्रेती

मीनाक्षी आर्या

उत्तराखण्ड में ऊधम सिंह नगर जनपद स्थित रुद्रपुर के राजकीय प्राथमिक विद्यालय महराया ने अपनी सकारात्मक उपलब्धियों के चलते सबका ध्यान आकर्षित किया है। यहाँ की शिक्षिका मीनाक्षी आर्या ने अपने विशेष प्रयासों से लड़कियों का नामांकन ही सुनिश्चित नहीं किया है, बल्कि पढ़ने-लिखने में गुणवत्ता लाकर इस बदलाव को ईस्थायी बनाने का भी काम किया है। उनके इन्हीं प्रयासों पर अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के सदस्य भास्कर उप्रेती ने उनसे बातचीत की है। प्रस्तुत हैं उसके कुछ अंश :

भास्कर उप्रेती : मीनाक्षीजी, बचपन और पढ़ाई-लिखाई की ख़ास यादें क्या रहीं?

मीनाक्षी आर्या : बचपन नैनीताल में गुज़रा, वहीं पूरी शिक्षा ली। यह आधुनिक शहर था, इसलिए शिक्षा भी अच्छे से हो गई। हाँ, जीजीआईसी नैनीताल ख़ास रूप से याद आता है जहाँ मेरे सपनों ने आकार लिया, वहीं कुमाऊँ विश्वविद्यालय के डीएसबी परिसर में पढ़ाई-लिखाई की गुणवत्ता बहुत अच्छी थी। नैनीताल ने मुझे आगामी जीवन के लिए सक्षम बनाया। विवाह के बाद मेरठ पहुँची, और कुछ समय बाद राजकीय सेवा के लिए नैनीताल के पड़ोसी जनपद ऊधम सिंह नगर लौट आई।

भास्कर उप्रेती : एक शिक्षिका के रूप में इस विद्यालय में अपनी भूमिका को लेकर क्या कहेंगी?

मीनाक्षी आर्या : 2014 से इस विद्यालय में हूँ। शुरुआत के कुछ वर्ष समुदाय को समझने में लग गए। यहाँ छोटे और मध्यम किसान हैं जो मज़दूरी भी करते हैं। मैंने देखा कि गाँव में लड़कियाँ होने के बावजूद वे विद्यालय नहीं आ रही थीं। उनका नामांकन ही नहीं था। जिन कुछ लड़कियों के नामांकन थे, उन्हें भी बच्चे सँभालने, चूल्हा-चौका या मटर तोड़ने जैसे घरेलू कामकाज में लगा दिया जाता था। इस समस्या पर समुदाय के साथ 2019 तक लम्बी बातचीत चली। विद्यालय बुलाने पर अभिभावक आते नहीं थे। शुरू में घर जाने पर भी बात करना पसन्द नहीं करते थे। धीरे-धीरे ही उनका भरोसा जीत सकी।

भास्कर उप्रेती : इस भरोसे को जीतने के लिए किस तरह के प्रयास किए?

मीनाक्षी आर्या : सबसे पहले असेम्बली को रोचक बनाया। विद्यार्थियों को रोचक लगने वाले नए गीत सिखाए। ढोलक, ड्रम जैसे वाद्य यंत्रों और साउंड सिस्टम का इस्तेमाल बढ़ाया। असेम्बली की ज़िम्मेदारी विद्यार्थियों को सौंपनी शुरू की। ये उपाय उनमें आत्मविश्वास बढ़ाने में कारगर हुए। मैंने विद्यार्थियों से दोस्ती के ज़रिए ही उन घरों में आना-जाना शुरू किया जिन घरों से लड़कियाँ नामांकित नहीं थीं। पारम्परिक सोच के चलते अभिभावक कहते, "लड़कियाँ शिक्षा लेकर क्या करेंगी"; "उन्हें घर और खेती के काम करना चाहिए"; वग़ैरह। संवेदनशीलता बरतते हुए मैं बस यही कहती, "आप कुछ दिन भेजकर देखिए लड़कियों को, और आपको अच्छा लगेगा!" जब वे एक बार विद्यालय आने लगीं तो अच्छा माहौल बन गया।

अब गाँव की सभी लड़कियों का विद्यालय में नामांकन है। लड़कों की तुलना में उनकी उपस्थिति भी अच्छी रहती है। लेकिन पाँचवीं के बाद उनके लिए शिक्षा जारी रख पाना अब भी एक चुनौती है। इसके लिए उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के साथ मिलकर प्रयास कर रहे हैं। अभी तक तीन लड़कियाँ इंटर तक पहुँची हैं, और दो अभी हाई स्कूल में पढ़ रही हैं। मुझे विश्वास है, आने वाले दिनों में सभी लड़कियों का हाई स्कूल और इंटर उत्तीर्ण कर पाना आम हो जाएगा। विद्यालय से पासआउट लड़कियाँ मेरे सम्पर्क में रहती हैं, और अपने संघर्ष व उपलब्धियाँ बताती हैं।

भास्कर उप्रेती : विद्यालय में ऐसी कोई पहल जिसने शुरुआत में समुदाय के बीच असरकारक सन्देश दिया हो?

मीनाक्षी आर्या : बिल्कुल। एक बार जब नामांकन की स्थिति सन्तोषजनक हो गई तब हमें विद्यालय प्रबन्धन समिति (एसएमसी) बैठक की ज़रूरत महसूस हुई। मैंने अभिभावकों को आमंत्रित किया, और उन्हें बैठक में विद्यार्थियों के अकादमिक प्रदर्शन व उनकी उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। चौथी-पाँचवीं के कुछ विद्यार्थी जब धाराप्रवाह पढ़कर दिखाते थे, उन्हें देखकर

अभिभावक ख़ुश होते थे। यह देखकर शुरुआत में जो अभिभावक विद्यालय के प्रति उदासीन रहते थे, धीरे-धीरे बैठकों में आने लगे। मुझे भी महसूस हुआ कि अभिभावकों के साथ विद्यालय की प्रक्रियाओं और विद्यार्थियों के सीखने से जुड़ी बातों को पारदर्शिता के साथ साझा करना ज़रूरी है।

भास्कर उप्रेती : आपके काम का अगला चरण क्या था, कैसे शुरू हुआ?

मीनाक्षी आर्या : मॉर्निंग असेम्बली और अभिभावकों के साथ संवाद तो जारी रखा ही, अब विद्यार्थियों की व्यक्तिगत कहानियाँ सुननी शुरू कीं। चाइल्ड प्रोफ़ाइलिंग के ज़रिए उनके जीवन और दिनचर्या में झाँकने की कोशिश की। उनकी कहानियों के बीच कुछ पढ़ना-लिखना भी हो जाता। मुझे कुछ जानकारियाँ मिलीं जो मैं नहीं जानती थी–किस विद्यार्थी के घर में घरेलू हिंसा है, कहाँ परिवार कर्ज़ में है, जैसी कई अहम बातें। ये सब विद्यार्थियों के साथ आगे काम करने में मददगार हुईं।

सकारात्मक वातावरण बनने से अब मैं अकादमिक कामों पर अधिक ध्यान दे पर रही थी। मैंने सभी विद्यार्थियों में बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान सुनिश्चित करने का निश्चय किया। उदाहरण के लिए, ध्वनि जागरूकता के अभ्यास कराना, अक्षर से ध्वनि और ध्वनि से अक्षर तक पहुँचने की प्रक्रिया को सहज बनाना, आदि। स्थानीय या घर की भाषा को कक्षा में सम्मानजनक जगह और शिक्षण में निरन्तर प्रयोग के अवसर बनाना।

चित्र 1: चित्र पुस्तकों का गहराई से अवलोकन करते विद्यार्थी

मैंने सीखने के प्रतिफलों को आसानी से हासिल किए जा सकने वाले लक्ष्यों में बाँट लिया। उदाहरण के लिए, विद्यार्थी अपने परिवेश से जुड़े परिचित शब्द लिख सकें, उनका एक निश्चित शब्द भण्डार विकसित हो, वे उन शब्दों का अलग-अलग सन्दर्भ में इस्तेमाल कर सकें, आदि। जैसे एक प्रतिफल है–चित्र और अपने अनुभव के आधार पर अर्थ निर्माण करना। इसे विद्यार्थियों की आयु और सीखने के स्तर के अनुसार अलग-अलग किया जा सकता है। पहली कक्षा में उन्हें चित्र देखना और परखना सिखाती, जबकि तीसरी कक्षा में चित्र देखकर उसका विवरण बताने, और कल्पना से जोड़कर कोई कहानी बनाने को कहती। इससे विद्यार्थियों की नज़रें अपने आस-पास मौजूद मुद्रित सामग्री को पहचानने और समझने लगीं। उन्हें थोड़ा लिखकर भी बताने को कहने लगी।

भास्कर उप्रेती : गणित में किस तरह से किया?

मीनाक्षी आर्या : गणित में विद्यार्थियों के दैनिक जीवन के अनुभवों को आधार बनाया। उदाहरण के लिए, कई विद्यार्थी दुकान का हिसाब-किताब मौखिक रूप से कर लेते थे। उन्हें बताया कि जो वे मौखिक रूप से कर लेते हैं, उसका लिखित निरूपण भी कर सकते हैं। छोटे विद्यार्थियों को उँगलियों, कंकड़ों, गिनमाला, पेज, आदि से गिनना सिखाया। साथ ही, परिचित अंकों को शब्दों में लिखना, रिवर्स काउंटिंग, आदि के अभ्यास कराए। बड़े विद्यार्थियों के साथ आस-पास मौजूद आकृतियों, पैटर्न, और खिड़की की लम्बाई-चौड़ाई को मापने जैसे सरल मापन, तथा घर से विद्यालय की दूरी या तापमान का अनुमान, हल्की-भारी चीज़ें महसूस कराना, आदि पर काम किया। धैर्यपूर्वक किए गए काम के सकारात्मक परिणाम सामने आने लगे, और यह उच्च कौशलों पर काम करने का आधार बना।

भास्कर उप्रेती : बुनियादी काम हो जाने से क्या शिक्षक का आगे का काम आसान हो जाता है, कैसे?

मीनाक्षी आर्या : बिल्कुल। जिन विद्यार्थियों ने बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान में कुछ योग्यता हासिल कर ली थी, उसे एसएमसी बैठक में अभिभावकों के समक्ष रखा। इसका अच्छा असर हुआ। वे सोचने लगे कि विद्यालय के शिक्षक उनके बच्चों के हित में गम्भीरता से काम कर रहे हैं। जब कक्षा 3 के विद्यार्थी तीन अंकों की संख्याओं का जोड़ और हासिल वाले सवाल आसानी से करने लगे तब गुणा के भीतर छुपी जोड़ की अवधारणा पर समझ बनाना शुरू किया। जैसे, 7 अट्ठा 56 में संख्या 7 की 8 बार आवृत्ति, यानी 7 को 8 बार जोड़ना। जब विद्यार्थी समझ गए कि गुणा वास्तव में बार-बार होने वाला जोड़ का एक छोटा और सुविधाजनक तरीक़ा है, वे इस 'टूल' का इस्तेमाल बड़ी संख्याओं के लिए भी करने लगे।

भास्कर उप्रेती : एफ़एलएन में पुस्तकालय के उपयोग पर बड़ा ज़ोर है। विद्यालय में आप किस तरह का काम कर रही हैं?

मीनाक्षी आर्या : सबसे पहले मैंने पुस्तकालय कक्ष को विद्यार्थियों के बैठने की अच्छी जगह बनाने पर काम किया। पुस्तकें व्यवस्थित कीं, उनकी ग्रेडिंग की। फिर विद्यार्थियों की मदद से पुस्तक वितरण और रखरखाव की व्यवस्था बनाई। हर कक्षा के लिए पढ़ने का समय निश्चित किया गया जिसे 'पढ़ने की घण्टी' या 'आनन्द की घण्टी' कहा।

भास्कर उप्रेती : आपने शुरुआती स्तर पर किन बातों को प्राथमिकता दी?

मीनाक्षी आर्या : पहले चरण में कुछ ज़रूरी काम सभी विद्यार्थियों को करने थे। माने उन्हें आस-पास की चीज़ों को ग़ौर से देखना था। यहीं से शब्द भण्डार की शुरुआत होती है। पुस्तकों के चित्रों को ध्यान से देखने और उन पर विस्तार से बात करने से विद्यार्थियों का अवलोकन कौशल बेहतर हुआ, वे सड़क किनारे के होर्डिंग, दुकानों पर लिखे नाम और पैकेटों के रैपर पर मुद्रित सामग्री को पढ़ने की कोशिश करने लगे। इसी तरह, पुस्तकों से हासिल अनुभवों पर विद्यार्थियों को अनुमान लगाने के मौक़े दिए गए। वे *अम्मा, सबकी प्यारी अम्मा* कहानी के बारे में सोचकर

नई-नई कल्पनाएँ करने लगते। एक विद्यार्थी तो इस बारे में निश्चित था कि वह गिलहरी को पाल ही लेगा।

भास्कर उप्रेती : क्या तब अक्षर ज्ञान पर अलग से भी काम करना पड़ता है?

मीनाक्षी आर्या : मेरा मानना है कि अक्षर ज्ञान पर ज़ोर देने के बजाय बाल साहित्य की किसी पुस्तक में इंगेज करें। उनसे यथासम्भव विषयवस्तु और चित्र पर बातें करती हूँ। अक्षर मात्राएँ, पढ़ना सीखने की प्रक्रिया का एक छोटा हिस्सा है, वह धीरे-धीरे आ जाता है। प्रतिदिन डेढ़ घण्टे एफ़एलएन पर काम करती हूँ। इसमें समग्रता में सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना अहम हैं।

विद्यार्थियों को पढ़ने के मौक़े देना, उनके अनुभव सुनना, लिखने का अभ्यास कराना, कविता पर विस्तार से बात करना, पढ़ी गई कहानी को सुनना और असेम्बली में अपनी बेहतर रचनात्मकता प्रस्तुत करना, यह सब एफ़एलएन में करना ज़रूरी है।

भास्कर उप्रेती : अपने काम के प्रभाव को स्पष्टता से कैसे देख पाती हैं?

मीनाक्षी आर्या : काम का प्रभाव साफ़ दिखाई देना चाहिए। एक दिन उमर की माँ उसे इस विश्वास के साथ अस्पताल ले गईं कि वह पढ़ना सीख गया है। वह परचा बनवा देगा, और दवाई लेते समय भी ध्यान देगा। माँ को बेटे पर गर्व है कि वह शिक्षित हो रहा है। सुमेला को जब शुरुआत में चित्र कथा की पुस्तक दी गई तो वह घबराई-सी मुद्रित शब्द ढूँढ़ने लगी। बातचीत में पता चला कि उसके लिए छपे हुए शब्द ही पढ़ाई है। जब पुस्तक के चित्रों पर धैर्य से बात हुई, और उसे शब्दों के बिना कहानी समझ आ गई तब उसकी धारणा ही बदल गई। अब वह आत्मविश्वास के साथ मुद्रित सामग्री पढ़ने का प्रयास करती है।

भास्कर उप्रेती : बाल पुस्तकालय का विद्यार्थियों के सीखने पर क्या प्रभाव पड़ा?

मीनाक्षी आर्या : पढ़ने की घण्टी के दौरान मैंने नियमित रूप से एक कहानी को हावभाव से पढ़ना शुरू किया। इसमें मुझे भी आनन्द आता, और विद्यार्थी भी रस लेकर सुनते। बीच-बीच में रुककर सभी विद्यार्थियों से चर्चा होती।

छोटे विद्यार्थियों को पढ़ने-देखने के लिए *बरखा क्रमिक पुस्तकमाला* की पुस्तकें दी गईं। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को समझ के साथ स्वयं से पढ़ने के मौक़े देना है। इनकी कहानियों में विद्यार्थियों के अपने आस-पास के अनुभव हैं, जो जुड़ाव बनाते हैं। चित्र और कथानक सरल हैं, और विषयवस्तु स्तरानुसार है। जब विद्यार्थी शुरुआती पढ़ना सीख रहे होते हैं तब ये पुस्तकें दी जाती हैं। इन्हें वे बहुत पसन्द करते हैं, और उनका सीखना गति पकड़ता है।

चित्र 2 : अपनी पसन्द की पुस्तक चुनकर तल्लीनता से पढ़ते विद्यार्थी

बाल साहित्य के इस्तेमाल से विद्यार्थियों में पुस्तक का भय दूर हुआ। उन्हें चित्र देखने की आदत पड़ गई। इसका असर उनके अवलोकन कौशल पर पड़ा। वे चित्रों और कहानियों पर हुई बातचीत को शब्दों में लिख देते हैं। बार-बार पूछने और बताने के मौक़े मिलने से विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति में सुधार हुआ।

स्वाध्याय की आदत बनने से विद्यार्थी बाल पुस्तकालय की कई पुस्तकें ख़ुद उठाकर पढ़ गए। वे बाल पत्रिकाओं को उत्साह से पढ़ते हैं, और मज़ेदार बातों को साझा करते हैं।

भास्कर उप्रेती : हम मानते हैं कि शिक्षक को पेशेवर होना चाहिए, आप ख़ुद क्या सोचती हैं?

मीनाक्षी आर्या : जब से मुझे शिक्षक के पेशेवर विकास के मायने समझ आए, इसको लेकर सजग हूँ। शिक्षक सेमिनार, आदि में, जहाँ भी अवसर मिलता है, अपने अनुभव भेजती हूँ। ज़िला और राष्ट्रीय स्तर के कई शिक्षा सेमिनारों में प्रतिभाग भी किया है। अपने काम को और ख़ुद की भूमिका को समझने के लिए मैं बहुत कुछ लिखती रहती हूँ।

यहाँ पढ़ने-लिखने में रुचि रखने वाले शिक्षकों का एक 'सृजन समूह' है। हम हर सप्ताह ऑनलाइन जुड़ते हैं, और कई बार फ़ेस-टू-फ़ेस भी मिलते हैं। इसमें 500 से अधिक लेख साझा हो चुके हैं, और ज़्यादातर मैंने पढ़े हैं। समूह में चर्चा से लेखों को समझना आसान हो जाता है। रमेश थानवी के लेख 'शिक्षक पढ़ेगा नहीं तो बढ़ेगा नहीं' ने यह सोचने को विवश किया कि आख़िर हम अपने काम को देखते कैसे हैं। रेखा चमोली की *मेरी स्कूल डायरी* बहुत उपयोगी लगी। *पहला अध्यापक* और *डेविड ऑसबरॉ और नीलबाग स्कूल* हम शिक्षकों के लिए पढ़नी ज़रूरी हैं। अब अपने पढ़ने-लिखने और काम के अनुभवों पर लिखना शुरू किया है। 'बच्चे समझकर पढ़ना कैसे सीखते हैं?' विषय पर अपने अनुभव दर्ज कर रही हूँ। इसमें बच्चों के पढ़ना-लिखना सीखने के संघर्ष व उपलब्धियों की कहानियाँ होंगी, छोटी-छोटी।

भास्कर उप्रेती एक दशक तक पत्रकारिता करने के बाद विगत 13 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में कार्यरत हैं। *पाठशाला भीतर और बाहर* सम्पादकीय टीम का हिस्सा हैं। इन दिनों ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : bhaskar.upreti@azimpremjifoundation.org

रिक्शावाली लड़की

समीक्षा : ऋचा पाण्डेय

जब 12 साल के एक लड़के से यह पूछा गया, "अगर आपके पास कोई हुनर हो, लेकिन समाज आपको उसका इस्तेमाल करने से रोके तो आपको कैसा लगेगा?" उसने कहा, "मुझे दु:ख होगा और ग़ुस्सा भी आएगा।" 11 साल की एक लड़की ने कहा, "मुझे महसूस होगा कि मैं बेकार हूँ, और मेरी कोई अहमियत ही नहीं है।" 10-12 साल के बच्चे भी यह समझते हैं कि जब उन्हें उनके किसी ऐसे हुनर का इस्तेमाल करने से रोका जाता है, जिसे वे बहुत अहमियत देते हैं तो उन्हें कैसा लगता है। उनके मन में दु:ख और मानसिक उलझन से लेकर ख़ुद के बेकार होने का एहसास और ग़ुस्से जैसी कई तरह की भावनाएँ पैदा होती हैं।

अब सोचिए, कई ऐसे ही विद्यार्थियों से भरी कक्षा में *रिक्शावाली लड़की* की कहानी पर चर्चा हो रही है। पहले अध्याय को पढ़ते-पढ़ते, वे इस बात का अन्दाज़ा लगाने की कोशिश करते हैं कि कहानी में जिस लड़की, नईमा की बात हो रही है वह कितने साल की होगी। ज़्यादातर विद्यार्थियों को लगता है कि वह कम-से-कम 15 साल की होगी, क्योंकि वह घर के ऐसे काम करती है जो छोटे बच्चे आमतौर पर नहीं करते। कुछ विद्यार्थी सोचने लगते हैं कि जब नईमा की बहन विद्यालय जाती है तो वह क्यों नहीं जाती! कुछ विद्यार्थी इस बात को लेकर काफ़ी असहजता महसूस करते हैं कि नईमा अपने किसी मित्र से सिर्फ़ इसलिए बातचीत नहीं कर सकती, क्योंकि उसका मित्र लड़का है। कुछ विद्यार्थी तब भी असहज महसूस करते हैं जब नईमा ख़ुद को इसलिए बेबस महसूस करती है, क्योंकि एक लड़की होने के कारण वह अपने माता-पिता की आर्थिक रूप से मदद नहीं कर पाती। और लड़कियाँ काम करने के लिए बाहर नहीं जातीं। लड़कियाँ तो घर के काम करने के लिए होती हैं।

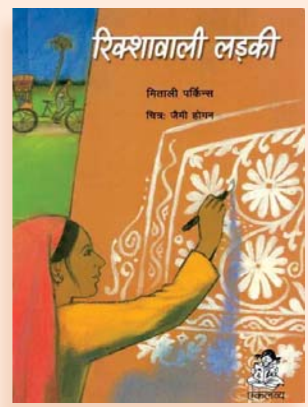

लेखिका : मिताली पर्किन्स
चित्र : जेमी होगन
आयु वर्ग : 7 से 10 वर्ष
पृष्ठ संख्या : 96
भाषा : हिन्दी, अँग्रेज़ी, बंगाली सहित 7 अन्य भाषाओं में उपलब्ध
प्रकाशक : चार्ल्सब्रिज पब्लिशिंग

मिताली पर्किन्स की लिखी और जेमी होगन के बनाए चित्रों से सुसज्जित *रिक्शावाली लड़की* नामक यह रचना 96 पन्नों का एक छोटा उपन्यास है। कहानी नईमा के इर्द-गिर्द घूमती है जो 10 साल की लड़की है, और बांग्लादेश के एक गाँव में अपने माता-पिता और छोटी बहन के साथ रहती है। नईमा को एक ख़ुशमिज़ाज और थोड़ी लापरवाह लड़की के रूप में दिखाया गया है। लेकिन जब वह 'अल्पना' (फ़र्श और दीवारों पर बनाए जाने वाले आकर्षक पैटर्न और डिज़ाइन) बनाती है तो बहुत सावधानी बरतती है। अपने गाँव की सबसे अच्छी अल्पना कलाकार होने के बावजूद नईमा को विद्यालय छोड़ना पड़ा, क्योंकि उसके माता-पिता अपनी दोनों बेटियों को विद्यालय भेजने का ख़र्च नहीं उठा सकते थे।

इस उपन्यास को 13 अध्यायों में बाँटा गया है। इनमें से हर एक नईमा की भीतरी और बाहरी दुनिया को दिखाता है। कहानी के पहले हिस्से में नईमा द्वारा अपने पिता का रिक्शा चलाने की नाकाम कोशिश के बारे में बताया गया है। इससे उसकी सोच बदल जाती है, क्योंकि उसे लगता है कि उसने अपने माता-पिता की मुश्किलें और बढ़ा दी हैं। कहानी के दूसरे हिस्से में नईमा अपने दोस्त सलीम की मदद से एक हल निकालती है। इस दौरान उसे पता चलता है कि औरतें कुछ भी कर सकती हैं—यहाँ तक कि रिक्शे की मरम्मत करने की दुकान भी चला सकती हैं। उपन्यास का अन्त नईमा की सोच में बदलाव के साथ होता है : पहले वह सोचती थी, "काश, मैं लड़का होती!" लेकिन बाद में उसे लगता है, "अच्छा हुआ कि मैं लड़की हूँ!"

यह उपन्यास बच्चों को सोचने पर मजबूर करता है, क्योंकि अकसर उनसे कहा जाता है कि वे कुछ काम इसलिए नहीं कर सकते क्योंकि समाज ऐसा कहता है। माता-पिता के लिए भी इसे पढ़ना ज़रूरी है, क्योंकि यह बच्चों के मन की दुनिया को समझने का

ज़रिया है, और दिखाता है कि माता-पिता की बातें बच्चों पर कितना असर डालती हैं। नईमा के पिता की यह बात, कि मेरी दोनों बेटियाँ बेटों के बराबर हैं, नईमा को उसके अपराध-बोध से उबरने और अपने जुनून को जारी रखने में मदद करती है।

शिक्षकगण इस उपन्यास का इस्तेमाल कई तरह से कर सकते हैं। नईमा की कहानी जेंडर से जुड़ी भूमिकाओं और रूढ़िवादी सोच के इर्द-गिर्द घूमती है। लेकिन यह कहानी उसके पक्के इरादे और हिम्मत की भी मिसाल है। परिवार की आर्थिक मदद के लिए नईमा का अपने पिता का रिक्शा चलाने की कोशिश करना, और बाद में अपनी अल्पना बनाने की विशेष कला का उपयोग करके उसे ठीक करवाने का फ़ैसला करना, उसके पक्के इरादे और हिम्मत को दिखाता है। इससे यह भी पता चलता है कि आदर्शों या रोल मॉडल का होना विद्यार्थियों की भीतरी सोच को सकारात्मक रूप से बदलने में कितनी अहम भूमिका निभाता है, और इसका फ़ायदा हर विद्यार्थी को मिलता है। जब नईमा रिक्शे की मरम्मत की दुकान चलाने वाली एक विधवा महिला से मिलती है तो उसे पता चलता है कि औरतें जो चाहें वह कर सकती हैं, भले ही समाज कुछ भी कहे।

'अनुमान लगाने' जैसी पढ़ने की रणनीतियों का इस्तेमाल बहुत असरदार हो सकता है, क्योंकि विद्यार्थी कहानी के मुख्य पात्र से ख़ुद को जोड़ पाते हैं। उदाहरण के लिए, जब नईमा अपने माता-पिता को अपनी आर्थिक मुश्किलों के बारे में बात करते हुए सुनती है तब शिक्षक कहानी रोककर विद्यार्थियों से अनुमान लगाने के लिए कह सकते हैं कि आगे क्या होगा। जब नईमा के पिता उसे रिक्शे की मरम्मत वाली दुकान पर लड़के के भेष में देखते हैं तब यह सवाल पूछा जा सकता है, "आपको क्या लगता है कि नईमा के पिता अब क्या करेंगे?"

विद्यार्थियों की तैयारी के हिसाब से कहानी को आसान बनाकर विषयवस्तु में बदलाव करने से मदद मिलती है। मुश्किल शब्दों और उनके अर्थों वाला 'शब्द भण्डार' देकर कहानी की भाषा को आसान बनाया जा सकता है। हर अध्याय के अन्त में कई तरह के सवाल पूछने से भी अच्छी चर्चा करने में मदद मिलेगी। उदाहरण के लिए, "रिक्शा कहाँ टकराता है?" जैसे तथ्यात्मक सवालों के बाद "नईमा ने रिक्शा क्यों चलाया?" जैसा सवाल पूछा जा सकता है। इससे विद्यार्थी अनुमान लगाकर जवाब देने के लिए प्रेरित होते हैं। "अपने पिता की मदद के लिए नईमा और क्या कर सकती थी?" जैसे सवाल अपनी राय देने पर आधारित होते हैं जो विद्यार्थियों की सोचने-समझने की क्षमता को बढ़ावा देते हैं।

कुल मिलाकर, यह पुस्तक अपनी प्रासंगिक कहानी और भावनात्मक पहलू के कारण पाठकों के मन और दिल को छू लेती है। यह माध्यमिक स्तर के उन विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त है जो बड़े हो रहे हैं, अपने आस-पास की दुनिया को समझ रहे हैं, और समाज की पाबन्दियों के कारण अपनी निराशा को दबाए हुए हैं।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

ऋचा पाण्डे को पढ़ाने, पाठ्यक्रम तैयार करने, और स्कूल लीडरशिप का 11 साल से ज़्यादा का अनुभव है। वे समान अवसर वाली कक्षाओं का निर्माण करने, और हर विद्यार्थी के लिए सीखने का सार्थक अनुभव तैयार करने की दिशा में शिक्षकों से संवाद करने के लिए बेहद उत्साहित रहती हैं।

मल्ली चली बाज़ार

समीक्षा : महेश कुमार सी एस

जीवा रघुनाथ द्वारा लिखी गई बच्चों की सचित्र कहानी की किताब *मल्ली चली बाज़ार* (Malli Goes to the Market), *मल्ली श्रृंखला* की तीसरी किताब है। दो भाषाओं में उपलब्ध यह किताब रंग-बिरंगे, आकर्षक और जीवन्त चित्रों से सँवरी है। इसकी रचना तमिलनाडु के एक जीवन्त गाँव, और वहाँ के स्थानीय बाज़ार की पृष्ठभूमि में की गई है। किताब की कहानी उन लोगों को अपने देखे हुए बाज़ार की याद दिलाती है, जिन्होंने गाँव का बाज़ार देखा है, और जिन्होंने नहीं देखा है, उनके मन में बाज़ार जाकर वहाँ की रंग-बिरंगी व भीड़-भाड़ वाली दुकानों को देखने और स्थानीय व्यंजनों—गुलाबी सोडा, शहद की मिठाई (तेन मिट्टाई) और मूँगफली के लड्डू—का स्वाद चखने की इच्छा जगाती है।

यह कहानी मल्ली और उसके दोस्तों के बाज़ार जाने, अपनी पसन्द की चीज़ें ख़रीदने और आपस में बाँटकर खाने से बनी दोस्ती की भावना को बेहतरीन अन्दाज़ और दिलकश चित्रों के माध्यम से दर्शाती है। गाँव और बाज़ार का दृश्य आँखों के सामने जीवन्त हो उठता है, जहाँ चित्र और कहानी एक दूसरे की बाँहों में बाँहें डाले दिखते हैं। बाज़ार की चीज़ों की क़ीमतों की तरह, मल्ली के दोस्तों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में भी विविधता है। कहानी के पात्र कादर, मिनमिनी, जॉनी और तिलक अलग-अलग सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों का प्रतिनिधित्व करते दिखाई देते हैं। बाज़ार जाने से पहले वे जिन कामों में व्यस्त थे, उनका विवरण ग्रामीण बच्चों की दिनचर्या को ख़ूबसूरती से सामने लाता है।

यह विविधता आगे बढ़कर उनके स्वाद की पसन्द में भी दिखाई देती है। परिणामस्वरूप, हर कोई बाज़ार में तरह-तरह की चीज़ें खाना चाहता है। लेकिन हर किसी में अपनी पसन्द की चीज़ ख़रीदकर खाने की क्षमता नहीं है। कुछ के पास ज़्यादा पैसे हैं तो कुछ के पास कम। इस अन्तर से ऊपर उठकर दोस्त यह कैसे तय करें कि किसे क्या खाना है। इस तरह अपनी मनपसन्द चीज़ को खाना भी उनके लिए मज़े का एक हिस्सा बन जाता है। उनके बीच के अन्तरों से परे, उन्हें साथ जोड़ने वाला दोस्ती का गहरा भाव यह तय करता है कि हर किसी को वह मिले जो वह चाहता है। दोस्ती की भावना के साथ-साथ कहानी में गणितीय गणना यानी हिसाब-किताब भी शामिल है।

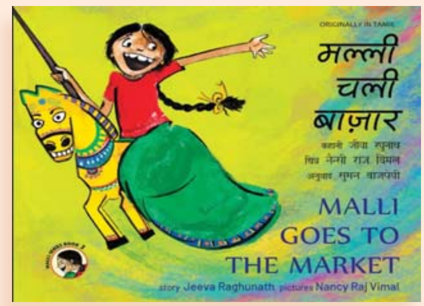

लेखक : जीवा रघुनाथ
अँग्रेज़ी से हिन्दी अनुवाद : सुमन बाजपेयी
चित्र : नैन्सी राज विमल
आयु वर्ग : 3 वर्ष से अधिक
पृष्ठ संख्या : 20
भाषा : अँग्रेज़ी-कन्नड़ / अँग्रेज़ी-हिन्दी
प्रकाशक : तूलिका बुक्स

कहानी के विवरण व घटनाक्रम को ध्यान में रखते हुए शिक्षक विद्यार्थियों को कहानी सुनाते या पढ़ाते समय उनका ध्यान कई ऐसे बिन्दुओं की ओर आकर्षित कर सकते हैं जिनसे विद्यार्थियों के अनुभव और कल्पना संसार को समृद्ध किया जा सके।

यह किताब मुख्य रूप से बाज़ार और उस गाँव के वातावरण पर आधारित है जहाँ बाज़ार लगता है। कहानी की शुरुआत में "मल्ली के गाँव में बाज़ार का दिन था" पंक्ति पढ़ते हुए एक विद्यार्थी ने बताया कि उसके गाँव में सोमवार को लगने वाला बाज़ार सोमवार का बाज़ार कहलाता है। फिर कई अन्य विद्यार्थियों ने अपने-अपने गाँव में लगने वाले बाज़ार के दिन, उनके नाम और वहाँ मिलने वाली चीज़ों के बारे में विस्तार से बताया। विद्यार्थी समझ पाए कि गाँव के घूमते-फिरते पारम्परिक बाज़ार सप्ताह में एक ही दिन लगते हैं। वे बड़े क़स्बों और शहर के बाज़ार से इनके फ़र्क़ को भी समझ पाए।

इस कहानी के बाज़ार में अलग-अलग तरह की कई खाने-पीने की चीज़ों के नाम हैं। विद्यार्थियों से इन चीज़ों के स्वाद, बनाने के तरीक़ों, उनकी पसन्द और रुचियों, आदि के बारे में चर्चा की जा सकती है, चित्र बनवाए जा सकते हैं। इससे वे खाने-पीने की चीज़ों में विविधता को अन्य विविधताओं के सन्दर्भ से जोड़कर देख-समझ पाएँगे।

आवरण चित्र में, तेज़ी से भागते झूले के घोड़े पर सवार मल्ली की शारीरिक अभिव्यक्ति और चेहरे के भाव, उसके बाज़ार घूमने की बाल सुलभ ख़ुशी की तीव्रता और अचरज को बख़ूबी दर्शाया गया है। बरगद के पेड़ के नीचे बाज़ार जाने के लिए जुटे बच्चे, गाँव और बाज़ार के विहंगम दृश्य, पेड़ की शाखाओं पर मौज-मस्ती करते बच्चों के बारीक़ रेखाओं से उकेरे गए रंग-बिरंगे विस्तृत चित्र बहुत कुछ कहते हैं। ये विद्यार्थियों के साथ संवाद की सम्भावनाएँ बनाते हैं।

इस कहानी की एक ख़ासियत पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है।

हिन्दी बाल साहित्य और पाठ्यपुस्तकों में माता-पिता की उँगली पकड़कर उनकी देखरेख में बाज़ार या मेला घूमने जाते बच्चों की तयशुदा छवियाँ आमतौर पर देखने को मिलती हैं। इस कहानी में लेखक ने भाषा और संवाद के ज़रिए बेहद सूक्ष्मता से आज़ाद बच्चों की छवियों को जिस तरह से गढ़ा है, उन परतों को महसूस करना ज़रूरी है।

कन्नड़ से हिन्दी में किरन मंजुनाथ द्वारा अनुवादित।

महेश कुमार सी एस, अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु की कम्युनिकेशन और पब्लिकेशन टीम में कन्नड़ इनिशिएटिव समूह के साथ कार्यरत हैं।

आइए, करके देखें

गतिविधि 1 : पिंग-पोंग

कक्षा : 5 और 6

उद्देश्य : जो कहा गया उसे ध्यान से सुनना, कहे अनुसार कार्य करना। नियम, दाएँ-बाएँ, क्रम, कोड, संयोजन, पैटर्न, आदि को समझना, और स्पष्ट बातचीत करने के तरीक़े सोचना।

आवश्यक सामग्री : एक गेंद

यह गतिविधि कैसे करें

1. सभी विद्यार्थी एक घेरा बनाते हैं।
2. शिक्षक उन्हें गेंद देते हैं, और समझाते हैं कि जब वे 'पिंग' की घोषणा सुनें तो उन्हें गेंद को अपने दाईं ओर वाले साथी को पास करना है, और जब वे 'पोंग' की घोषणा सुनें तो उन्हें इसे अपने बाईं ओर पास करना है।
3. शिक्षक 'पिंग', 'पोंग' या इन दोनों शब्दों को मिला-जुलाकर निर्देश देते हैं। मान लीजिए कि विद्यार्थी घड़ी के चलने की दिशा में इस तरह खड़े हैं–

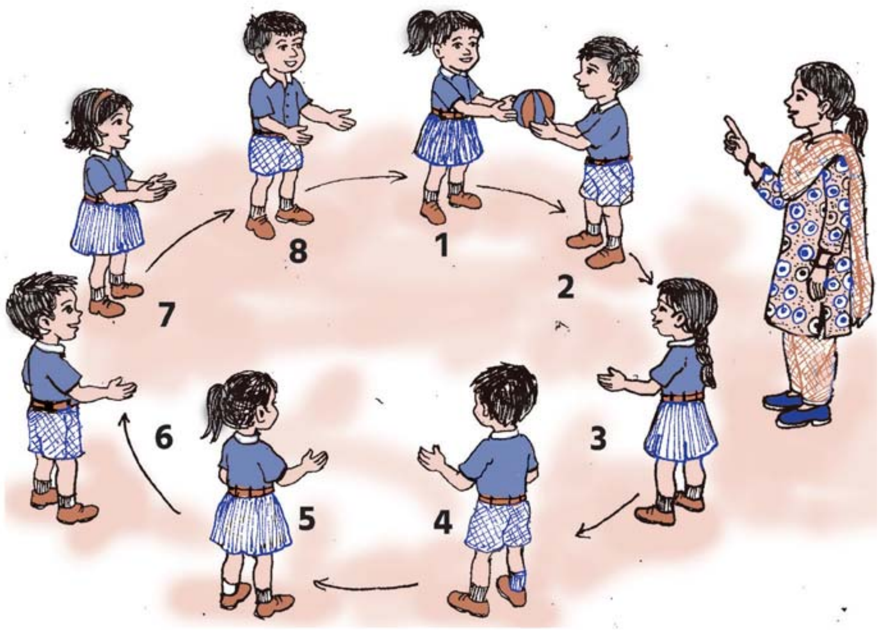

चित्रांकन : शिवेन्द्र पांडिया

4. अगर गेंद तीसरे नम्बर पर मौजूद विद्यार्थी के पास है, और शिक्षक 'पिंग', 'पोंग', 'पोंग' कहते हैं तो गेंद दूसरे नम्बर वाले विद्यार्थी (जो तीसरे नम्बर वाले विद्यार्थी के दाईं ओर है) को पास की जाएगी। इसके बाद दूसरे नम्बर वाला विद्यार्थी इसे तीसरे नम्बर वाले विद्यार्थी को पास करेगा, और तीसरे नम्बर वाला विद्यार्थी इसे चौथे नम्बर वाले विद्यार्थी को पास करेगा।
5. शुरुआत में, शिक्षक आसान पैटर्न का इस्तेमाल कर सकते हैं। जैसे–'पिंग', 'पोंग' और 'पोंग, पोंग, पिंग'।

इस क्रम का अभ्यास करना तब तक ज़रूरी है जब तक यह स्पष्ट न हो जाए कि सभी विद्यार्थी गतिविधि को समझ गए हैं। धीरे-धीरे, जब शिक्षक को यह एहसास हो जाए कि सभी विद्यार्थी समझ गए हैं कि क्या करना है तो वे अलग-अलग संयोजनों का इस्तेमाल करके पैटर्न की घोषणा कर सकते हैं।

6. जब शिक्षक कहते हैं : 'पिंग, पिंग, पिंग, पिंग, पोंग, पोंग, पोंग, पोंग' तो गिनती करते समय वे उँगलियों के द्वारा इसे दर्शा सकते हैं। कुछ विद्यार्थी इसे ऐसे समझ सकते हैं—चार पिंग और चार पोंग। गेंद चार बार दाईं ओर जाती है, फिर चार बार बाईं ओर जाती है, और वापस उसी विद्यार्थी के पास आ जाती है जिसने इसे शुरू किया था। सभी विद्यार्थी इस तर्क को समझ सकें, इसके लिए शिक्षक को आसान से मुश्किल की ओर बढ़ने वाले पैटर्न चुनने चाहिए।

अगला स्तर–कठिनाई बढ़ाना

किसी पैटर्न की घोषणा करने से पहले, शिक्षक को यह सोचना होगा कि विद्यार्थी किसी ख़ास पैटर्न को कैसे समझेंगे। जैसे—पोंग, पोंग, पिंग, पोंग, पिंग, पिंग, पोंग।

विद्यार्थियों को निर्देशों के अनुसार तुरन्त गेंद पास नहीं करनी चाहिए। इसके बजाय, पहले शिक्षक पैटर्न को पूरा करें, और किसी भी एक विद्यार्थी से पूछें, "गेंद किसके पास जानी चाहिए?"

विद्यार्थियों को ध्यान से सुनना होगा, क्रम के बारे में सोचना होगा, और पता लगाना होगा कि आख़िर में गेंद किसके पास जानी चाहिए। फिर उन्हें पैटर्न के अनुसार गेंद पास करके यह जाँचना होगा कि उनका अनुमान सही है या नहीं। थोड़ी उलझन हो सकती है। लेकिन यह भी ध्यान देने वाली बात है कि विद्यार्थी अनुमान लगाने की कोशिश कर रहे हैं।

जब विद्यार्थी इस बात को समझ जाएँगे तो यह गतिविधि और भी मज़ेदार हो जाएगी।

ध्यान दें कि ये क्रम असल में छोटे धनात्मक और ऋणात्मक पूर्णांकों के जोड़ का एक अभ्यास है। इसलिए यह खेल पूर्णांकों के साथ खेला जाने वाला दिमाग़ी गणित है।

इसे खेलने के अलग–अलग तरीक़े

- किसी एक विद्यार्थी से कहें कि वह बीच में आए, और दूसरे विद्यार्थियों के सामने क्रम की घोषणा करे। शिक्षक स्वयं भी विद्यार्थियों के साथ घेरे में शामिल हो जाएँ।
- एक और तरीक़ा यह है कि अगर कोई विद्यार्थी ग़लत विद्यार्थी को गेंद पास करता है, वह 'आउट' हो जाता है। इससे घेरा छोटा हो जाता है। विद्यार्थी स्वयं क्रम की घोषणा कर सकते हैं, और फिर क्रम का पालन किए बिना ही सीधे सही विद्यार्थी को गेंद पास कर सकते हैं। लेकिन शर्त यह है कि ग़लत पास करने पर वह विद्यार्थी आउट हो जाएगा।
- इसे खेलने का एक और तरीक़ा यह है कि विद्यार्थियों को रंगों के आधार पर समूहों में बाँट दिया जाए। उदाहरण के लिए, लाल, नीला, हरा, और वे इसी क्रम से खड़े हों। (ध्यान रखें कि घेरे में विद्यार्थियों की कुल संख्या 3 का गुणज हो।) नियम यह हो सकता है कि 'लाल' विद्यार्थी केवल दूसरे 'लाल' विद्यार्थी को ही गेंद पास कर सकता है। या फिर यह भी हो सकता है कि 'लाल' विद्यार्थी केवल 'हरे' विद्यार्थी को ही गेंद पास कर सकता है। जल्द ही, विद्यार्थी अपने ख़ुद के नियम या कोड का क्रम बना लेंगे। इस प्रक्रिया में, वे जाने-अनजाने ही बीजगणितीय व्यंजक (algebraic expressions) बना लेते हैं।

ध्यान देने वाली बातें

शिक्षक को यह पक्का करना चाहिए कि इस गतिविधि में सभी विद्यार्थी पूरी तरह से जुड़े हों। अगर ऐसा नहीं है तो हर एक को ध्यान से देखें कि कहीं ऐसा तो नहीं कि विद्यार्थी गेंद पास करने का इच्छुक तो है लेकिन दाएँ-बाएँ का अन्तर नहीं समझ पा रहा है, या उसने कोड तो समझ लिया है लेकिन क्रम नहीं समझा है, वग़ैरह। इसे ध्यान में रखते हुए, शिक्षक तब तक क्रम की घोषणा कर सकते हैं जब तक कि सभी विद्यार्थियों को सोचने और खेल को सही तरीक़े से खेलने का मौक़ा न मिल जाए।

शिक्षक को यह योजना भी बनानी होगी कि जिस विद्यार्थी की बारी कभी नहीं आई है, उसे शामिल करने के लिए किस तरह के निर्देश दिए जाएँ। वे यह भी देख सकते हैं कि विद्यार्थी उनके द्वारा दिए गए निर्देशों को ठीक से समझ पा रहे हैं या नहीं। अगर नहीं, तो शिक्षक को चाहिए कि वे निर्देशों को आसान बनाएँ।

अगर गेंद सही हाथ में नहीं है तो विद्यार्थी अपने साथियों के साथ कैसे बातचीत कर रहे हैं? यह ज़रूरी नहीं कि शिक्षक ही हर समय सिखाएँ; कभी-कभी विद्यार्थी भी अपने साथियों को सिखा सकते हैं, जो कि सीखने का एक अच्छा तरीक़ा भी है। हालाँकि, शिक्षक को इस बात पर ज़ोर देना चाहिए कि अगर कोई दूसरों पर हावी होता है या उन्हें नीचा दिखाता है तो उसे खेल से बाहर कर दिया जाएगा। ऐसा करने से विद्यार्थी एक दूसरे के साथ बातचीत करने के स्पष्ट और सही तरीक़े सोचते हैं।

गतिविधि 2 : इन्द्रियों से चीज़ों की पहचान

कक्षा : 3 से 5

उद्देश्य : इस गतिविधि से विद्यार्थियों को इन्द्रियों की सहायता और अन्य विशेषताओं से चीज़ों की पहचान तथा अनुमान करने के मौक़े मिलते हैं। वे गुणधर्मों के आधार पर चीज़ों का वर्गीकरण करना सीखते हैं और समान तथा विपरीत गुणधर्म भी वाली चीज़ों के बारे में सोच पाते हैं।

आवश्यक सामग्री : फल, सब्ज़ियाँ, अनाज जैसी रसोई / बग़ीचे से सम्बन्धित चीज़ें। छोटे डिब्बे।

सेब के टुकड़े, खीरे के टुकड़े, कच्ची दाल, चावल के दाने, तुलसी के पत्ते, नीम के पत्ते जैसी कुछ चीज़ों को अलग-अलग छोटे डिब्बों में रखें।

इन चीज़ों की पहचान करने के लिए विद्यार्थी अपनी किसी भी इन्द्रिय (छूने, सूँघने, चखने, सुनने के लिए) का इस्तेमाल कर सकते हैं।

यह गतिविधि कैसे करवाएँ

1. एक विद्यार्थी की आँखों पर पट्टी बाँधें। विद्यार्थी डिब्बे को हिलाकर और उससे निकलने वाली आवाज़ से उसके अन्दर रखी हुई चीज़ को पहचानने की कोशिश कर सकता है।
2. अगर विद्यार्थी उस चीज़ को न पहचान पाए तो सूँघने वाला तरीक़ा आज़माएँ। विद्यार्थी डिब्बा खोलकर उस चीज़ को सूँघकर उसे पहचान सकता है।
3. अगर विद्यार्थी सूँघकर भी चीज़ों को नहीं पहचान पाता है तो वह उसे छूकर या चखकर पहचान सकता है।

चित्रांकन : शिवेन्द्र पांडिया

शिक्षक सही जवाब तक पहुँचने में मदद करने के लिए मौखिक संकेत दे सकते हैं। पूरी गतिविधि के दौरान शिक्षक विद्यार्थी से सवाल पूछकर उन्हें आगे बढ़ने में मदद कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, क्या आप आवाज़ सुन पा रहे हैं; क्या आप गन्ध को सूँघ पा रहे हैं; आपको क्या लगता है कि यह गन्ध किसकी हो सकती है–फल की या पत्ते की; क्या आप इसे छूना या चखना चाहेंगे; क्या आप इसकी बनावट (टेक्सचर) बता सकते हैं; आदि। हो सकता है कुछ विद्यार्थी अन्तर्मुखी हों, और बोलने में झिझकते हों। इसलिए इस तरह के सवाल विद्यार्थी को बोलने में मदद कर सकते हैं।

जोड़ी बनाना

इस गतिविधि को एक-दो बार करने के बाद विद्यार्थी इसे जोड़ियों में कर सकते हैं, जहाँ एक विद्यार्थी 'करने वाला' (doer) होता है, और दूसरा 'संकेत देने वाला' (prompter) होता है जो सवाल पूछता है, और जिसकी आँखों पर पट्टी बँधी होती है। उन्हें आपस में सही सवाल पूछकर चीज़ों की पहचान करनी होती है।

यह गतिविधि कम विद्यार्थियों वाली कक्षा के लिए उपयुक्त है।

अन्त में, विद्यार्थी चीज़ों को उनकी विशेषताओं के आधार पर समूहों में बाँट सकते हैं। जैसे–एक जैसी गन्ध, बनावट, आकार, स्वाद या आवाज़ वाली चीज़ें। वे ऐसी नई चीज़ें जोड़ सकते हैं जिनके बारे में उन्हें पहले से पता है। उदाहरण के लिए, वे मौसम्बी और सन्तरे के साथ नींबू जोड़ सकते हैं, क्योंकि उनकी बनावट एक जैसी होती है।

कठिनाई का स्तर बढ़ाना

एक बार जब वे किसी ख़ास श्रेणी के आधार पर चीज़ों को समूहों में बाँट लेते हैं तो शिक्षक उनसे पूछ सकते हैं कि क्या वे कम-से-कम एक ऐसी चीज़ पहचान सकते हैं जिसकी गन्ध / बनावट / आकार / स्वाद / आवाज़ अलग हो। पिछले उदाहरण में, नींबू स्वाद और आकार में बाक़ी दो चीज़ों से अलग है।

इसके अलावा, गतिविधि को आगे बढ़ाने के लिए, अगले दिन हर विद्यार्थी इस खेल के लिए अपनी पसन्द की कोई एक चीज़ विद्यालय ला सकता है। फिर शिक्षक विद्यार्थियों से उन चीज़ों को उनकी विशेषताओं के आधार पर समूहों में बँटवा सकते हैं।

इस गतिविधि के माध्यम से विद्यार्थियों ने मज़ेदार तरीक़े से चीज़ों की पहचान करने, उन्हें समूहों में बाँटने, और उनके बीच का अन्तर समझने तक का सफ़र तय किया है।

यह गतिविधि बेंगलूरु की अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की कम्युनिकेशन टीम की सदस्या कृतिका ने सुझाई है। कृतिका की कम्प्यूटेशनल थिंकिंग में गहरी दिलचस्पी है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

लेख पढ़कर कक्षा को भयमुक्त बनाने के नए तरीक़े मिले

पाठशाला भीतर और बाहर के अंक 28 में प्रकाशित राकेश शिवनाथ राजपूत का लेख 'भयमुक्त कक्षा बनाने में मददगार तरीक़े' में लेखक कहते हैं कि वे परम्परागत शिक्षक की छवि में नहीं, बल्कि सुगमकर्ता की भूमिका में रहेंगे। यह उनकी कक्षा में भी दिखाई देता है। शिक्षक द्वारा कक्षा में गतिविधि-आधारित प्रक्रिया अपनाने और ग़लतियों को सीखने की स्वाभाविक प्रक्रिया मानने से कक्षा का वातावरण भयमुक्त और आनन्ददायक बनाने में सहयोग मिला है। साथ ही, औपचारिक परीक्षा का दबाव ख़त्म कर कक्षा को ख़ुशनुमा और जीवन्त बनाया गया है। लेख में डरे-सहमे विद्यार्थियों को सक्रिय सीखने वाला बनाने के उपयोगी अनुभव दर्ज हैं।

सरोजनी रावत, सहायक शिक्षिका, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, ख़ारा स्रोत, टिहरी, उत्तराखण्ड

ताहिरा ख़ान के लेख में हैं कुछ अलग-से अनुभव

पाठशाला भीतर और बाहर के 28वें अंक में रीडिंग कॉर्नर पर आधारित ताहिरा ख़ान का आलेख साबित करता है कि यह कॉर्नर केवल पुस्तकों का संग्रह नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र विकास का एक बेहतर माध्यम है। जब रीडिंग कॉर्नर में विद्यार्थियों को पढ़ने के साथ-साथ संवाद करने, प्रश्न पूछने, अपने अनुभव साझा करने, और गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिलता है तब उनका सीखना अधिक अर्थपूर्ण और आनन्द भरा हो जाता है। रीडिंग कॉर्नर से विद्यार्थियों में पढ़ने की रुचि बढ़ने के साथ-साथ उनकी अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, तर्कशक्ति और संवेदनशीलता का भी विकास होता है। उनके सीखने की गुणवत्ता में उल्लेखनीय परिवर्तन लाया जा सकता है।

अनूप कुमार शुक्ला, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, बेड़ो, राँची, झारखण्ड

महत्त्वपूर्ण है विद्यालयी प्रक्रियाओं से जुड़ा लेख

पत्रिका के जून 26 अंक में अर्धेन्दु शेखर दाश द्वारा अपने लेख 'विद्यालयी प्रक्रियाओं से मूल्यों और संस्कृति का विकास' में, समुदाय में विद्यालय की प्रभावकारी भूमिका के बारे में बताया गया है। जब विद्यार्थियों से पूछा कि उन्होंने मुश्किल परिस्थितियों को इतने धैर्य व शान्ति से सँभालना कहाँ से सीखा है? विद्यार्थियों का जवाब, कि विद्यालय में सीखा है, शिक्षक और विद्यार्थियों के मध्य ईमानदार संवाद व सकारात्मकता को दर्शाता है। विद्यालय परिवेश में विद्यार्थी मूल्यों, सहयोग की भावना, सामंजस्य, अनुशासन, स्वीकारोक्ति, आदि गुणों को आत्मसात् करते हैं जो भविष्य निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

दिनेश मंगल, शिक्षक, राजकीय प्राथमिक विद्यालय अलीपुरा, भगवानपुरा, नागौर, राजस्थान

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा विशेषांक हमेशा उपयोगी रहेगा

पाठशाला के 'प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा विशेषांक' में प्रकाशित लेख सुझाते हैं कि आँगनवाड़ी केन्द्र को बच्चों की दृष्टि से आकर्षक और आनन्ददायक होना चाहिए, यह ज़िम्मेदारी आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की है। साथ ही, उनके पास बच्चों के लिए माँ जैसा प्यार भरी बातों को सुनने का मन होना चाहिए। हम जानते हैं कि तीन साल तक का मानसिक विकास सौ साल तक के लिए होता है। अगर आँगनवाड़ी कार्यकर्ता सप्ताह और दिन के अनुसार विद्यालय पूर्व शिक्षा का संचालन करें, तब इस उम्र के बच्चों में गहरा बदलाव देखा जा सकता है। विशेषांक में इन सभी बिन्दुओं पर लेख हैं, इसलिए यह अंक हमेशा के लिए उपयोगी रहेगा।

मंजुला, आँगनवाड़ी शिक्षिका, इंडर्गी, कोप्पल, कर्नाटक

मैं अपनी कक्षा में आलेखों में बताए गए तरीक़ों को अपनाने का प्रयास करूँगी

पाठशाला भीतर और बाहर के लेखों से हमें दूसरे शिक्षकों के अनुभवों से सीखने-सिखाने के नए तरीक़े जानने का अवसर मिलता है। पत्रिका के 28वें अंक में रीडिंग कॉर्नर पर ताहिरा ख़ान और अंकिता के उपयोगी लेख पढ़े। मेरी कक्षा में भी रीडिंग कॉर्नर बना हुआ है, लेकिन मैं उसे केवल भाषा शिक्षण से ही जोड़कर देखती थी। अब समझ बनी कि रीडिंग कॉर्नर की पुस्तकों के माध्यम से भाषा के साथ-साथ पर्यावरण अध्ययन, गणित और अन्य विषयों पर भी सार्थक चर्चा कराई जा सकती है। विद्यार्थियों को किताबें पढ़ने के

बाद चर्चा करने, अपने विचार रखने, प्रश्न पूछने और अलग-अलग विषयों से जोड़कर सीखने के अवसर दिए जा सकते हैं। मैं अपनी कक्षा में इन आलेखों में बताए गए तरीक़ों को अपनाने का प्रयास करूँगी।

लेखा गुप्ता, शिक्षिका, प्राथमिक विद्यालय, घासीपुरा, फंदा ग्रामीण, भोपाल, मध्य प्रदेश

लेख में आने वाले वास्तविक अनुभव व संवादों ने प्रभावित किया

पत्रिका के अंक 28 में प्रकाशित ताहिरा ख़ान का लेख पढ़कर महसूस हुआ कि रीडिंग कॉर्नर केवल विद्यार्थियों को किताबें पढ़ाने का स्थान नहीं है, बल्कि यह उनकी सीखने की पूरी प्रक्रिया को समृद्ध बनाने का एक प्रभावी माध्यम है। लेख में वर्णित कक्षा के वास्तविक अनुभवों और विद्यार्थियों के साथ हुए संवाद ने मुझे बहुत प्रभावित किया, क्योंकि इससे यह स्पष्ट हुआ कि जब विद्यार्थियों को अपनी पसन्द की किताबें पढ़ने, चर्चा करने और अनुभव साझा करने का अवसर मिलता है, वे अधिक उत्साह से सीखते हैं, और विषयों को अपने जीवन से जोड़ पाते हैं। रीडिंग कॉर्नर से विद्यार्थियों में पढ़ने की रुचि बढ़ती है, और उनका आत्मविश्वास मज़बूत होता है।

रंजिता चौहान, प्राथमिक शाला नेतनागर, संकुल झलमला, विकासखण्ड पुसौर, रायगढ़, छत्तीसगढ़

जानी-पहचानी घटनाओं से बनाई समय रेखा और इतिहास की समझ

अंक 28 में छपे लेख 'समय रेखा और इतिहास की समझ' में लेखक हिमांशु खोले ने बताया है कि इतिहास में तिथि-काल को सरलता से समझना क्यों ज़रूरी है। वे कहते हैं कि तिथियाँ और काल केवल इतिहास बोध पैदा नहीं करते, बल्कि उसे समझने में भी मदद करते हैं। इतिहास कहाँ से शुरू किया जाए? जानने के लिए हम प्राचीन काल से शुरू करते हुए अपना सिर धुनते हैं, और उबाऊपन के साथ तारीख़ों की एक भारी-भरकम पोथी को याद करते हैं। पढ़ाने की इस पारम्परिक शैली से हटकर लेखक ने कल बीती हुई घटनाओं को ही इतिहास का ज़रिया बना दिया। अलग नज़रिया देता यह लेख एक विद्यार्थी के परिवार का जन्मदिन, गाँव का पहला कुआँ, पहली पक्की सड़क, बोरवेल की खुदाई, आदि रास्तों से होता हुआ भारतीय मध्यकाल को खँगालता है।

ज़ुल्फ़कार अली, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, रामनगर, नैनीताल, उत्तराखण्ड

प्रवीण पाठक बनने के लिए आवश्यक है पठन संस्कृति का विकास

शिक्षिका ताहिरा ख़ान का लेख प्राथमिक शिक्षा में 'रीडिंग कॉर्नर' यानी पढ़ने के कोना की उपयोगिता को बहुत ही व्यावहारिक और प्रेरक रूप से रेखांकित करता है। बाल साहित्य केवल भाषा सिखाने तक सीमित नहीं है; यह गणितीय गणनाओं, ज्यामितीय आकृतियों, पर्यावरण अध्ययन और लिंगभेद जैसे सामाजिक मुद्दों को समझने का एक जीवन्त माध्यम बन सकता है। शिक्षिका का वास्तविक कक्षा अनुभव और विद्यार्थियों के साथ की गई गतिविधियाँ यह साबित करती हैं कि पठन संस्कृति का विकास विद्यार्थियों को न केवल प्रवीण पाठक बनाता है, बल्कि उनमें सोचने, तर्क करने और रचनात्मक लेखन की क्षमता भी जगाता है। शिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए यह एक उपयोगी लेख है।

केंद्र प्रताप सिंह, सहायक शिक्षक, उच्च प्राथमिक विद्यालय, मिर्ज़ापुर, बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

अपनी कक्षा में अपनाती हूँ 'आइए, करके देखें' की गतिविधियाँ

पाठशाला के दिसम्बर 25 के विशेषांक में मैंने 'आओ, पैटर्न बनाएँ' गतिविधि को पढ़ा। मुझे ख़ुशी है कि इस अंक की गतिविधियाँ भी मैं अपनी कक्षा में करवा चुकी हूँ। 'आइए, करके देखें' में दी गई गतिविधियाँ बच्चों के लिए बहुत उपयोगी होती हैं। इन्हें कक्षा के शिक्षण वातावरण के अनुसार थोड़ा बदलकर अपनाती रहती हूँ। आँगनवाड़ी केन्द्रों को ऐसी उपयोगी गतिविधियों से सशक्त किया जा सकता है। जितनी आकर्षक बच्चों के लिए गतिविधियाँ होंगी, आँगनवाड़ी केन्द्र भी उतने ही स्वाभाविक रूप से रुचिकर बनेंगे। ये गतिविधियाँ मेरी समझ को नया दृष्टिकोण देती हैं। इन्हें बच्चों को सिखाते हुए कक्षा को और ज़्यादा उत्साही बना रही हूँ।

ललिता एस अरेरा, आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, अलवंडी-4 नम्बर आँगनवाड़ी, कोप्पल, कर्नाटक

स्थानीय मान की समझ विकसित करने में यह लेख काफ़ी असरदार है

अभय कुमार का लेख 'स्थानीय मान समझाने का चरणबद्ध तरीक़ा' पढ़ने से स्थानीय मान की समझ को पुख़्ता बनाने तथा कक्षा में विद्यार्थियों के साथ इस अवधारणा पर काम करने के तरीक़े की अच्छी समझ विकसित होती है।

छोटे विद्यार्थियों का स्थानीय मान की पुख़्ता समझ के बिना अन्य संक्रियाओं की ओर बढ़ना और अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है, ऐसे में सरलतम रूप से स्थानीय मान की समझ विकसित करने में यह लेख बहुत प्रभावी है।

संदीप कुमार जैन, प्रधानाध्यापक, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, सरदारपुरा, उनियारा, टोंक, राजस्थान

'सम्पादक के नाम' में समालोचक प्रतिक्रियाओं को जगह मिले

मुझे प्रसन्नता है कि *पाठशाला* के 28वें अंक में विषयों की विविधता, अनुभवों की प्रामाणिकता और भाषा की सहजता, तीनों का बहुत सुन्दर सन्तुलन बना है। इस अंक के लेख शिक्षकों के लिए प्रेरणादायी और व्यावहारिक हैं जिन्हें कक्षा में सीधे आज़माया जा सकता है।

कुछ सुझाव भी मैं साझा करना चाहता हूँ। जैसे, यदि पुल कोट के लिए लेख का कोई ऐसा अंश चुना जाए जो सारांश के रूप में हो, पर मुख्य पाठ से थोड़ा भिन्न शब्दों में हो। यानी संक्षेपण, न कि उद्धरण। ऐसी स्थिति में पुल कोट स्वयं में एक अतिरिक्त मूल्य जोड़ेगा, न कि केवल दोहराव जैसा प्रतीत होगा। 'सम्पादक के नाम' स्तम्भ में दर्ज प्रतिक्रियाओं में कभी-कभी किसी असहमति या प्रश्नवाचक पत्र को भी स्थान मिले तो पत्रिका का संवाद और सजीव हो सकता है।

अनानास कुमार, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

शिक्षकों, अभिभावकों और शिक्षा में रुचि रखने वालों के लिए उपयोगी है *पाठशाला*

पाठशाला भीतर और बाहर, पत्रिका के शीर्षक से पता चलता है कि शिक्षा सिर्फ़ चार दीवारों के बीच होने वाली प्रक्रिया नहीं है। यह पत्रिका बताती है कि विद्यालय के 'अन्दर' सीखने वाले पाठ और विद्यालय के 'बाहर' सामाजिक, सांस्कृतिक तथा पारिवारिक वातावरण के बीच निकट सम्बन्ध है। यह न केवल शिक्षकों के लिए, बल्कि हर उस अभिभावक और शिक्षा में रुचि रखने वाले व्यक्ति के लिए पढ़ना ज़रूरी है जो शिक्षा प्रणाली और विद्यार्थियों के मानसिक विकास को समझना चाहते हैं।

अश्विनी संपत, आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, होसपुर ब्लॉक, चामराज नगर, कर्नाटक

शिक्षक का प्रयास अच्छा हो तो विद्यार्थी सीखने में रुचि लेते हैं

अंशिका शर्मा का रीडिंग कॉर्नर पर लिखा आलेख इसकी उपयोगिता को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। इसमें बताया गया है कि रीडिंग कॉर्नर की विद्यालय में आवश्यकता क्यों है तथा किस रूप में यह विद्यार्थियों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। आलेख में छात्रा दिव्यंती तथा छात्र महेश से बातचीत और उनकी प्रतिक्रियाओं को पढ़कर लगा कि अगर शिक्षक का प्रयास अच्छा हो तो विद्यार्थी भी उसमें रुचि लेते हैं। बच्चों में पढ़ने की रुचि उत्पन्न करने के साथ-साथ उनके भाषा कौशलों का विकास, किताबों से प्यार, स्वतंत्र अधिगम, आत्मविश्वास में वृद्धि, रचनात्मक विकास, आदि में रीडिंग कॉर्नर बहुत उपयोगी है।

दीपक नौगाई, जीपीएस बाँसा भीमताल, उत्तराखण्ड

विद्यालय पूर्व शिक्षा के बारे में गहरी समझ बनाता है ईसीई विशेषांक

विशेषांक में ईसीसीई से सम्बन्धित विभिन्न लेख हमारे लिए महत्त्वपूर्ण लगते हैं। इनमें बच्चों को स्वतंत्र रूप से बढ़ने देने में विद्यालय पूर्व शिक्षा की भूमिका को उजागर किया गया है। कहानियाँ और गाने सुनाने से बच्चों की रचनात्मकता भी बढ़ती है। स्थानीय रूप से मिलने वाली सामग्री का उपयोग करके व गतिविधियाँ कराने से बच्चों का सर्वांगीण विकास सम्भव है। इस अंक से विद्यालय पूर्व शिक्षा के बारे में गहरी समझ बनती है जिससे बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को और अधिक फलदायक बनाने के मौक़े बनते हैं।

सुमंगला, आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, होसलिंगापुर, 3 रा केन्द्र, गिनिगेरा क्षेत्र, कोप्पल, कर्नाटक

लेखकों के लिए

1. लेख वर्ड फ़ाइल में ही भेजें जिसमें कोई डिज़ाइन, बॉर्डर, बॉक्स, आदि न हों। लेख पीडीएफ़ में न भेजें।
2. लेख से सम्बन्धित तस्वीरें या कोई अन्य विजुअल अच्छी क्वालिटी का हो, और उसे वर्ड फ़ाइल में लगाकर भेजने के बजाय अलग से अटैच करके भेजें। तस्वीर को image 1, image 2 के नाम से सेव करके भेजें, और लेख में लिख दें कि कहाँ पर आपको लगता है कौन-सी तस्वीर लगनी चाहिए। हालाँकि, इस बारे में अन्तिम निर्णय सम्पादकीय टीम का होगा।
3. तस्वीर का सोर्स ज़रूर बताएँ। कॉपीराइट का ध्यान रखें कि तस्वीर या तो कॉपीराइट फ़्री हो, या जहाँ से ली गई है वहाँ से अनुमति ली गई हो, या आभार व्यक्त किया गया हो। अगर तस्वीर आपने ख़ुद ली है तो वह भी बताएँ, और तस्वीर लेते समय, विद्यालय या कक्षा से इजाज़त ज़रूर लें।
4. विद्यार्थियों की तस्वीरें बिल्कुल न लें, ख़ासकर ऐसी तस्वीरें जिनमें उनका चेहरा स्पष्ट हो।
5. लेख में जब भी किसी किताब का अंश, लेख का अंश, किसी लेखक के उद्धरण (quote) इस्तेमाल में लाएँ, कृपया उनका उल्लेख ज़रूर करें, और क्रेडिट दें।
6. अपने लेख के साथ अपना संक्षिप्त परिचय, एक फ़ोटो जिसमें आपका चेहरा सामने से स्पष्ट और क्लोज़ हो, मोबाइल नम्बर, पूरा पता, और ईमेल आईडी भी दें।
7. जो भी लेख आप *पाठशाला भीतर और बाहर* के लिए भेज रहे हैं, यह बहुत ज़रूरी है कि उसे न तो कहीं और भेजा गया हो न ही सोशल मीडिया पर साझा किया गया हो।
8. लेख मिलने पर आपको लेख के मिलने की सूचना तुरन्त दी जाएगी, और 30 दिन के अन्दर लेख की स्वीकृति या अस्वीकृति, या उसमें सुधार के सम्बन्ध में सूचना प्रेषित की जाएगी।
9. पत्रिका में लेखों की तीन श्रेणियाँ हैं। पहली श्रेणी में लेख 2000 शब्दों का, दूसरी में 1500 शब्दों, और तीसरी श्रेणी में यह 700 से 1000 शब्दों का होगा।
10. सम्पादकीय टीम को लेख में सम्पादन का अधिकार होगा। ज़रूरी सम्पादन के बाद आपको लेख भेजा जाएगा।
11. *पाठशाला भीतर और बाहर* अब हिन्दी के अतिरिक्त अँग्रेज़ी और कन्नड़ में भी प्रकाशित होगी। माने, आप तीनों में से किसी भी भाषा में लेख भेज सकते हैं। लेख भेजने का आईडी है : pathshala@apu.edu.in
12. आपने जिस भी मौलिक भाषा में लेख भेजा है, अनुवाद होकर तीनों भाषाओं में प्रकाशित होगा। इसका अधिकार सम्पादकीय टीम को होगा।

किसी भी तरह की अन्य जानकारी के लिए आप सम्पर्क कर सकते हैं–
प्रतिभा (हिन्दी) : pratibha.katiyar@azimpremjifoundation.org
शेफ़ाली (अँग्रेज़ी) : shefali.mehta@apu.edu.in
राघवेंद्र हेर्ले (कन्नड़) : Raghavendra.herle@azimpremjifoundation.org

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की ओर से रजिस्ट्रार ऋषिकेश बी एस द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे गाँव, बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक-562125। लक्ष्मी मुद्रणालय, क्रमांक 117, 5वीं मुख्य सड़क, चामराजपेट, बेंगलूरु, कर्नाटक-560018 द्वारा मुद्रित।

मुख्य सम्पादक : प्रतिभा कटियार

Anuvada Sampada

Azim Premji University

अनुवाद सम्पदा

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की अनुवाद रिपॉजेटरी

विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षणिक संसाधनों का भण्डार।

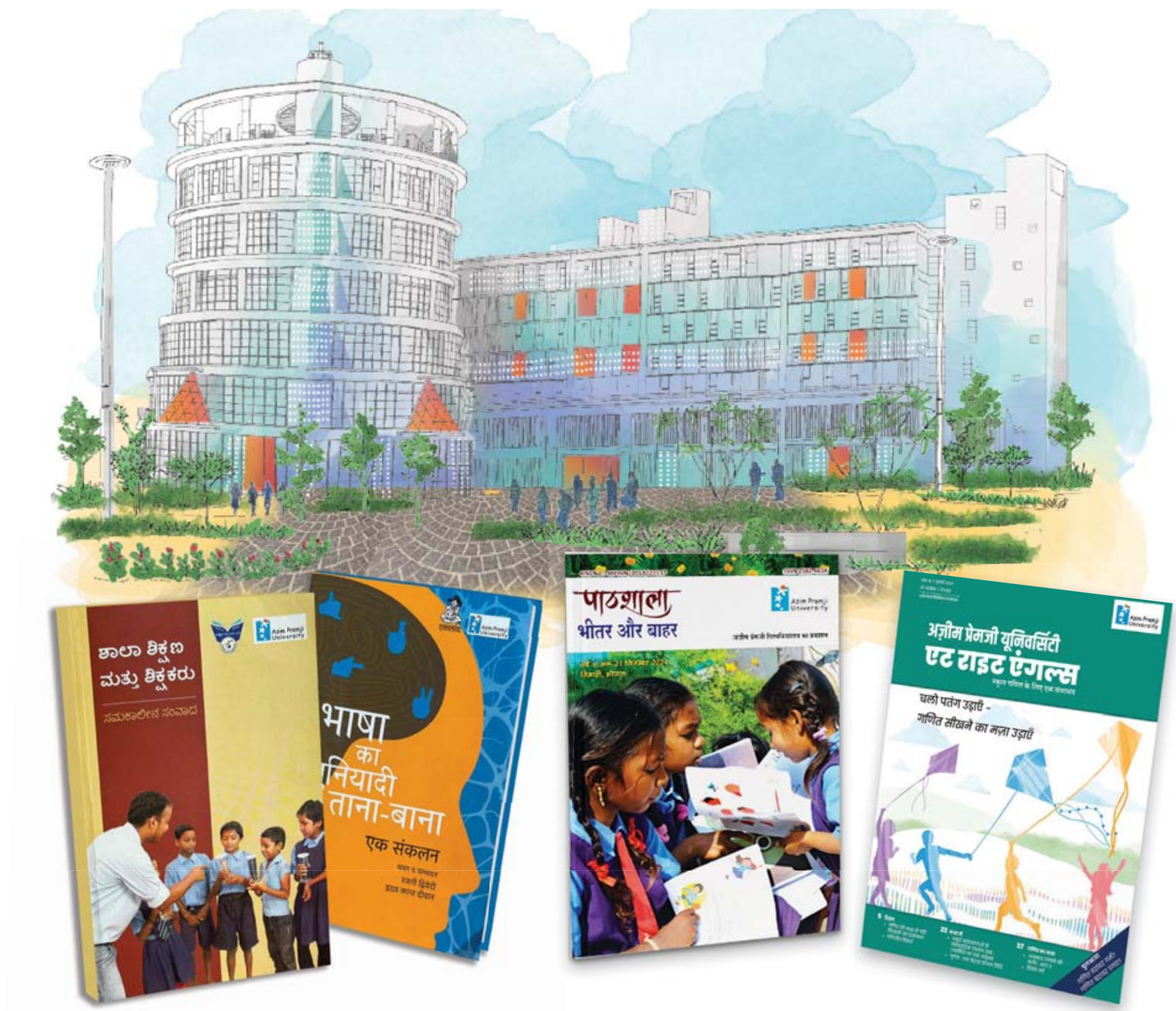

नि:शुल्क, ओपन-एक्सेस पोर्टल

- पुस्तकें और पुस्तकों के अंश
- अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी प्रकाशनों के लेख
- विभिन्न स्रोतों से चयनित लेख

अनुवाद सम्पदा पर आएँ

https://anuvadasampada.azimpremjiuniversity.edu.in/

यहाँ स्कैन करे

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की पत्रिकाएँ

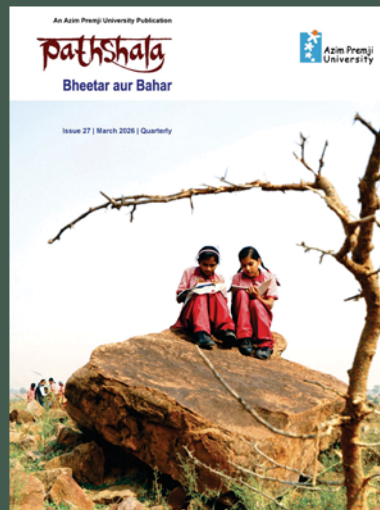

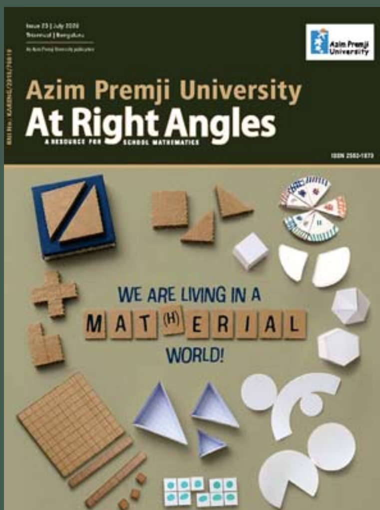

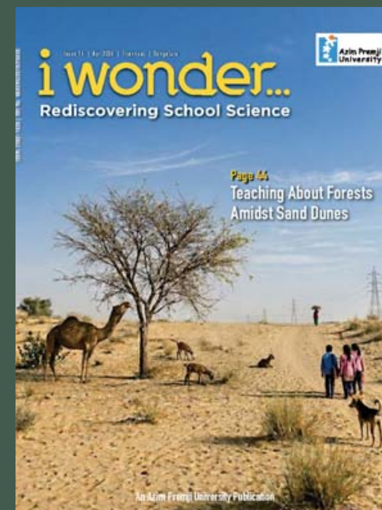

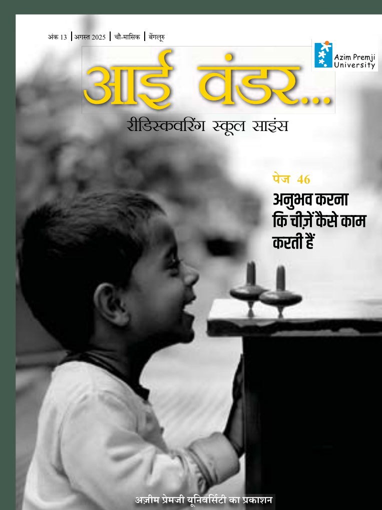

अन्य प्रकाशनों के बारे में
अधिक जानने के लिए हमें लिखें -
publications@apu.edu.in

पाठशाला की निःशुल्क सदस्यता के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें

Azim Premji University
Bengaluru | Bhopal | Ranchi

Website: azimpremjiuniversity.edu.in
Facebook: /azimpremjiuniversity
Youtube: @azimpremjiuniversity
Instagram: @azimpremjiuniv
X: @azimpremjiuniv

Address: Survey No. 66, Burugunte Village, Bikkanahalli Main Road, Bengaluru, Karnataka – 562125